प्रस्तावना

''विश्व-परिवर्तन के निमित्त हो तो जो बाप का कार्य है, उसमें बाप के साथ अपने को भी निमित्त समझो। विश्व में स्वयं भी हो ना! विश्व को परिवर्तित करने वाले को पहले स्वयं को परिवर्तित करना पड़े।... बाप से स्नेह, बाप के कार्य से स्नेह और बाप द्वारा मिली हुई नॉलेज से स्नेह - इन तीनों का बैलेन्स रखो। अभी बैलेन्स में बाप का स्नेह ज्यादा है, बाकी दो तरफ हल्का है। नॉलेज से शक्ति आयेगी। एक-एक वर्शन्स पदमपति बनाने वाला है। इतना महत्व रखते हुए उन वर्शन्स को धारण करो।... जब तक महत्व को नहीं जानते, तब तक स्नेह नहीं होता है।''

अ.बापदादा 9.02.75

शिवबाबा ज्ञान का सागर है, उसने सारा ज्ञान मुरली में हमको दिया है, ज्ञान के उन गुह्य रहस्यों को समझने और धारण करने वाला परम-शान्ति, परम-शक्ति को अनुभव करता है और उन ज्ञान के गुह्य रहस्यों को अन्य आत्माओं को समझने में सहयोग करने से परम-भाग्य को संचित करता है, परमानन्द को अनुभव करता है। उन ज्ञान के गुह्य रहस्यों को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने और साक्षी होकर इसे देखने से आत्मा परम-सुख को अनुभव करती है। यह अनुभव करना और कराना संगमयुग की परम-प्राप्ति है और संगमयुगी ब्राह्मणों का परम-कर्तव्य है।

ज्ञान सागर बाप ने हमको अखुट खज़ाना दिया हुआ है, उस खज़ाने का सुख स्वयं भी अनुभव करना और दूसरों को अनुभव कराना अर्थात् दूसरों को भी अनुभव करने में सहयोगी बनना हमारा परम कर्तव्य है। बाबा के द्वारा दिये गये खज़ाने का एकमात्र आधार बाबा की साकार और अव्यक्त मुरली है। जो बाबा की मुरली के महत्व को जानता है और उस महत्व से उसको पढ़ता है, उस पर विचार करता है, उसकी धारणा करता है, उसका ही यह ब्राह्मण जीवन सफल है और उसको यह ब्राह्मण जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है। उसके लिए इस जीवन में कोई समस्या है ही नहीं और न होगी। यह परम सौभाग्यशाली ब्राह्मण जीवन विनाश की आशा में जीने के लिए नहीं है। यह तो इस संगमयुगी जीवन के परमानन्द को अनुभव करने और कराने के लिए है। इस परम सौभाग्यशाली जीवन का आधार मुरली, मधुवन और मुरलीधर बाबा है। मुरली में बाबा ने हमको क्या-क्या दिया है, उस लक्ष्य से ही यहाँ कुछ विचार किया गया है।

मधुबन ब्राह्मणों का घर है, हमारे घर में क्या-क्या है, उसका हमारे जीवन में क्या

महत्व है, उसका हम कैसे अनुभव करें और करायें, यह भी हम मधुबन निवासियों का परम कर्तव्य है। हमारे इस ब्राह्मण जीवन का आधार मुरलीधर बाबा, मुरली और मधुबन ही हैं। हम मधुबन वासियों का परम सौभाग्य है कि हमको ऐसे स्थान पर बाबा ने बिठाया है, अब इसके महत्व को समझकर, उसकी अनुभूति करना-कराना हमारा परम कर्तव्य है।

मुरली - मधुबन और मुरलीधर

विषय-सूची

विषय				पेज नं.
मुरली - मधुवन और मधुसूदन	...	...	...	**1**
मुरली - मधुवन और परमात्मा				
मुरली - मधुवन और मुरलीधर				
मुरली - मधुवन और ब्रह्मा बाबा				
मुरली - मधुवन और ब्राह्मण जीवन				
मुरलीधर की मुरली	...	...	...	**1**
मुरली - मधुवन और रिवाइज़ कोर्स				
मुरली, श्रीमत और गीता-ज्ञान				
मुरली - मधुवन और ज्ञान अर्थात् विश्व-नाटक				
मुरली - मधुवन और सृष्टि-चक्र				
मुरली - मधुवन और पुरुषोत्तम संगमयुग				
मुरली - मधुवन और निश्चय	...	...	...	**1**
मुरली - मधुवन, गोपी-वल्लभ और गोप-गोपियाँ				
मधुवन - पाण्डव भवन, ज्ञान-सरोवर और शान्तिवन				
Q. मधुवन के तीनों स्थानों की क्या-क्या अपनी विशेष विशेषतायें हैं, तीनों में क्या समानतायें हैं और तीनों स्थानों में क्या-क्या अन्तर है ?				
मुरली - मधुवन और आदि रतन				
मुरली - मधुवन और मधुवन निवासी				
मुरली - मधुवन और मधुवन की भूमि एवं वातावरण	...	...	...	**1**
मुरली - मधुवन और वृत्ति-वातावरण का प्रभाव				
मुरली - मधुवन और आबू पर्वत				
मुरली - मधुवन और योग अर्थात् याद (निराकार और साकार)				
मुरली - मधुवन और साकार एवं अव्यक्त मिलन	...	...	...	**1**
मुरली - मधुवन और विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी				
मुरली और कर्म				

मुरली - मधुवन और मुक्ति-जीवनमुक्ति **1**
मुरली - मधुवन और पवित्रता
मुरली - मधुवन और विश्व-कल्याण
मुरली - मधुवन और धारणा
मुरली - मधुवन और विचार सागर मन्थन **1**
मुरली - मधुवन और प्यार अर्थात् परमात्मा का प्यार और परमात्मा से प्यार
मुरली - मधुवन और सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता
मुरली - मधुवन और पुरुषार्थ
मुरली और मधुवन का महत्व
Q. मुरली क्या है और मुरली में क्या है ?
मुरली - मधुवन और स्वमान-वरदान एवं स्व-स्थिति **1**
मुरली - मधुवन और पुरुषोत्तम संगमयुग की अनुभूतियाँ
Q. अनुभव की अथॉरिटी सबसे श्रेष्ठ अथॉरिटी है तो अभी हमको किन-किन बातों के अनुभव की अथॉरिटी बनना है ?
पुरुषोत्तम संगमयुग प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ
Q. तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमान, वरदान, संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों में क्या अन्तर है ?
मुरली और श्रीमत
मुरली और विश्व-नाटक के गुह्य राज़ **1**
निष्कर्ष
प्रश्नावली
मुरली और मधुवन के विषय में विविध ईश्वरीय महावाक्य

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह ब्रह्मा तन में आकर जो ज्ञान देता है, जिसको मुरली कहते हैं। जितना ही इस विश्व-नाटक के नव-निर्माण में परमात्मा का महत्व है, उतना ही मुरली का महत्व है अर्थात् परमात्मा और मुरली एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और मधुवन उसका आधार है अर्थात् मधुवन में ही आत्माओं का परमात्मा से मिलन होता है और मधुर मुरली की तान सुनने को मिलती है, जो तन-मन को रिफ्रेश करती है।

मधुसूदन - शिवबाबा या दादा लेखराज को मधुसूदन नहीं कहा जाता सकता है क्योंकि दोनों ही अकेले मुरली नहीं सुना सकते हैं। मधुसूदन अर्थात् शिवबाबा और दादा लेखराज का संगठित रूप अर्थात् ब्रह्मा स्वरूप। शिवबाबा जब दादा के तन में प्रवेश होते हैं, तब ही वे मुरली सुनाते हैं और आत्माओं को मोहित करते हैं, उनके द्वारा विश्व नव-निर्माण का कर्तव्य करते हैं तथा शिवबाबा के बिना दादा भी विश्व नव-निर्माण का कर्तव्य नहीं कर सकते हैं। सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक अर्थात् जब तक आत्माओं का परमात्मा से सम्पर्क नहीं होता है, तब तक सर्वात्माओं की उतरती कला में ही होती हैं, तो उतरती कला वाला कोई विश्व नव-निर्माण का कर्तव्य अर्थात् चढ़ती कला का कर्तव्य कैसे कर सकता है। शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा अर्थात् दादा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं अर्थात् दोनों का एक-दूसरे के साथ महत्व है और दोनों का संगठित रूप ब्रह्मा है, इसलिए ब्रह्मा को सृष्टि का रचता कहा जाता है। इसलिए ही भारत में निराकार और साकार दोनों का समान महत्व है अर्थात् दोनों ही एक-दूसरे पर आधारित हैं। शिवबाबा ज्ञान का सागर है और दादा अनुभवों का सागर है क्योंकि उन्होंने सारे कल्प में आदि से अन्त तक पार्ट बजाया है, इसलिए उनमें सारे कल्प के अनुभव के संस्कार हैं। दोनों मिलकर नये विश्व का नव-निर्माण करते हैं।

''बच्चे बाप से नजर लगाकर बैठे हैं। एक श्लोक है - नज़र से निहाल स्वामी कीन्दा सतगुरु। सुना तो आधे कल्प से बहुत है परन्तु बाप से नजर मिलाना अभी ही होता है। बाप की नजर से तुम निहाल होते हो।... बाप में ही सबकुछ समाया हुआ है क्योंकि बाप से ही सबकुछ मिलता है। जब बच्चे बाप के सामने बैठते हैं तो बच्चों को स्वर्ग की बादशाही का नशा चढ़ जाता है।''

सा.बाबा 8.06.12 रिवा.

''शिवबाबा को न मनुष्य कहेंगे, न देवता कहेंगे, उनको परमात्मा ही कहा जाता है। ... एक बाप के बच्चे हम आपस में भाई-बहन हैं, फिर हम क्रिमिनल एसॉल्ट कर नहीं सकते, भाई-बहन विकार में जा नहीं सकते।... कोई गफलत न हो, इसलिए मुरलियाँ मिलती है। पक्का निश्चयबुद्धि है तो कहाँ भी जाये, मुरली न भी मिले तो भी बुद्धि में रहेगा कि हम बाबा का बन गया।''

सा.बाबा 6.07.11 रिवा.

''भोलानाथ के बच्चे आत्मायें सुन रही हैं, इन कानों द्वारा, अपने बाप से। अभी तुम बच्चे आत्माभिमानी बने हो। बच्चे टेप द्वारा मुरली सुनते हैं तो समझते हैं - शिवबाबा हमको अपना परिचय दे रहे हैं। मैं सभी आत्माओं का बाप हूँ, सभी मुझे याद करते हैं। ... सब पतितों को पावन बनाने वाला एक पारलौकिक बाप ही है, सर्व का पतित-पावन महिमा उनकी ही है।''

सा.बाबा 10.06.11 रिवा.

''जहाँ-जहाँ तुम्हारे सेन्टर खुलते जाते हैं, सब यह समझते हैं मधुबन में शिवबाबा की मुरली बजती है ब्रह्मा द्वारा। ... तुम बच्चे कहाँ भी हो तो भी समझते हो - यह शिवबाबा की मुरली छपकर आई है। शिवबाबा बिगर कोई यह सिखला नहीं सकते। ... बाप बच्चों को समझाते हैं - मामेकम् याद करो, और कोई भी नाम-रूप को याद नहीं करो। साकार मनुष्यों के फोटो आदि तो तुम जन्म-जन्मान्तर रखते आये हो।''

सा.बाबा 12.09.12 रिवा.

मुरली - शिवबाबा ब्रह्मा तन से जो ज्ञान देते हैं, महावाक्य उच्चारण करते हैं, वह मुरली है, जो आत्माओं को मोहित करती है, आत्मा-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है। ब्रह्मा बाबा भी अपना अनुभव सुनाते हैं, वह भी मुरली ही है क्योंकि दोनों से ही आत्मा का कल्याण होता है।

मुरली ही सत्य नारायण की सच्ची कथा, तीजरी की कथा, अमरकथा है।

मुरली ज्ञान रत्नों का अखुट भण्डार है, जो भविष्य स्थूल रत्नों का आधार हैं।

''सबको सुधारने का कान्ट्रेक्ट ड्रामा के प्लेन अनुसार बाप ने उठाया है। बच्चों को मुरली कभी मिस नहीं करनी चाहिए। मुरली का कितना गायन है।... यह पढ़ाई बहुत-बहुत कमाई की है। अभी की पढ़ाई से जन्म-जन्मान्तर के लिए फल मिल जाता है। विनाश का सारा तैल्लुक तुम्हारी पढ़ाई से है। तुम्हारी पढ़ाई पूरी होगी और यह लड़ाई शुरू हो जायेगी।''

सा.बाबा 25.01.11 रिवा.

मधुबन - गायन है मधुबन में मुरलिया बाजे। तो जहाँ शिवबाबा ने ब्रह्मा तन से ज्ञान सुनाया, विश्व नव-निर्माण का कर्तव्य किया, वही मधुबन है। परमात्मा के साकार तन में आकर कर्तव्य करने का गायन है - धन्य भूमि, वन, पंथ, पहारा, जहाँ-जहाँ नाथ पांव तुम धारा। यह तो सर्व विदित है कि जड़-जंगम का चेतन पर और चेतन का जड़-जंगम पर प्रभाव पड़ता है, तो जहाँ साकार में आये शिवबाबा अपना विश्व नव-निर्माण का कर्तव्य किया और दादा ने अखण्ड तपस्या कर शिवबाबा के कर्तव्य में साथ दिया और अन्त में अव्यक्त स्वरूप अर्थात्

फरिश्ता स्वरूप को धारण किया, वह भूमि ही मधुबन है।

अव्यक्त रूप का पार्ट भी साकार में जहाँ-जहाँ चलता है, वह भी मधुबन ही है क्योंकि वह भी आत्माओं को मोहित करता है। इसलिए पाण्डव भवन, ज्ञान-सरोवर, शान्तिवन तीनों ही मधुबन हैं। ब्रह्मा बाबा के साथ अनेकानेक ब्रह्मा वत्सों ने भी इस भूमि पर तपस्या की है, उनके वायब्रेशन भी इस भूमि में समाहित हैं, जो भी आत्माओं को आकर्षित करते हैं।

''तुम यहाँ मधुबन में बैठे हो तो तुम बच्चों को पुरानी दुनिया का कोई ख्याल नहीं आना चाहिए। ... यह मधुबन है पुरानी दुनिया और नई दुनिया का संगम। यहाँ का प्रभाव बहुत अच्छा है, इसलिए तुमको बाहर का कोई ख्याल नहीं आना चाहिए।''

सा.बाबा 22.11.11 रिवा.

मधुबन विश्व नव-निर्माण का केन्द्र-बिन्दु है। विश्व नव-निर्माण के सारे कार्य यहाँ से ही संचालित होते हैं। विश्व नव-निर्माण के सारे प्रयोग पहले मधुबन में होते हैं, जहाँ से सारे विश्व में जाते हैं। विश्व नव-निर्माण का वायब्रेशन भी यहाँ से ही प्रसारित होता है। विश्व नव-निर्माण के लिए ट्रेनिंग आदि भी यहाँ ही होती है। भल जोन आदि अन्य स्थानों पर भी यह ट्रेनिंग आदि होती है परन्तु समग्र विश्व का लक्ष्य लेकर ट्रेनिंग मधुबन में ही होती है। मधुबन से ही मुरली सारे विश्व में जाती है। सारे विश्व की आत्मायें परमात्मा से मिलन मनाने मधुबन में आते हैं, इसलिए मधुबन एक सागर है, जिसमें सर्व नदियाँ समाहित होती हैं।

''अभी तुम बच्चों को बाप के सम्मुख बैठ सुनने से मधुबन की भासना आती है। यहाँ ही मुरली बजती है। भल बाबा कहाँ जाता भी है परन्तु वहाँ इतना मजा नहीं आयेगा क्योंकि मुरली सुनकर घर जाने से फिर मित्र-सम्बन्धी आदि याद आते हैं, माया के राज्य में चले जाते हैं। यहाँ तो भट्ठी में रहते हो।... यहाँ तुम स्कूल में बैठे हो, और कोई गोरखधन्धा आदि नहीं है।''

सा.बाबा 13.07.12 रिवा.

''तुमको अन्दर में बहुत खुशी रहनी चाहिए कि हम गॉडली स्टूडेण्ट हैं, गॉड फादर परमपिता परमात्मा से राजयोग सीखकर स्वर्ग का स्वराज्य ले रहे हैं। पढ़ाई बहुत सहज है परन्तु इसमें माया के विघ्न भी पड़ते हैं। ... यहाँ डायरेक्ट बाप से सुनने से नशा चढ़ता है, बाहर जाने से नशा गुम हो जाता है, इसलिए बहुत सावधान रहना है।'' सा.बाबा 9.03.12 रिवा.

''रुहानी बाप रुहानी बच्चों को सम्मुख बैठ समझा रहे कि रुहानी बाप के सिवाए सर्व को सुख-शान्ति देने वाला वा सर्व दुखों से लिबरेट करने वाला दुनिया में और कोई नहीं है, इसलिए सभी दुख के समय उनको याद करते हैं। ... तुम जानते हो यहाँ मधुबन में बाप से सम्मुख सुनने और दूर रहकर सुनने में बहुत फर्क है। इसलिए ही मधुबन की महिमा गाई हुई है।''

मुरली - मधुबन और ब्रह्मा बाबा

परमात्मा ब्रह्मा तन में आकर मुरली चलाते हैं अर्थात् ज्ञान सुनाते हैं, तो ब्रह्मा बाबा सबसे पहले सुनते हैं और धारण करते हैं क्योंकि वे परमात्मा के सबसे निकट हैं। इसलिए मुरलीधर परमात्मा के महावाक्य हैं कि यह एक ही हमारा मुरबी बच्चा है, जो कभी मुरली मिस नहीं करता है। ब्रह्मा बाबा के बिना मुरलीधर परमात्मा मुरली भी नहीं चला सकते हैं। ब्रह्मा बाबा को भी शिवबाबा की मुरली के लिए इतना ही महत्व है और वे शिवबाबा की मुरली पर विचार सागर मंथन कर बच्चों को सहज करके सुनाते हैं, जिससे बच्चों को धारण करने में सहज हो। ब्रह्मा बाबा मुरली का मन्थन कर उसके धारणा स्वरूप बनकर सम्पूर्ण फरिश्ता बनें।

ब्रह्मा बाबा पुरुषार्थ कर सम्पूर्ण बनते हैं, इसलिए उनका पुरुषार्थ ब्रह्मा वत्सों के लिए आदर्श है। बाबा कैसे पुरुषार्थ करते हैं, वह अनुभव भी सुनाते हैं, जिसके आधार पर ब्रह्मा कुमार-कुमारियों के लिए पुरुषार्थ करना सहज हो जाता है।

ब्रह्मा बाबा की आत्मा की आत्मा आदि से अन्त तक सारे कल्प पार्ट बजाया है, इसलिए उनकी आत्मा में सारे कल्प के पार्ट के संस्कार हैं, उसका अनुभव है, जिसके आधार पर वे अपना अनुभव सुनाकर बच्चों को भी अनुभवी बनाते हैं। शिवबाबा ज्ञान का सागर है और ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है, दोनों मिलकर विश्व नव-निर्माण का कार्य करते हैं।

शिवबाबा ज्ञान का सागर है, वह ब्रह्मा तन में आकर ज्ञान देते हैं, जिसको दादा पुरुषार्थ कर धारण कर उसका उदाहरण स्वरूप बनता है।

शिवबाबा और दादा दोनों के चरित्र ब्रह्मा तन से ही प्रगट होते हैं, अनुभव होते हैं। बिना शिवबाबा और उसके ज्ञान के दादा विश्व नव-निर्माण का कोई कर्तव्य नहीं कर सकता और शिवबाबा बिना तन के कोई कर्तव्य नहीं कर सकता, इसलिए ब्रह्मा तन से दोनों के गुण, कर्तव्य और संस्कार स्पष्ट होते हैं, जिनका शास्त्रों में चरित्र के रूप में गायन है।

''रोज़ की मुरली रोज़ का होमवर्क है। मुरली में बाप ने जो कहा और बच्चों ने किया तो उसको कहा जाता है बाप के सिकीलधे बच्चे, आज्ञाकारी बच्चे। ... तो जब बाप का प्यार मुरली से है तो जो मेरा बाबा कहता है, उसका पहला प्यार बाप के साथ बाप की मुरली से होना चाहिए। ब्रह्मा बाप ने एक दिन भी मुरली मिस नहीं की। ... लास्ट दिन सवेरे का क्लास नहीं कराया लेकिन शाम को क्लास कराने के बाद अव्यक्त हुए।'' अ.बापदादा 18.01.11

''एक दिन भी यह पढ़ाई मिस नहीं करना चाहिए। यह मोस्ट वैल्युएबुल पढ़ाई है। यह बाबा कभी भी मिस नहीं करेगा। यहाँ तुम बच्चे सम्मुख खज़ानों से झोली भर सकते हो। जितना

पढ़ेंगे, उतना नशा चढ़ेगा। ... यहाँ तुमको बहुत नशा चढ़ता है, बाहर जाने से फिर वह नशा नहीं रहता है। बहुतों को सिर्फ मुरली पढ़ने से ही नशा चढ़ जाता है।''

सा.बाबा 31.05.12 रिवा.

''शिवबाबा ज्ञान से बच्चों को बहलाते हैं, यह भी सीखते हैं। शिवबाबा सवेरे मुरली चलाकर चले जायेंगे, फिर कोई मिलने आते हैं तो क्या यह नहीं समझायेंगे। क्या यह ऐसे कहेंगे कि बाबा आप आकर समझाओ, मैं नहीं समझाऊंगा। ये बड़ी गुह्य बातें हैं समझने की। ... यह भी जानते हो कल्प पहले इसने समझाया है, तब तो यह पद पाया है।''

सा.बाबा 19.02.11 रिवा.

''कई बच्चों में अहंकार आ जाता है तो समझते हैं - शिवबाबा ही सुनाते हैं, वे ही मुरली चलाते हैं, यह थोड़ेही कुछ जानते हैं। यह भी हमारे मुआफिक ही हैं। समझते हैं हम तो सेवा करते हैं, हम उनसे भी तीखे ठहरे। ऐसे कहने वाले दूरांदेशी नहीं है। बाबा की तो यह युक्ति है, जिससे बच्चे शिवबाबा को ही याद करें क्योंकि शिवबाबा को याद करने से ही विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 15.09.12 रिवा.

''बुद्धि में रहना चाहिए हमको तो बाप से वर्सा लेना है, उनकी मुरली सुननी है। मम्मा-बाबा भी उनसे वर्सा लेते हैं। ... इस ज्ञान मार्ग में और कोई तकलीफ नहीं हैं, बस देही-अभिमानी बनना है। बाबा और तो कुछ नहीं कहते हैं परन्तु देहाभिमान में आने वालों पर तरस पड़ता है। शिवबाबा के भण्डारे से शरीर निर्वाह करते हैं, यज्ञ की कुछ भी सम्भाल नहीं करते हैं तो वे क्या पद पायेंगे।''

सा.बाबा 9.08.12 रिवा.

''बाबा को तो मज़ा आयेगा ज्ञान गंगाओं के सामने मुरली सुनाने में। बाबा से सम्मुख सुनने में मज़ा आता है, खुश होते हैं। ... घर जाने से नशा उतर जाता है। बाबा हर एक की चलन से समझ जाते हैं कि इनको कितनी ज्ञान की धारणा है। आयी हो बाबा से मिलने और मेरे-मेरे में फँसी हो। मेरा पति, मेरा बच्चा कहाँ से आया!''

सा.बाबा 5.09.12 रिवा.

मुरली - मधुबन और ब्राह्मण जीवन

मधुबन यज्ञ-वेदी है, जहाँ से ब्राह्मणों की उत्पत्ति हुई। भल सेन्टर भी यज्ञ हैं परन्तु ब्राह्मण जीवन की छाप मधुबन में आने से ही लगती है, इसलिए हर ब्राह्मण आत्मा को मधुबन में आना अति आवश्यक है और मधुबन में आने से ही ब्राह्मण जीवन प्रशस्त होता है अर्थात् ब्राह्मणों को ब्राह्मण जीवन का गौरव अनुभव होता है। इसलिए जब तक कोई मधुबन नहीं आया, तब तक उस पर ब्राह्मण जीवन की छाप नहीं लगती है।

मुरली ब्राह्मण जीवन का आधार है, ब्राह्मण जीवन का श्वांस है। जो मुरली के महत्व को नहीं जानता, उसको सुनता-पढ़ता नहीं, उस पर मनन-चिन्तन नहीं करता, उसकी धारणा नहीं करता, वह ब्राह्मण ही नहीं है। सच्चे ब्राह्मण की पहचान मुरली से ही होती है।

यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों में ही होता है, जो उनको ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा मुरली द्वारा देते हैं। सर्व प्रकार के आध्यात्मिक ज्ञान के स्पष्टीकरण का आधार मुरली है।

मुरली ही सर्वात्माओं के मुक्ति-जीवनमुक्ति का एकमात्र आधार है। और तो सभी प्रकार के ज्ञान और शास्त्रों के होते भी आत्मा की उतरती कला कला ही होती है।

जो मुरली के महत्व को यथार्थ रीति समझता, निश्चयबुद्धि होकर उसका मनन-चिन्तन करके उसकी धारणा करता, वही सच्चा ब्राह्मण है और वह सदा ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है। जिनको ज्ञान सागर परमात्मा से ज्ञान मिलता है और जो इसकी सत्यता को अनुभव कर लेते हैं, उनको और कुछ पढ़ने या जानने की न आवश्यकता होती है और न ही उनकी और कुछ पढ़ने की रुचि होती है, न ही उसके पास कुछ पढ़ने या जानने आदि का समय होता है। वह अपना तन-मन-धन, समय-स्वांस-संकल्प मुरली के अध्ययन में, उसके मनन-चिन्तन में और ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य अर्थात् ईश्वरीय सेवा में लगाता है।

जो मुरली के महत्व को जानकर, उस विधि और संकल्प से मुरली को पढ़ता है, उसके सामने सब रहस्य स्वत: स्पष्ट होते हैं या समय पर स्पष्ट हो जाते हैं क्योंकि उसका बुद्धियोग मुरलीधर परमात्मा के साथ होता है, जो बुद्धिमानों की बुद्धि हैं। सेवा में भी उसको कब कोई बाधा नहीं आती है, समय पर व्यक्ति के अनुसार उसको उत्तर अवश्य आता है। सच्चे ब्राह्मण अर्थात् जिसका मुरली और मधुबन से प्यार है, उसको मुरलीधर परमात्मा की समय अवश्य ही मदद मिलती है। मुरलीधर परमात्मा ने ये सब रहस्य मुरली में स्पष्ट किये हुए हैं।

''यह है ज्ञान सागर और ज्ञान की बरसात की बात। ज्ञान सागर बाप आकर ज्ञान बरसात बरसाते हैं, जिससे अज्ञान अन्धकार दूर हो जाता है। ये बात प्रजापिता ब्रह्मा कुमार-कुमारी ही समझते हैं। ... ऐसे नहीं कि सिर्फ तुम बच्चों के लिए ही यह ज्ञान बरसात है। मुरली तो सब बच्चे सुनेंगे, सबके लिए ज्ञान बरसात है। अब तुमको रोशनी मिल रही है, जिससे तुम सब जानते जा रहे हो।''

सा.बाबा 15.06.12 रिवा.

''बाप ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बनाते हैं, फिर ब्राह्मणों को ज्ञान देते हैं। बाप ने यह ज्ञान यज्ञ रचा है, यज्ञ को सम्भालने के लिए ब्राह्मण चाहिए। ब्राह्मणों को जब तक यज्ञ को सम्भालना है, तब

तक पवित्र जरूर रहना है। जिस्मानी ब्राह्मण भी जब यज्ञ रचते हैं तो विकार में नहीं जाते हैं, भल वे होते विकारी हैं। तुम ब्राह्मण भी यज्ञ में रहते हो, फिर अगर कोई विकार में जाते हैं तो बड़े पापात्मा बन जाते हैं।''

सा.बाबा 18.05.12 रिवा.

''अभी सारी दुनिया भ्रष्टाचारी है। भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाना, यह तुम्हारा धन्धा है। ऐसी सर्विस करने से ही तुम ऊंच पद पा सकते हो। ... बोर्ड नहीं लगाया, सर्विस नहीं की तो समझेंगे कि देहाभिमान बहुत है। बाबा क्या कहते हैं, मुरली तो सब बच्चे सुनते हैं। ... यहाँ भी बोर्ड लगा हुआ हो - ज्ञान सागर पतित-पावन निराकार परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है, फिर जगत अम्बा और जगतपिता से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?''

सा.बाबा 25.04.12 रिवा.

''मरजीवा बनना अर्थात् शूद्रपन से मरना और ब्राह्मणपन में जीना। यह ब्राह्मणों का अलौकिक जीवन है। ... ब्राह्मण जीवन के जीयदान का आधार कौनसा है? मुरली। पढ़ाई का आधार भी मुरली ही है। ... तो मुरली को जीयदान का आधार समझकर स्नेह पूर्वक स्वीकार करते हो या नियम प्रमाण पढ़ते-सुनते हो? जितना स्नेह जीयदान से होगा, उतना ही स्नेह जीवनदाता से होगा। ऐसा स्नेही अन्य आत्माओं को भी सदा स्नेही व निर्विघ्न बना सकेंगे।''

अ.बापदादा 28.4.74

''तुम शिवबाबा की मुरली तो सुनो ना, बाप का खज़ाना तो लो। खज़ाने के बिगर तुम क्या करेंगे। ब्राह्मणों के संग में भी जरूर आना पड़े। नहीं तो शूद्रों के संग का असर हो जायेगा, तुम्हारी दुर्गति हो जायेगी। ... बगुलों के साथ रहने से सत्यानाश हो जाती है। खिवैया एक बाप को ही कहा जाता है, बाकी सब हैं डुबोने वाले। ... शिवबाबा से कब न रूठो, खज़ाना लेते रहो और दान करते रहो। गायन है - धन दिये धन न खुटै।''

सा.बाबा 14.1.12 रिवा.

''अभी तुम रावण पर जीत पहन, रामपुरी में चलने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम सब ब्राह्मण-ब्राह्मणियों का आधार मुरली पर है। ... ऐसे नहीं कि सिर्फ एक ब्राह्मणी को ही मुरली सुनानी है। कोई भी मुरली पढ़कर सुना सकते हैं। ... ये सब बाबा के अविनाशी ज्ञान रतनों के दुकान हैं। तुम बाप की श्रीमत पर ज्ञान रत्नों का धन्धा करते हो।''

सा.बाबा 1.10.11 रिवा.

''ब्राह्मण जीवन के जीयदान का आधार कौन-सा हैं? मुरली, पढाई का भी आधार है मुरली। ... जितना स्नेह जी-दान से होगा उतना ही स्नेह, जीवनदाता से होगा। ऐसा स्नेही, अन्य आत्माओं को भी सदा स्नेही व निर्विघ्न बना सकेंगे।''

अ.बापदादा 28.4.74

''जैसे बाप कब मुरली मिस नहीं करते, ऐसे बच्चों को भी मुरली मिस नहीं करना है। ... मधुवन वाले भी हाथ उठाओ कि किसी भी कारण से मुरली मिस नहीं करनी है। जैसे खाना मिस नहीं करते हो तो यह भी भोजन है ना। वह शरीर का भोजन है, यह आत्मा का भोजन है। ... यह भी नियम है। ब्राह्मण माना मुरली सुनने वाला, सेवा करने वाला।''

अ.बापदादा 2.02.11

''बाप सबको एक समान पढ़ाते हैं, परन्तु धारणा करने वालों में नम्बरवार है। पाठशाला में सब स्टूडेण्ट्स कभी एक समान नहीं होते हैं।... भल कोई कहाँ भी जाते हैं परन्तु वहाँ भी रेग्युलर पढ़ना है। अगर मुरली नहीं पढ़ते तो अबसेन्ट हो जाती है। अगर मुरली जाती है और रोज़ पढ़ते हैं तो अबसेन्ट नहीं कहेंगे। ... अगर कोई हॉस्पिटल में है तो वहाँ भी जाकर मुरली सुनाना चाहिए।'' सा.बाबा 8.09.12 रिवा.

''तुम बच्चे हो ब्राह्मण कुल भूषण स्वदर्शन चक्रधारी। इन बातों को तुम बच्चे ही समझ सकते हो। ये बड़ी रमणीक गुह्य बातें हैं। तुम ही नॉलेज की शंख-ध्वनि करते हो। देवतायें तो शंख-ध्वनि नहीं करते हैं। वे तो शिवबाबा की शंख-ध्वनि सुनकर देवता बनते हैं। शिवबाबा है नॉलेजफुल। ... वह नॉलेज जरूर किसके मुख द्वारा ही सुनायेंगे। उनकी शंखध्वनि को मुरली कहा जाता है। ये सब हैं ज्ञान की बातें, काठ की मुरली की बात नहीं।''

सा.बाबा 1.09.12 रिवा.

मुरलीधर की मुरली

भक्त श्रीकृष्ण को मुरलीधर समझते हैं, जिनकी मुरली सुनते ही सभी गोप-गोपियाँ सब सुधबुध भूलकर मोहित हो जाते थे परन्तु अभी तक हम कृष्ण को परमात्मा और उनकी काठ की मुरली को मुरली समझते थे। यथार्थ मुरली का राज़ अभी पता चला है, जब ज्ञान सागर परमात्मा ने इसका ज्ञान दिया। अव्यक्त बापदादा ने कहा है - परमात्मा के साकार तन द्वारा उच्चारे महावाक्य ही मुरली हैं, जो आत्माओं को मोहित करते हैं अर्थात् आकर्षित करते हैं। परमात्मा की यह ज्ञान मुरली ज्ञान के अनन्त गहन गुह्य और गोपनीय रहस्यों से परिपूर्ण है और इस मुरली में यह जादू है कि वह हम आत्माओं को परमात्म प्यार में मोहित करके दुनिया की सुधबुध भुलाकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराने वाली है।

''बाप को जादूगर भी कहते हैं। गाया हुआ है मुरली तेरी में जादू। मनुष्य से देवता बन जाते हैं। गायन है - मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार।'' सा.बाबा 20.10.04 रिवा.

''जहाँ लगन होती है, वहाँ कोई विघ्न ठहर नहीं सकते। विघ्न स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं। पढ़ाई से प्रीत, मुरली से प्रीत वाले विघ्नों को सहज पार कर लेते हैं। ... एक मुरली से प्यार,

पढ़ाई से प्यार और परिवार का प्यार किला बन जाता है। किले में रहने वाले सदा सेफ हो जाते हैं।''

अ.बापदादा 27.3.86

''मुरली है लाठी, इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जायेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुँचायेगा लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं।... मुरलीधर से स्नेह की निशानी मुरली है। जितना मुरली से स्नेह है, उतना ही समझो मुरलीधर से भी स्नेह है। सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी।''

अ.बापदादा 23.10.75

''शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा ही पढ़ाते हैं। कहते भी हैं - बरोबर परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। ... मधुवन में ही मुरली चलती है, वह फिर सब सेन्टर्स पर जाती है। अभी तुम सम्मुख सुनते हो। जानते हो कल्प पहले भी बाबा ने ऐसे पढ़ाया था। ... अभी तुम ज्ञान मार्ग में हो, भक्ति मार्ग की बातें छोड़ देनी हैं। अभी तुम्हारी ज्ञान से और पढ़ाने वाले से प्रीत है।''

सा.बाबा 25.05.11 रिवा.

''बाप कोई के भी तन में प्रवेश होकर मुरली चला सकते हैं, इसका मतलब यह नहीं कि वह सर्वव्यापी है। हर एक के तन में अपनी-अपनी आत्मा है, जो पार्ट बजाती है। ... अभी पुरानी दुनिया का विनाश होता है। सबके शरीर तो खत्म हो जायेंगे, बाकी आत्मायें सब घर वापस चली जायेंगी। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होंगे।''

सा.बाबा 22.04.11 रिवा.

''तुमको यह ज्ञान कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। तुमको मुरली कौन सुनाते हैं? शिवबाबा। शिवबाबा परमधाम से पुरानी दुनिया, पुराने शरीर में आकर यह ज्ञान देते हैं। अगर कोई को यथार्थ रीति निश्चय हो जाये तो फिर बाप से मिलने के सिवाए रह न सके। कहेंगे, बेहद का बाप जो स्वर्ग का मालिक बनाते हैं, उनसे तो जाकर मिलें।''

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

''बाप समझाते हैं - यह मेरा लोन लिया हुआ शरीर है। इस बाप को कितनी खुशी होती है कि हमने बाबा को अपना शरीर लोन पर दिया है, बाबा हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। नाम भी है भागीरथ। ... तुम सब ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ हो। सबका आधार मुरली पर है। मुरली तुमको नहीं मिलेगी, तो तुम श्रीमत कहाँ से लायेंगे। मुरली कब मिस नहीं करनी चाहिए।''

सा.बाबा 10.02.11 रिवा.

''अच्छी रीति पढ़ेंगे तो अच्छा वर्सा मिलेगा। नहीं पढ़ेंगे तो पद भी कम हो जायेगा। कहाँ भी रहो, पढ़ते रहो। मुरली तो विलायत में भी जा सकती है। बाबा रोज़ मुरली में सावधानी भी देते रहते हैं। ... भक्ति मार्ग में भक्ति करते भी सीढ़ी नीचे उतरते आते हैं। अभी तुम जानते हो - हमको बाप से ज्ञान मिल रहा है, इससे हमारी चढ़ती कला होगी और हम सुखधाम में जायेंगे। फिर हमको सीढ़ी उतरना है। यह चढ़ती कला, उतरती कला का खेल है।''

सा.बाबा 11.02.11 रिवा.

''यह है ज्ञान की मुरली, जो शिवबाबा ही बजाते हैं। आगे चलकर तुम्हारे पास अच्छे-अच्छे गीत बनाने वाले आयेंगे। ... तुमको ज्ञान के गीत ही गाने चाहिए, जिससे शिवबाबा की याद आये। ... तुमको शिवबाबा को ही याद करना है। जितना शिवबाबा को याद करेंगे, उतना बिन्दी लगती जायेगी और तुम्हारी कमाई जमा होती जायेगी। यह है सच्ची कमाई।''

सा.बाबा 12.02.11 रिवा.

''तुमको अभी ज्ञान सागर बाप से अथाह धन मिलता है। दिन प्रतिदिन बाप गुह्य ते गुह्य बातें सुनाते रहते हैं। जब तक जीना है, तब तक ज्ञानामृत पीना है। ... यही बहार है जबकि तुम कौड़ी से हीरा अथवा पतित से पावन बनते हो। पावन दुनिया बनेंगी तो जरूर पतित दुनिया का विनाश भी होगा। महाभारत लड़ाई में भी पूरा नहीं दिखाया है।''

सा.बाबा 1.09.12 रिवा.

मुरली - मधुवन और रिवाइज़ कोर्स

अव्यक्त बापदादा ने कहा है - मुरली वही है, जो शिवबाबा ने साकार में चलाई है। अभी उसका रिवाइज़ कोर्स चल रहा है। इसलिए रिवाइज़ कोर्स में जितना ध्यान देंगे, उतनी धारणा होगी और इस ब्राह्मण जीवन का सच्चा सुख अनुभव होगा। इस संगमयुगी जीवन की सफलता का आधार मुरली और मधुबन ही है। जो इन दोनों के महत्व को जानता है, उसको अपना यह संगमयुगी जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है। वह कभी विनाश की प्रतीक्षा नहीं करता है। वह सदा संगमयुगी ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य में रहकर इस ब्राह्मण जीवन का सुख अनुभव करता है। विचार करें तो हमको रिवाइज़ मुरली में अनेकानेक ऐसे गुह्य रहस्यों से भरे प्वाइन्ट्स मिलते हैं, जो हमारे ध्यान में भी नहीं थे और हमने उनके विषय में कब सोचा भी नहीं था। इसलिए सम्पूर्णता और सम्पन्नता की मन्जिल को पाने और सदा जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहने के लिए रिवाइज़ कोर्स की मुरली अति आवश्यक है।

अभी तो साकार मुरली के रिवाइज़ के साथ-साथ अव्यक्त बापदादा की मुरली भी रिवाइज़ हो रहीं है और उस पर भी विचार करते हैं तो 40 साल पहले बाबा ने जो कहा था, उसकी धारणा करने में हम कितना सफल हुए हैं और अभी कितना पुरुषार्थ करना है। इस प्रकार हम विचार करेंगे तो समझ में आयेगा कि रिवाइज़ कोर्स का कितना महत्व है और इस ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए वह कितना आवश्यक है।

''लाइट, माइट और डिवाइन इन्साइट तीनों कायम रहें, उसके लिए मुख्य किस बात का अटेन्शन चाहिए?... जो एक दिन भी रिवाइज़ कोर्स की मुरली मिस नहीं करते वा धारणा में

अटेन्शन नहीं देते हैं, वे हाथ उठाओ। ... भल जान चुके हो लेकिन अभी बहुत कुछ जानने को रह गया है। जो अच्छी रीति से रिवाइज़ कोर्स को रिवाइज़ करते हैं, वे स्वयं भी ऐसा अनुभव करते हैं।''

अ.बापदादा 24.6.72

''जब तक राँग-राइट को नहीं जानते और जानकर राइट कर्म नहीं करते, तब तक सम्पूर्ण बर्थ-राइट नहीं ले सकते हो। ... जितना राइट संकल्प और कर्म करने में कमी होगी, उतना ही बर्थ-राइट लेने में भी कमी होगी। यह तीनों सदा कायम रहें, उसके लिए मुख्य किस बात का अटेन्शन रहना चाहिए, जो बहुत सहज है और सभी कर सकते हैं?... रिवाइज कोर्स की मुरली पढ़ना और धारण करना।''

सा.बाबा 30.1.11 रिवा.

''जो रिवाइज कोर्स की मुरली कब मिस नहीं करते और धारणा करने का सदा अटेन्शन रखते, वे हाथ उठाओ। ... ड्रामा अनुसार यह रिवाइज़ कोर्स इसीलिए हो रहा है कि अभी प्रैक्टिकल में नहीं आये हो। जितना सुनते हो और सुनाते हो, उतना प्रैक्टिकल में पॉवर नहीं भरी है।''

अ.बापदादा 24.6.72

''यह रिवाइज़ कोर्स पुरानों को पावरफुल बनाने के लिए और नयों को पावरफुल बनाने के साथ-साथ अपना हक पूरा लेने के लिए यह रिवाइज कोर्स चल रहा है। तो अभी अपनी कमी को भरने के लिए अटेन्शन से इसको बार-बार रिवाइज करना है। रिवाइज कोर्स से जो संस्कार और स्वभाव परिवर्तन में लाना चाहते हो, वे परिवर्तन में आ जायेंगे।''

अ.बापदादा 24.6.72

''रिवाइज़ कोर्स में जो चीज बहुत रिवाइज़ हो रही है, वह है अमृतवेला। अमृतवेले अपने आपसे और बाप से रूह-रिहान करने को विशेष महत्व देना। ... अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी ऐसे होंगे। जैसे वेला श्रेष्ठ है, अमृत है ऐसे ही हर कर्म और संकल्प भी सारा दिन श्रेष्ठ होगा।''

अ.बापदादा 24.6.72

''अभी तुम बाप से यह ज्ञान सम्मुख सुनते हो, और सब बच्चे टेप से सुनेंगे। एक दिन टेलीविज़न पर भी यह ज्ञान सुनेंगे। ... पिछाड़ी वालों के लिए तो और ही सहज हो जायेगा। बाप कहते हैं - हिम्मते बच्चे, मदद दे बाप। आगे सब प्रबन्ध हो जायेगा। आगे चल सर्विस करने वाले भी अच्छे होंगे और सब प्रबन्ध भी अच्छा हो जायेगा।''

सा.बाबा 21.08.12 रिवा.

मुरली - मधुवन और श्रीमत एवं गीता-ज्ञान

ज्ञान सागर परमात्मा आकर जो मुरली सुनाते हैं, जिसको ही गीता ज्ञान कहा जाता है और गीता में ही श्रीमत का गायन है। मुरली में ही बाबा सारे ज्ञान का स्पष्टीकरण करते हैं और

क्या करना चाहिए और नहीं करना चाहिए, उसके लिए श्रीमत देते हैं, इसलिए गीता को श्रीमद् भगवत् गीता कहा जाता है।

भक्ति मार्ग में जिस गीता ज्ञान का इतना महत्व है। वह गीता भी इस गीता ज्ञान के आधार पर ही बनाई गई, इसलिए भक्ति मार्ग की गीता का भी कितना मान है। गीता को सर्व शास्त्रों का माई-बाप कहा जाता है क्योंकि गीता में गीता के भगवान ज्ञान सागर परमात्मा ने जो ज्ञान दिया, उस ज्ञान को जिन आत्माओं ने सुना, उस अनुसार संस्कार धारण किये, जिससे जब वे वाम मार्ग में जाते हैं तो आत्मा में संचित ज्ञान और धारणा के संस्कारों के आधार पर गीता शास्त्र बनाते हैं, जिस गीता ज्ञान के आधार पर बाद में अन्य सब शास्त्र बनते हैं।

वर्तमान संगमयुग पर परमात्मा विश्व के नव-निर्माण अर्थ जो गीता ज्ञान देते हैं, वही मुरली है, जिस मुरली से ही आत्माओं का और समग्र विश्व का कल्याण होता है, इसलिए परमात्मा की मुरली का बहुत महत्व है, जो इस महत्व को समझकर मुरली पढ़ते और धारण करते हैं, वे गीता के महावाक्यों अनुसार सतयुग-त्रेता में राजपद पाते हैं और भक्ति मार्ग में मन्दिरों में उनके जड़ चित्र बनाकर पूजा जाता है। शिवबाबा की मुरली का स्थान मधुबन है, इसलिए परमात्मा के यथार्थ रूप को न जानने के कारण श्रीकृष्ण को गीता ज्ञान-दाता कह दिया है और उनको काठ की मुरली दे दी है। भक्ति मार्ग मुरली और मधुबन का विशेष महत्व है।

''बाप तुमको कितना सहज विश्व की बादशाही देते हैं। बाबा पहले तुमको घर ले जायेगा, फिर वहाँ से स्वर्ग में भेज देगा। ... बाप तुम बच्चों को पुरुषार्थ कराते हैं। इस समय का तुम्हारा पुरुषार्थ कल्प-कल्प का बन जायेगा। पवित्रता जरूर चाहिए। पढ़ाई ब्रह्मचर्य में ही पढ़ते हैं। ... भगवान पढ़ाते हैं तो एक दिन भी पढ़ाई मिस नहीं करना चाहिए। यह मोस्ट वेल्यूएबुल पढ़ाई है।''

सा.बाबा 31.5.12 रिवा.

''समझने के लिए ये बड़ी गुह्य बातें हैं। कृष्ण को भगवान कह नहीं सकते, न कृष्ण ने गीता सुनाई है। यह मुख्य बात है जीतने की। ... बाबा जो मुरली सुनाते हैं, उसको पढ़ने का सब स्टूडेण्ट्स को हक है। जिनको मुरली पढ़ने का शौक होगा, उनको मुरली बिगर और कुछ सूझेगा ही नहीं। वे तीन-चार बार मुरली पढ़ेंगे और वे ही औरों को भी अच्छी तरह से समझा सकेंगे।''

सा.बाबा 8.12.11 रिवा.

''बाप आकर श्रीमत देते हैं, इसलिए सर्व शास्त्रमई शिरोमणि भगवत् गीता मशहूर है, सिर्फ उसमें नाम बदली कर दिया है। अभी तुम श्रीमत भगवानुवाच को जानते हो। ... भारत ही अमरपुरी था, यह किसको पता नहीं है। यहाँ ही अमरनाथ बाबा ने भारतवासियों को अमरकथा सुनाई थी। ... अभी शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा तुमको अमरकथा सुना रहे हैं।''

सा.बाबा 1.08.11 रिवा.

''कई अच्छे-अच्छे बच्चों पर भी माया का वार हो जाता है, कहते हैं - हमारा तो डॉयरेक्ट शिवबाबा से कनेक्शन है, ... यह ब्रह्मा भी तो पुरुषार्थी है, हम भी पुरुषार्थी हैं। पढ़ते तो सब शिवबाबा से ही हैं परन्तु ब्रह्मा के पास आयेंगे तब तो मुरली सुनेंगे। प्रेरणा से मुरली सुनकर दिखाओ तो मालूम पड़े। फिर कभी-कभी बाबा उनकी मुरली भी बन्द कर देते हैं। ब्रह्मा से जन्म लिया और मर गया तो खत्म।''

सा.बाबा 7.09.12 रिवा.

''यहाँ भी कई बच्चे समझते हैं, यह ज्ञान तो हम रोज़ सुनते हैं, कोई नई बात थोड़ेही है। नॉलेज को पूरा न समझने के कारण, ऐसा बोलते हैं। तुम गॉडली स्टूडेण्ट हो, तुमको पढ़ाई एक दिन भी मिस नहीं करनी है। भल कोई बीमार भी हो, तो भी यहाँ आकर बैठे तो परमात्मा के महावाक्य सुनेंगे। सुनते-सुनते प्राण शरीर से निकलें तो कितनी न शफा मिल जाये। यह बड़ी हॉस्पिटल भी है।''

सा.बाबा 8.09.12 रिवा.

''गीता छोटी बना दी है। अभी तुम बच्चे समझते हो ज्ञान का सागर बाबा अथाह ज्ञान देते हैं और अन्त तक देते रहें। हम ये सब मुरलियाँ इकट्ठी कर सकेंगे क्या!... सर्वशास्त्रमई शिरोमणी गीता का बहुत मान है। सब भाषाओं में गीता बनती है। तुमको जो यह ज्ञान मिलता है, यह बिल्कुल नया है। इसके आधार से ही भक्ति मार्ग में गीता बनती है परन्तु यथार्थ तो लिख न सकें।''

सा.बाबा 5.09.12 रिवा.

''बाबा कहते हैं - बच्चे, माया तुमको बार-बार भुलायेंगी, इसलिए बाबा मुरली के द्वारा सभी बच्चों को वार्निंग देते हैं। मुरली तो सब बच्चे सुनेंगे। बच्चे समझेंगे - बाबा मधुवन में बच्चों को बैठ ऐसे समझाते हैं। ... यह 84 जन्मों का चक्र है, जो हर 5000 वर्ष बाद रिपीट होता है। तुम जानते हो 5000 वर्ष पहले हमारा राज्य था।''

सा.बाबा 21.07.12 रिवा.

''कब कोई दूर चले जाते हैं, मुरली भी नहीं मिल सकती है तो बाप कहते हैं - कोई हर्जा नहीं है, तुम याद में रहो और स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। यह तो बाप की अविनाशी श्रीमत मिली हुई है। ... शिवबाबा की याद से ही विकर्म विनाश होंगे। बाप कहते हैं - तुम बाप की याद में रहकर खाओ, तो वह पवित्र हो जायेगा। जितना हो सके परहेज जरूर रखनी है, लाचारी हालत में बाबा को याद करके खाओ।''

सा.बाबा 29.09.12 रिवा.

मुरली - मधुबन और ज्ञान अर्थात् विश्व-नाटक
मुरली - मधुबन और सृष्टि-चक्र
मुरली - मधुबन और पुरुषोत्तम संगमयुग

मुरलीधर परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह मधुबन में आकर इस विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान देता है, जिससे यह सृष्टि-चक्र परिवर्तन होता है। यह सृष्टि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का अनादि-अविनाशी खेल है, जो इस धरा पर चलता है और हर 5000 वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है। सभी आत्मायें परमधाम की रहने वाली हैं, वहाँ से आकर इस धरा पर खेल करती हैं अर्थात् अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजाती हैं। मुरलीधर परमात्मा मुरली के द्वारा इस विश्व-नाटक का सारा ज्ञान देते हैं और जो आत्मायें उस ज्ञान को पाकर, परमात्मा की श्रीमत पर उसको धारण कर अपने को पवित्र बनाते हैं, वे आत्मायें नये विश्व में आकर इस प्रकृति का सतोप्रधान सुख भोगते हैं और अभी इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर मुरलीधर परमात्मा के साथ पार्ट बजाते हुए परमानन्द का अनुभव करते हैं। जो आत्मायें मुरली के महत्व को समझकर उसको अध्ययन करती हैं, वे ही इस खेल के यथार्थ रहस्य को जानकर इसका आनन्द अनुभव करती हैं, जिसको अतीन्द्रिय सुख कहा जाता है।

वर्तमान समय कल्प का संगमयुग है, जब मुरलीधर परमात्मा इस विश्व-नाटक का ज्ञान दे रहे हैं और यह विश्व-नाटक परिवर्तन होने वाला है। यह संगमयुग सारे कल्प में सबसे श्रेष्ठ समय है, जब आत्माओं का मुरलीधर परमात्मा से मिलन होता है, उनकी मुरली सुनने को मिलती है अर्थात् परमात्मा से आत्माओं को इस विश्व-नाटक का ज्ञान मिलता है, परमात्म-प्यार का अनुभव होता है, जिसको आत्मायें आधा कल्प मुरलीधर परमात्मा और उनकी मुरली को याद करती हैं। जिस ज्ञान मुरली को गीता-ज्ञान कहा जाता है। अन्य धर्मों में भी इसका कुछ वर्णन है। जैसे मुस्लिम धर्म में कहते हैं - क़यामत के समय खुदा आकर कब्रदाखिल आत्माओं को जगाते हैं।

मुरली में बाबा ने सारे सृष्टि-चक्र का ज्ञान दिया है और विश्व-नाटक के विधि-विधानों का ज्ञान देकर इस सृष्टि-चक्र की नई कलम लगा रहे हैं अर्थात् सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान बाबा ने मुरली में दिया है। इस सृष्टि-चक्र का केन्द्र-बिन्दु मधुवन है अर्थात् सारे सृष्टि-चक्र में यह अविनाशी भूमि है, जहाँ विश्व-पिता आकर नये सृष्टि-चक्र की कलम लगाते हैं।

सारे कल्प में यह पुरुषोत्तम संगमयुग महान समय है, जब मधुबन का मुरलीधर बाबा आकर मुरली के द्वारा विश्व-नाटक के गुह्य राज़ बताकर, नये कल्प-वृक्ष की कलम लगाते हैं। जैसे नयी दुनिया की स्थापना में मुरली और मधुवन का विशेष स्थान है, वैसे ही सारे कल्प में संगमयुग विशेष युग है, जब मुरलीधर बाबा आकर इस विश्व-नाटक के गुह्य रहस्यों का ज्ञान देते हैं।

''हर एक को राजा बनना है तो अपनी प्रजा भी बनानी है और वारिस भी बनाना है। मुरली कोई मिस नहीं करनी चाहिए। बुद्धि में रखना है कि मुरली की कोई प्वाइन्ट मिस न हो जाये। मुरली मिस की तो अच्छे-अच्छे ज्ञान रतन निकलते हैं, वे मिस हो जायेंगे। सुनेंगे नहीं तो धारणा कैसे करेंगे। स्टूडेण्ट्स को मुरली रेग्यूलर पढ़नी-सुननी है। पढ़ने-सुनने के बाद उस पर विचार-सागर मन्थन करना चाहिए।'' सा.बाबा 5.04.12 रिवा.

''यह सृष्टि-चक्र का ज्ञान अभी ही बाप द्वारा मिलता है, फिर कभी भी यह ज्ञान मिल नहीं सकता। बाप रोज़-रोज़ नई-नई बातें सुनाते हैं। ... ज्ञान धन जो बाप देते हैं, उसको धारण कर औरों को भी दान करेंगे, तो धनवान बनेंगे। नहीं तो एवर-वेल्दी कैसे बनेंगे। मुरली का भी आधार जरूर लेना पड़े।... बाप की याद से पवित्र तो बन जायेंगे परन्तु जब ज्ञान धन लें और दान करें, तब सतयुग में साहूकार बनें। नहीं तो मुक्ति में चले जायेंगे, फिर भक्ति मार्ग में आकर भक्ति करेंगे।'' सा.बाबा 20.12.11 रिवा.

''यह वही महाभारी महाभारत लड़ाई है, जिसका गीता में भी वर्णन है। यह एक ही पढ़ाई है, पढ़ाने वाला भी एक ही है। ज्ञान जब पूरा होगा तो बाप कहते हैं - मैं भी चला जाऊंगा। मुझे कल्प-कल्प कलियुग के अन्त में ही आकर ज्ञान सुनाना है। ... जब ज्ञान पूरा होगा, फिर कर्मातीत अवस्था में चले जायेंगे, विनाश भी हो जायेगा।'' सा.बाबा 9.11.11 रिवा.

''तुम्हारी बुद्धि इन बातों में चलनी चाहिए। तुम जानते हो अभी हमको बाप से श्रीमत, अच्छी बुद्धि मिल रही है। ... वह सारी दुनिया का बाप है, सबको अच्छी मत देने वाला है। बाप संगमयुग पर ही आकर बच्चों को मत देते हैं। ... बाप ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण सम्प्रदाय बनाये, नई रचना रचते हैं। तुम सब प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हो।''

सा.बाबा 9.11.11 रिवा.

''परमधाम से आत्माओं को यहाँ आकर पार्ट बजाना होता है। आधा कल्प है सुख का पार्ट, फिर आधा कल्प है दुख का पार्ट। बाप कहते हैं - जब दुख का अन्त होता है, तब मैं आता हूँ। यह सब ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा पर बाबा ने मुरली में बहुत अच्छा समझाया है, वह मुरली बच्चों को अच्छी रीति पढ़नी चाहिए।'' सा.बाबा 4.02.11 रिवा.

''अभी तुमको इस नाटक का सारा ज्ञान है, फिर तुम सतयुग में प्रॉलब्ध पायेंगे तो इस नाटक का सारा ज्ञान भूल जायेगा। फिर इस समय ही यह ज्ञान मिलेगा। ये बड़ी समझने की बाते हैं, इसमें कोई भी प्रश्न-उत्तर की दरकार नहीं रहती है। ... आगे चलकर बहुत बच्चे वृद्धि को पायेंगे। ये सब सेन्टर्स इस रुद्र ज्ञान यज्ञ की शाखायें हैं।'' सा.बाबा 30.8.12 रिवा.

सर्व प्राप्तियों का आधार आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का ज्ञान और उसकी धारणा

अर्थात् स्थिति है, इनकी जितनी समझ होगी, उतनी ही स्थिति होगी, उतना ही अनुभूति अर्थात् खुशी और नशा होगा और जितना स्वयं को खुशी और नशा होगा, उतना ही सेवा में रुचि होगी, जिससे सेवा में सफलता होगी। आत्मिक स्वरूप परम-शक्ति सम्पन्न, परम-शान्त है; परमात्मा सर्व ज्ञान, गुणों और शक्तियों का सागर है, उनका साथ परमानन्दमय है; विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, परम-कल्याणकारी है, जिसके आधार से ही संगमयुग पर आत्मा की चढ़ती कला होती है और आत्माओं की चढ़ती कला से विश्व की जड़-जंगम प्रकृति की भी चढ़ती कला होती है अर्थात् वे भी अपने सतोप्रधान स्वरूप में आते हैं। इन तीनों के ज्ञान की धारणा और स्थिति के लिए इनके गुण-धर्मों का चिन्तन परमावश्यक है, जिसके लिए मुरली का अध्ययन परमावश्यक है।

''देवतायें देही-अभिमानी होते हैं, परन्तु वे परमात्मा बाप को नहीं जानते हैं। परमात्मा को जाने तो फिर सारे सृष्टि-चक्र को भी जान जायें। त्रिकालदर्शी सिर्फ तुम ब्राह्मण ही हो। ... बच्चे ने प्रश्न पूछा - शिवबाबा जब इधर आते हैं, मुरली चलाते हैं तो क्या परमधाम में भी हैं? ... तुम जीते जी इस शरीर को भूलकर अपना बुद्धियोग मुक्तिधाम में लगाओ। और कोई मनुष्य यह पुरुषार्थ करा न सके।'' सा.बाबा 5.05.12 रिवा.

मुरली - मधुबन और निश्चय

इस ब्राह्मण जीवन की सफलता में निश्चय का बहुत महत्व है। मुरली और मधुवन के महत्व और उसके जीवन पर प्रभाव का ज्ञान और उस पर निश्चय होगा, तब ही उसका यथार्थ लाभ उठा सकेंगे।

''पूरा निश्चय न होने से ही अवस्था डावाडोल होती है, खुशी का पारा चढ़ता-उतरता रहता है।... हर चीज़ पहले सतोप्रधान होती है, फिर कला कम होती जाती है। दुनिया का भी ऐसे ही है, इसलिए इसके चार भाग रखे हैं। ... तुमको यह कभी भूलना नहीं चाहिए कि हम स्टूडेण्ट हैं, ईश्वर बाप हमको पढ़ाते हैं। पढ़ाने वाला ज्ञान सागर बाप ही है। यह मुरली सब सेन्टर्स वाले सुनते हैं।'' सा.बाबा 19.07.12 रिवा.

''बाप जो सुनाते हैं, उस पर विचार सागर मन्थन कर धारणा करनी है। यह बड़ी भारी कमाई है। ... अब जो करेगा, वह ऊंच पद पायेगा। निश्चयबुद्धि विजयन्ती और संशयबुद्धि विनश्यन्ति। बेहद का बाप मिला है तो इसमें संशय क्यों आना चाहिए। ... तुमको ज्ञान रतनों से बड़ा प्यार होना चाहिए। एक-एक रतन को धारण कर दान कर विश्व का मालिक बनना है। ज्ञान का एक-एक रतन लाखों रुपयों का है।'' सा.बाबा 28.04.12 रिवा.

''अगर निश्चय है कि भगवान पढ़ाते हैं तो यह पढ़ाई एक सेकेण्ड भी नहीं छोड़ सकते। परन्तु पूरा निश्चय न होने के कारण इतना रिगार्ड नहीं रखते हैं। ... भक्ति मार्ग में जो करते, वह ड्रामा में नूँध है। यह सब ड्रामा बना हुआ है, जो रिपीट होता रहता है। आधा समय ज्ञान और आधा समय भक्ति का चलता है। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात का भी गायन है।''

सा.बाबा 29.02.12 रिवा.

''बाबा की मुरली रोज़ सुनेंगे तो उत्साह में आयेंगे, नहीं तो घुटका खाते रहेंगे। हिम्मत रखनी है, कब किसी बात में संशय नहीं आना चाहिए। ... बाबा राय देते हैं ये चित्र एरोड्रम पर भी लगाओ। मनुष्य चित्र देखकर खुश होंगे। आखिर तो समझेंगे ना कि इनको यह मत देने वाला कौन है। तो बच्चों को बहुत नशा चढ़ना चाहिए।'' सा.बाबा 29.08.11 रिवा.

''तुम्हारे सिवाए और कोई निराकार परमपिता परमात्मा को भी याद नहीं करते होंगे। इस संगम पर ही पारलौकिक बाप आकर बच्चों को अपना परिचय देते हैं और बच्चे निश्चयबुद्धि होकर उसी धुन में रहते हैं कि हम परमपिता शिवबाबा के महावाक्य सुनते हैं। परमपिता परमात्मा इस समय ही मुरली चलाते हैं। शास्त्रों में है कि कृष्ण मधुवन में मुरली बजाते हैं। मधुवन तो यह एक ही है, बाकी सब जगह मुरली जाती है।''

सा.बाबा 12.09.12 रिवा.

''शिवबाबा कहते हैं - मैं इस साधारण तन में बैठ पढ़ाता हूँ। पढ़ाई तो जरूर पढ़नी चाहिए ना। बहुत अच्छे-अच्छे बच्चों का माथा ही फिर जाता है, अहंकार आ जाता है। फिर उल्टा बोलने लग पड़ते हैं, फिर चेतना आती है तो समझते हैं कि यह हमने ठीक नहीं कहा, फिर पश्चाताप करते हैं। ... कमाई में ग्रहचारी भी बैठती है, माया इन्सालवेन्ट बना देती है।''

सा.बाबा 1.09.12 रिवा.

''यह है मधुवन हेड ऑफिस। कितने सेन्टर्स खुलते रहते हैं। कल्प पहले जो ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ बनें थे, वे अभी भी जरूर बनेंगे। ... ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ तो ढेर के ढेर बनते जायेंगे, दिन प्रतिदिन सेन्टर खुलते जायेंगे, शूद्र से ब्राह्मण बनते जायेंगे। जो ब्राह्मण बनेंगे, वे ही फिर देवता बनेंगे।'' सा.बाबा 24.08.12 रिवा.

''यह मधुवन है हेड ऑफिस, कितने सेन्टर्स खुलते रहते हैं। जो कल्प पहले ब्रह्मा कुमार-कुमारी बनें थे, वे ही फिर ब्राह्मण से देवता, फिर क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनते आये हैं, अब फिर उनको ही ब्राह्मण बनना है। ब्राह्मणों की है चोटी। तुमको ही इन वर्णों से पास करना होता है। ... अभी बाप कहते हैं - पवित्र बनो और मामेकम् याद करो, कोई देहधारी को याद नहीं करो।''

सा.बाबा 24.08.12 रिवा.

मुरली - मधुबन, गोपी-वल्लभ और गोप-गोपियाँ

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह आकर ज्ञान की मुरली सुनाता है और जो आत्मायें उनकी मुरली सुनते हैं, ही सच्चे गोप-गोपियाँ हैं, वे ही उस मुरली को सुनकर हर्षित होते हैं और मुरली को धारण कर अपना जीवन श्रेष्ठ बनाते हैं। मुरली को सुनने वाले और धारण करने वाले तो थोड़े ही होते हैं परन्तु उस मुरली के आधार से सर्वात्माओं का कल्याण होता है, सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है, सारे विश्व का कल्याण होता है, इसलिए सभी धर्म वाले परमात्मा को याद करते हैं। मुरलीधर का साथ और मुरली ही आत्म-कल्याण का एकमात्र आधार है। अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों का ही गाया हुआ है, उसका आधार मुरली है। जो मुरली को ऐसे महत्व से पढ़ते हैं, सुनते हैं, विचार करते हैं और अन्य आत्माओं को सुनाते, वे अतीन्द्रिय सुख का अनुभव अवश्य करते हैं।

भक्ति मार्ग की गोप-गोपियाँ

ज्ञान मार्ग की गोप-गोपियाँ

ज्ञान मार्ग में जो आत्मायें साकार में परमात्मा की बनती हैं, उनकी ज्ञान मुरली सुनते हैं, वे ही वास्तव में सच्चे गोप-गोपियाँ हैं। परमात्मा भी साकर ब्रह्मा तन से महावाक्यों को उच्चारण करते हैं, जो उनको साकार में सुनते हैं, पढ़ते हैं, वे अतीन्द्रिय सुख में झूमने लगते हैं, उनका ही फिर भक्ति मार्ग में यादगार रूप में गायन होता है।

भारत में भागवत की कथा का बहुत महत्व है और भागवत में श्रीकृष्ण के साथ गोप-गोपियों का वर्णन आता है कि गोप-गोपियां श्रीकृष्ण की मुरली पर मोहित हो जाती थी। मुरली की तान सुनते ही तन-मन की सुधबुध भूल जाती थी परन्तु वे गोप-गोपियां कौन हैं और वह मुरली कौन सी है, जो गोप-गोपियों को तन-मन की सारी सुधबुध भुला देती है, इसका राज़ भी बाबा ने अभी बताया है कि अभी जो आत्मायें साकार में आये परमात्मा के साथ पार्ट बजाते हैं, उनकी ज्ञान मुरली सुनते हैं, वे ही सच्चे गोप-गोपियां हैं और परमात्मा साकार में जो ज्ञान देते हैं, वही जादूभरी मुरली है, जो तन की सुधबुध भुलाकर आत्मिक स्वरूप में स्थित कर देती है, जिसमें स्थित आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है, जो सुख देवताओं को भी उपलब्ध नहीं है और इस संगमयुग के सिवाए त्रिलोक्य में कहाँ भी प्राप्त नहीं हो सकता है।

यह राज भी अभी बाबा ने बताया है। गोपी-वल्लभ शिव परमात्मा है और हम आत्मायें जो अभी साकार में उनके बच्चे बने हैं, वे ही गोप-गोपियाँ हैं। अभी ब्रह्मा तन में अवतरित परमात्मा के साथ जो आत्मायें पार्ट बजाती हैं, उनके साथ विश्व-परिवर्तन के दिव्य कर्तव्य में सहयोगी हैं, वे ही सच्चे गोप-गोपियाँ हैं, जिनके लिए गायन है कि वे मुरली सुनकर

अतीन्द्रिय सुख में झूम उठते थे, जिन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठाने में उनका साथ दिया। बाबा के महावाक्य ही मुरली है, जो गोप-गोपियों का मन मोहित करने वाली है और सर्व का कल्याण करने वाली है। इसीलिए गायन है कि अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ की गोप-गोपियों से पूछो।

''मुरली से साँप के विष को भी समाप्त कर लेते हैं। तो ऐसा मुरलीधर हो जो किसी का कितना भी कड़ुआ संस्कार-स्वभाव हो, उसको भी वश कर दे। ... सदा हर्षित बना दे। ... मुरली से प्यार है, मुरलीधर से प्यार है लेकिन प्यार का सबूत है। ... जो कहा, वह करके दिखाना।''

अ.बापदादा 11.4.86

''कहते फलानी डेट की मुरली में यह बात कही गई है, उसी प्रमाण मैं यह कर रहा हूँ। लेकिन वे समय और सरकमस्टान्सेज को नहीं देखते, केवल शब्द पकड़ लेते हैं।''

अ.बापदादा 27.10.75

''शिवबाबा इस तन में आया हुआ है। यहाँ तुम शिवबाबा के सम्मुख बैठे हो। यहाँ शिवबाबा के सम्मुख रहने से तो अपार खुशी रहती है। सारा समय शिवबाबा के सम्मुख रहे तो अहो सौभाग्य। गायन है अतीन्द्रिय सुख गोपी बल्लभ की गोप-गोपियों से पूछो। वह यहाँ का गाया हुआ है। अभी तुम जानते हो - हम ईश्वरीय गोद में हैं, फिर तुम दैवी गोद में होंगे।''

सा.बाबा 27.11.11 रिवा.

''पूर्णमासी की रात की रास का गायन है। गोप-गोपियों की तीन विशेषतायें क्या है ... रात को दिन बनाया .. दूसरी जागती ज्योति थे .. तीसरा हाथ में हाथ और ताल में ताल मिला हुआ था अर्थात् संस्कार मिले हुए थे। मरना पड़ेगा, सुनना पड़ेगा, झुकना पड़ेगा - ऐसे कहने से भक्त बनते हो। ... ऐसे रास मिलाने वाले ही माला के मणके बनते हैं।''

अ.बापदादा 30.9.75

''मुरली लिखना बहुत अच्छी सेवा है, सभी पढ़कर बहुत खुश होंगे, आशीर्वाद करेंगे। ... कोई-कोई बच्चे बाबा को लिखते हैं - बाबा, हमको वाणी कट करके मिलती है, हमारे रतनों की चोरी हो जाती है। जो रतन आपके मुख से निकलते हैं, वे सब हमारे पास आने चाहिए, हम उनके अधिकारी हैं। ये बात कहेंगे भी वे ही जो अनन्य होंगे, बाबा की मुरली से प्यार होगा।''

सा.बाबा 23.03.12 रिवा.

''सारा मदार पढ़ाई पर है। शुरू में बचचे मुरली बिगर एक दिन भी रह नहीं सकते थे, कितना तड़पते थे। मुरली में ही जादू है ना। ... उस समय मुरली का तुमको कितना कदर था। एक-दो को मुरली पहुँचाने का कितना प्रयास करते थे। इससे बड़ा जादू कोई होता नहीं है। ...

बाबा को वण्डर लगता है कि चलते-चलते बहुत बच्चों को माया का तूफान ऐसा लगता है, जो मुरली पढ़ना, क्लास में आना ही छोड़ देते हैं।'' सा.बाबा 24.01.12 रिवा.

''बाबा कहते - ज्ञानी तू आत्मा मुझे अति प्रिय हैं। गोपियाँ भी मुरली पर मस्त होती थी परन्तु कृष्ण ने तो मुरली नहीं सुनाई, शिवबाबा श्रीकृष्ण की आत्मा के अन्तिम जन्म में प्रवेश कर मुरली सुनाते हैं। ... बाँधेली गोपियों पर सितम भी होते हैं परन्तु इसमें बड़ा निर्भय और नष्टोमोहा बनना होता है। यज्ञ में कल्प पहले मुआफिक विघ्न तो पड़ेंगे ही।''

सा.बाबा 2.01.12

''अब देखो - श्रीकृष्ण की आत्मा को अन्तिम जन्म में फुल ज्ञान है, फिर श्रीकृष्ण के रूप में गर्भ से बाहर निकलेंगे तो पाई का भी ज्ञान नहीं होगा। बाप यह भी समझाते हैं कि कृष्ण ने कोई मुरली नहीं बजाई। वे यथार्थ रीति इस आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र के ज्ञान को ही नहीं जानते हैं।'' सा.बाबा 14.05.11 रिवा.

''सारा समय एक शिवबाबा की ही याद रहे तो अहो सौभाग्य। यहाँ बाप के सम्मुख रहने से तो बहुत खुशी होनी चाहिए। गायन है - अतीन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो। ... भल यहाँ बैठे कोई की बुद्धि में सर्विस के ख्यालात भी चलते हैं, परन्तु जो अच्छे बच्चे होंगे, वे समझेंगे अभी तो बाप से सुनना है, बाप को याद करना है, वे और कोई संकल्प आने नहीं देंगे।'' सा.बाबा 25.02.11 रिवा.

मधुबन - पाण्डव भवन, ज्ञान-सरोवर और शान्तिवन

Q. पाण्डव-भवन, ज्ञान-सरोवर और शान्तिवन मुख्य रूप से मधुवन हैं क्योंकि तीनों स्थानों पर मुरलीधर की मुरली चली है परन्तु मधुवन के तीनों स्थानों की क्या-क्या अपनी विशेष विशेषतायें हैं, तीनों में क्या समानतायें हैं और तीनों स्थानों में क्या-क्या अन्तर है ?

पाण्डव भवन, ज्ञान-सरोवर और शान्तिवन तीनों को ही मधुबन के नाम से जाना जाता है क्योंकि तीनों ही स्थानों पर मधुसूदन अर्थात् अव्यक्त बापदादा की पधरामणी हुई है और तीनों ही स्थानों का यज्ञ के कारोबार, प्रबन्धन आदि में महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु तीनों स्थानों की अपनी-अपनी कुछ विशेष विशेषतायें हैं, जिसके आधार पर तीनों का अपना-अपना विशेष महत्व है। तीनों का अपना-अपना आकर्षण है, जो आत्माओं को आकर्षित करता है। तीनों के विषय में अव्यक्त बापदादा ने भी विशेष महावाक्य उच्चारे हैं अर्थात् अपनी मुरली में महत्व बताया है।

पाण्डव-भवन का कम्पलेक्स ही ऐसा स्थान है, जहाँ साकार और अव्यक्त बापदादा

दोनों का पार्ट चला है। पाण्डव भवन ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय का मुख्यालय है परन्तु वर्तमान में प्रबन्धन का अधिकांश कारोबार शान्तिवन से ही होता है और अव्यक्त बापदादा की पधरामणी भी शान्तिवन में ही होती है। परन्तु पाण्डव भवन की अपनी विशेष विशेषता है, जो तीनों ही स्थानों पर नहीं है। साकार पार्ट के आधार पर चार धाम (बाबा का कमरा, हिस्ट्री-हॉल, बाबा की कुटिया और शान्ति-स्तम्भ) पाण्डव भवन में ही हैं और अव्यक्त बापदादा ने भी मुरली में उन स्थानों की यात्रा का विशेष महत्व बताया है। साकार बाबा, मातेश्वरी जगदम्बा के साथ आदि रतनों की तपस्या भूमि भी पाण्डव भवन ही है, इसलिए इस भूमि में विशेष वायब्रेशन्स हैं, जो आत्माओं को विशेष आकर्षित करते हैं। अज्ञानी आत्मायें अर्थात् जो इस विश्व-विद्यालय के नियमित विद्यार्थी नहीं हैं और इस ज्ञान से पूर्ण रूपेण अवगत नहीं है, वे भी उन वायब्रेशन्स को अनुभव करते हैं, उनका वर्णन करते हैं।

जैसे वृक्ष की जड़ और तना होता है, उसके बाद शाखायें-प्रशाखायें निकलती हैं और वृक्ष विस्तार को पाता है, ऐसे ही इस मधुवन रूपी वृक्ष की जड़ और तना पाण्डव भवन ही है, ज्ञान-सरोवर, शान्तिवन, संगम-भवन, म्युजियम, हॉस्पिटल आदि सब शाखायें-प्रशाखायें ही हैं, जिनका प्रेरणा स्त्रोत यह मधुवन का पाण्डव भवन ही है।

मधुसूदन अर्थात् साकार बापदादा और अव्यक्त बापदादा का मूल स्थान मधुवन ही रहा है और है भी। अव्यक्त बापदादा की पधरामणी, उनकी सेवा, मिलन का अधिक पार्ट पाण्डव-भवन में ही चला है। इसलिए इस पाण्डव भवन की जो विशेष विशेषतायें हैं वे और किसी स्थान पर न हैं और न हो सकती हैं, यह विश्व-नाटक की अविनाशी नूँध है परन्तु अन्य स्थानों का भी अपना विशेष महत्व है।

ज्ञान-सरोवर, शान्तिवन का भी अपना विशेष महत्व है और सेवा के विस्तार में उनका विशेष स्थान है। सेवा के विस्तार के हिसाब से अभी अव्यक्त बापदादा की पधरामणी भी शान्तिवन में ही होती है, जहाँ आत्मायें आकर परमात्मा की अव्यक्त मुरली सुनते हैं और अव्यक्त बापदादा से मधुर मिलन मनाते हैं।

ज्ञान सरोवर का भी विश्व सेवा में विशेष महत्व है और अव्यक्त बापदादा ने भी एक बार वहाँ पधार कर उस पर मधुवन की छाप लगा दी और महावाक्य उच्चारे कि इस ज्ञान सरोवर का विश्व सेवा में विशेष महत्व होगा, जो अनुभव भी करते हैं।

जब साकार बाबा अव्यक्त हुए तो शिवबाबा ने सन्देश में कहा कि ये पंच तत्व पंच तत्वों में विलीन होकर पंच तत्वों को पावन करेंगे। साकार बाबा की देह के पंच तत्व इस पाण्डव-भवन के पंच तत्वों में ही समाहित हुए हैं, जो अपना कार्य कर रहे हैं।

मधुवन की यात्रा की सम्पन्नता पाण्डव भवन में आने से ही होती है क्योंकि चार धाम पाण्डव भवन में ही हैं, जिनकी यात्रा करने पर ही यात्रा की सच्ची सफलता होती है।

मधुवन अर्थात् पाण्डव भवन

गीत - सारे जहाँ से अच्छा मधुवन ये हमारा है ....

आबू पर्वत की महिमा महान, जहाँ आते शिव भगवान

आबू ऋषि-मुनियों की तपस्या स्थली

राजऋषियों की तपस्या स्थली

धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहाँ जहाँ नाथ पांव तुम धारा।

मधुबन का बाबा

मधुबनवासी

मधुबन और यज्ञ का आबू में स्थानान्तरण

बृज कोठी

कोटा हाउस एवं धौलपुर हाउस

मधुबन और परमात्म मिलन

मधुबन और साकार ब्रह्मा बाबा

मधुबन और निराकार शिव बाबा

मधुबन और अव्यक्त बापदादा

मधुबन और चार धाम

बाबा का कमरा

हिस्ट्री हॉल

बाबा की कुटिया

शान्ति स्तम्भ

मधुबन और मधुसूदन की मुरली

मधुबन और मधुबन के विभिन्न भवन

साकार बाबा के कर-कमलों द्वारा निर्मित

पुराना भवन

हिस्ट्री हॉल (1964)

पुराना भण्डारा

हवाई महल

एश्रज्ञै पल्

ट्रेनिंग सेन्टर

साकार बाबा के अव्यक्त होने के बाद निर्मित

मेडीटेशन हॉल (1972-73)

विशाल भवन

लाइट हाउस

माइट हाउस

योग भवन

ऊपर का बड़ा भण्डारा

ज्ञान-विज्ञान भवन

ओम् शान्ति भवन

सुखधाम

कुन्ज भवन

नीचे का बड़ा भण्डारा

मधुबन और मधुबन के अन्य स्थान

आध्यात्मिक संग्रहालय (69-70)

संगम भवन

पीस पार्क

ज्ञान सरोवर

शान्तिवन

हॉस्पिटल

मधुबन में समर्पित जीवन और अन्य सेवास्थानों पर समर्पित जीवन

''यहाँ मधुबन भट्ठी में आये ही हो देह में रहते विदेही हो रहने के अभ्यास के लिए। ... जो लक्ष्य रखा जाता है, उसको पूर्ण करने के लिए अभ्यास और अटेन्शन चाहिए। ... बाप ने भट्ठी में उल्टी सीढ़ी का कुछ न कुछ जो ज्ञान रहा हुआ है, उस ज्ञान से अज्ञानी बनाने के लिए और जो सत्य ज्ञान है, उसकी पहचान देकर ज्ञान-स्वरूप बनाने के लिए बुलाया है।''

अ.बापदादा 17.11.69

मुरली - मधुबन और आदि रत्न

मुरली - मधुवन और मधुबन निवासी

अनादि पिता परमात्मा और आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा के साथ-साथ आदि रतनों के त्याग, तपस्या और सेवा का इस यज्ञ की स्थापना और विश्व नव-निर्माण के पावन कार्य में विशेष भूमिका अर्थात् विशेष स्थान है। आदि रतनों अर्थात् यज्ञ की स्थापना में सिन्ध हैदराबाद-कराची में ब्रह्मा बाबा के साथ त्याग-तपस्या करने वाली और उनके साथ वर्तमान भारत अर्थात् मधुवन में आयी हुई आत्मायें। जिन आत्माओं ने साकार बाबा के साथ अखण्ड तपस्या कर इस कल्प-वृक्ष की नई कलम लगाई और अपनी तपस्या के बल से इसको सींचा और विस्तार में विशेष योगदान दिया, उन आत्माओं का इस सृष्टि-चक्र में विशेष स्थान है। उनके परमात्म प्रेम, मुरली के प्रति अगाध प्रेम और धारणा तथा अखण्ड तपस्या के आधार पर ही बाबा ने इसका नाम मधुवन और पाण्डव भवन रखा। यथार्थ में देखा जाये तो सच्चा गोप-गोपियों का पार्ट उन आत्माओं ने ही बजाया और परमात्म-चरित्रों का अवलोकन किया, उसका सुख अनुभव किया। ब्रह्मा बाबा के साथ-साथ उनकी त्याग-तपस्या के वायब्रेशन्स भी मधुवन की भूमि में समाहित हैं। बाद में आने वाली आत्माओं की भी अपनी प्राप्ति है क्योंकि इस विश्व-नाटक में हर आत्मा का विशेष पार्ट है और अपने पार्ट के अनुसार उनकी विशेष प्राप्तियाँ हैं। मधुवन निवासियों का क्या महत्व है और क्या कर्तव्य है, मधुवन के वातावरण बनाने में क्या उत्तरदायित्व है, ये सब बातें भी बाबा मुरली में बताते हैं।

''मधुवन निवासियों को और सब आत्माओं से विशेष व्रत लेना चाहिए। कौन सा ? व्रत यही लेना है कि हम सब एकमत, एक ही श्रेष्ठ वृत्ति, एक ही रुहानी दृष्टि और एकरस अवस्था में एक-दो के सहयोगी बन, शुभ-चिन्तक बन, शुभ-भावना और शुभ-कामना रखते हुए और अनेक संस्कार होते हुए भी एक बाप समान सतोप्रधान संस्कार और स्व के भाव में रहने वाला स्वभाव बनाने का किला मज़बूत बनायेंगे।'' अ.बापदादा 18.7.74

''मधुबन निवासियों को भी इस बात का सबूत देना है। ... साकार रूप द्वारा व अव्यक्त रूप द्वारा शिक्षा और स्नेह की पालना कितने समय ली है। पालना लेने के बाद अन्य आत्माओं की पालना करने के निमित्त बन जाते हैं। ... अभी तो पुरानों को, आने वाले नये बच्चों की पालना करनी चाहिए अर्थात् अपने शिक्षा स्वरूप द्वारा और स्नेह द्वारा उनको आगे बढ़ाने में सहयोगी बनना है। इस कार्य में दिन-रात बिज़ी रहना चाहिए।'' अ.बापदादा 18.7.74

''मधुबन वाले आगे के लिए भी अपने मन में आत्माओं को सन्तुष्ट करने में और शक्तिशाली अनुभव कराने में निमित्त बनते रहेंगे।... एडवान्स पार्टी में गये विशेष दादियाँ और विशेष भाई

चार बजे वतन में पहुँचे थे, उन्होंने खास मधुबन वालों को इमर्ज करने के लिए कहा। ... दादी चाहती है कि एक-एक मधुबनवासी बाप समान बन जाये।'' अ.बापदादा 3.04.12

''खास दादी ने कहा - मधुबन वालों का सवेरे से रात तक ऐसा कोई संकल्प-बोल-कर्म नहीं हो, जो दादियों को या बाप को या किसी को भी पसन्द नहीं हो। यह हमारा सन्देश खास मधुबन वालों को देना।'' अ.बापदादा 3.04.12

''मधुबन वाले बापदादा को विशेष प्यारे हैं, ऐसे नहीं कि दूसरे प्यारे नहीं हैं। वे भी प्यारे हैं लेकिन मधुबन वालों से एक बात का विशेष प्यार है। ... जो भी मधुबन में आते हैं, उनकी सेवा के निमित्त हैं। जो भी आते हैं, वे यह वायुमण्डल देखकर आपके दिल के प्यार की शक्ति देखकर खुश हो जाते हैं। ... मधुबन वालों को चान्स है मधुबन का प्यार अनुभव कराने और वायुमण्डल को शक्तिशाली बनाने का।'' अ.बापदादा 3.04.12

''विशेष वरदान भूमि के निवासी होने के कारण पुरुषार्थ के साथ-साथ अनेक प्रकार का सहयोग प्राप्त है। वृत्ति और स्मृति ये दोनों ही पुरुषार्थ में आगे बढ़ने में सहयोगी होते हैं। स्मृति बनती है संग से और वृत्ति बनती वातावरण व वायुमण्डल से। ... यहाँ श्रेष्ठ संग है, शुद्ध वातावरण है और शान्त वायुमण्डल है। जब संग और वातावरण दोनों ही श्रेष्ठ प्राप्त हैं तो स्मृति और वृत्ति सहज ही श्रेष्ठ हो सकती है। ड्रामा में यह गोल्डन चान्स मिला है, उसका लाभ उठाते हो?'' अ.बापदादा 20.2.74

मुरली - मधुबन और मधुबन की भूमि एवं वातावरण

रामायण में गायन है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहाँ-जहाँ नाथ पाँव तुम धारा। इससे सिद्ध होता है कि जीवात्माओं के रहने, स्पर्श का वहाँ की भूमि और वातावरण पर प्रभाव होता है और वह प्रभाव अन्य आत्माओं को भी अनुभव में आता है।

मधुबन के तीनों स्थानों पर बड़े-बड़े हॉल बनाये हैं, तीनों का अपना महत्व है परन्तु जो गौरवपूर्ण स्थिति ओम् शान्ति भवन की है, वह ज्ञान-सरोवर, शान्तिवन के हॉलों की नहीं है। वास्तविकता को देखा जाये तो ओम शान्ति भवन के निर्माण में जो त्याग-तपस्या और भावना रही है, वह अन्य स्थानों पर उस रूप में नहीं रही है और अव्यक्त बापदादा की पधरामणी ने उसने उसके महत्व को बढ़ाया है। इसलिए ओम् शान्ति भवन और पाण्डव भवन के आकर्षण में देश-विदेश के भक्ति-भावना वाले तीर्थ यात्री, भ्रमणकारी जितने आते हैं, उतने ज्ञान-सरोवर और शान्तिवन में नहीं आते हैं, यह मधुबन के वातावरण और तपस्या का ही कमाल है, जो विश्व की आत्माओं को विशेष आकर्षित करता है।

मधुबन में आने से बाप का प्यार प्रत्यक्ष में मिलता है, अनुभव होता है। भल मुरली तो बाहर सेन्टरों पर भी मिलती है परन्तु परमात्म-प्यार का विशेष अनुभव करने का स्थान मधुवन है, जिसकी यात्रा करना ब्रह्मा वत्सों के लिए अति आवश्यक है। अव्यक्त बापदादा ने चार धामों की यात्रा का महत्व भी बताया है अर्थात् सर्व ब्राह्मण वत्सों का इसके महत्व की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

''रहमदिल बन अपना और औरों का कल्याण करेंगे, तो ऊंच पद पायेंगे। बड़ी जबरदस्त कमाई है। साहूकार तो कहेंगे फुर्सत नहीं है। साहूकारों को वहाँ ग़रीब बनना है और ग़रीबों को साहूकार बनना है। ... निरन्तर याद की यात्रा में रहना है और अविनाशी कमाई जमा करनी है। मधुवन में बहुत शान्ति है, तो तुम यहाँ बहुत कमाई कर सकते हो।''

सा.बाबा 19.06.12 रिवा.

''मधुबन शब्द दो बातों को सिद्ध करता है। एक मधुरता और दूसरा बेहद के वैराग्य वृत्ति को। ऐसे ही राजऋषि शब्द का अर्थ है - राज्य करने वाले, बेगर टू प्रिन्स। जितना ही अधिकार, उतना ही सर्व त्याग अर्थात् सर्व त्यागी। अधिकारी अर्थात् समय, संकल्प, स्वभाव और संस्कार के ऊपर अधिकार प्राप्त करने वाले। जैसे चाहें, वैसे अपने समय, स्वभाव और संस्कार को परिवर्तन कर सकें।'' अ.बापदादा 29.1.75

''मधुवन में अपनी लगन को ऐसा अग्नि का रूप बनाओ कि जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियों व सब रहे हुए पुराने संस्कार भस्म हो जायें। मधुवन को कहा जाता है - अश्वमेध रुद्र-ज्ञान महायज्ञ। ... यह महायज्ञ है। मधुवन में आना माना महायज्ञ में आना। मधुवन को महायज्ञ क्यों कहा है? क्योंकि यहाँ अनेक आत्मओं की लगन की अग्नि का समूह है। तो इसका लाभ उठाना चाहिए ना।'' अ.बापदादा 18.1.75 पार्टी

''तुम बाप को याद करो और इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवा करो तो तुम 21 जन्म कब आँसू नहीं बहायेंगे, सदा सुखी रहेंगे। तुम यज्ञ के रक्षक हो तो तुमको हर प्रकार की यज्ञ-सेवा करनी चाहिए। ... यज्ञ का वातावरण ऐसा शान्त रखना चाहिए, जो कोई आये तो अनुभव करे कि यहाँ तो सुख-शान्ति लगी हुई है। कोई आवाज़ आदि करना बाबा को पसन्द नहीं आता है।''

सा.बाबा 23.3.12 रिवा.

''स्वयं को सफलतामूर्त बनाने के निमित्त पुरुषार्थियों के पुरुषार्थ में जो विघ्न सामने आते हैं, उन विघ्नों के कारण क्या स्वयं को सफलतामूर्त नहीं बना सकते हैं? (विघ्न ही आत्मा को अनुभवी बनाते हैं) ... ड्रामा प्रमाण जितना सहजयोगी, श्रेष्ठ योगी और सफलतामूर्त बनने की सेलवेशन प्राप्त है, उतना ही रिटर्न दिया है? वातावरण की भी सेलवेशन है, तो इसका रिटर्न वातावरण

को और पॉवरफुल बनाकर रखने में, सहयोगी बनने में रिटर्न दो।''

अ.बापदादा 11.2.75

मुरली - मधुबन और वृत्ति-वातावरण का प्रभाव

मधुबन के वातावरण में प्रभाव

मधुबन के वातावरण का आने वालों पर प्रभाव

मधुबन की तपस्या का विश्व के वातावरण और आत्माओं पर प्रभाव

मधुबन में मुरली सुनने का प्रभाव

मधुबन के वातावरण में साकार बाबा और आदि रतनों की तपस्या का विशेष प्रभाव है और यहाँ हर समय तपस्या के लिए कोई न कोई कार्यक्रम होता ही रहता है, इसलिए यहाँ की भूमि में तपस्या के वृत्ति-वायब्रेशन्स का जो विशेष प्रभाव है, वह अन्य स्थानों पर होना सम्भव नहीं है। वह प्रभाव आत्माओं को स्वत: ही आकर्षित करता ही है।

मधुबन में आने वाली आत्माओं पर यहाँ के वृत्ति-वायब्रेशन्स का जो प्रभाव होता है, वह उनको भी तपस्वी सहज बना देता है, जिससे उनके वृत्ति-वायब्रेशन्स भी प्रभावशाली हो जाते हैं।

मधुबन में रहने वाली और आने वाली आत्माओं के तपस्या के वायब्रेशन्स सारे विश्व में फैलते हैं अर्थात् उनका प्रभाव सारे विश्व के वातावरण और आत्माओं पर पड़ता है।

मधुबन में मुरली सुनने का भी विशेष प्रभाव होता है क्योंकि यहाँ पर लौकिक दुनिया के वृत्ति-वायब्रेशन्स का प्रभाव अपेक्षाकृत कम है और यहाँ मुरली सुनने के बाद बाहर जाने की आवश्यकता नहीं होती है, इसलिए उसका मनन-चिन्तन स्वत: होता है, इसलिए धारणा करने में यहाँ के वातावरण का विशेष सहयोग रहता है। सेन्टरों पर यह सम्भव नहीं होता है क्योंकि वहाँ तो मुरली सुनने के बाद लौकिक परिवार और गृहस्थ-व्यवहार में जाना होता है।

''किससे भी पूछो - शिवरात्रि मनाते हैं, शिव तो निराकार है, फिर उनकी रात्रि कैसे होती है?... अभी तुम एक बाप से ही सुनते हो, और कोई से कोई बात सुनने की दरकार ही नहीं है। बाप से सुनकर एक-दूसरे को ये ज्ञान की प्वाइन्ट् सुनाओ। ... यहाँ तुमको बाप से जो सुख मिलता है, उसकी धारणा बहुत अच्छी होती है। हॉस्टेल में थोड़े दिन के लिए आते हो।''

सा.बाबा 16.7.12 रिवा.

''यह निश्चय हो जाये कि हम बेहद के मात-पिता के साथ घर में बैठे हैं। यह ईश्वरीय घर है, फिर दर कहो या घर कहो, बात एक ही है। दर पर आया माना घर में आया। दर से ही घर में आता है। तो यह ईश्वरीय घर, यहाँ मात-पिता, भाई-बहन हैं। ... यहाँ से तुम बाहर जाते हो तो अवस्था में रात-दिन फर्क पड़ जाता है।''

सा.बाबा 16.7.12 रिवा.

''मधुवन की क्या महिमा करते हो? कहते हो ना कि यह परिवर्तन भूमि है। आप सभी परिवर्तन भूमि या वरदान भूमि में आये हुए हो। ... यहाँ आना अर्थात् वरदान पाना, परिवर्तन करना। अब क्या परिवर्तन करना है। जो विशेष कमजोरी व विशेष संस्कार समय-प्रति-समय विघ्न रूप बनता है, ऐसा संस्कार व ऐसी कमजोरी यहाँ परिवर्तन करके जाना है।''

अ.बापदादा 18.01.75 पार्टी

''यह है मधुबन। यहाँ ऐसे भी बहुत आते हैं, कहते हैं हम जाकर सेन्टर खोलेंगे, बाहर जाकर गुम हो जाते हैं। यहाँ ज्ञान का गर्भ धारण करते हैं, बाहर जाने वह नशा गुम हो जाता है। माया भी ऑपोजीशन बहुत करती है। ... ऐसे नहीं कहो कि बाबा आप माया को कहो कि हमको घूँसा न मारे। यह युद्ध का मैदान है, बहादुर बन माया पर जीत पानी है।''

सा.बाबा 28.05.12 रिवा.

''अभी वायुमण्डल ऐसा पॉवरफुल बनाओ, जो कोई दरवाजे से आये तो अनुभव करे कि कौनसे स्थान पर आये हैं। शान्ति तो अनुभव करते हैं लेकिन शक्ति की अनुभूति हो कि यहाँ से जो चाहे, वह मिल सकता है। विचित्र स्थान है, यह अनुभव करें। ... पॉजेटिव करेंगे तो निगेटिव दबता जायेगा।''

अ.बापदादा 3.04.12

''श्रेष्ठ संग की भी सेलवेशन है तो जो भी आत्मायें अपना भाग्य प्राप्त करने के लिए आती हैं, उनको भी अपने संग की श्रेष्ठता का अनुभव हो (अर्थात् अनुभव कराओ)। यह है रिटर्न। सब अनुभव करें कि ये सब आत्मायें परमात्म संग के रंग में रंगी हुई हैं। रुहानी संग और अपने चरित्रों द्वारा श्रेष्ठ बनेंगे। ... आपका प्रैक्टिकल साकार स्वरूप का सेम्पुल देखकर उनमें विशेष उमंग-उत्साह रहे।''

अ.बापदादा 11.2.75

''यहाँ तुम सम्मुख बैठकर सुनते हो तो तुम्हारी बुद्धि का योग बाप के साथ रहता है। फिर जब बाहर जाते हो तो वह अवस्था बदल जाती है। ... यहाँ स्वयं ज्ञान का सागर परमपिता परमात्मा ज्ञान का वाण मारते हैं, इसलिए मधुवन की महिमा है। गाते हैं ना - मधुवन में मुरली बाजे। मुरली तो अन्य बहुत स्थानों पर भी बजती है परन्तु यहाँ सम्मुख बैठकर समझाते हैं।''

सा.बाबा 23.08.12 रिवा.

''बाप के सम्मुख आने से ज्ञान के अच्छे वाण लगेंगे क्योंकि वह सर्वशक्तिवान है। बच्चे भी ज्ञान वाण मारना सीखते हैं, परन्तु नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यहाँ तुम डॉयरेक्ट सुनते हो। ... अभी तुम जानते हो - जितना हम पुरुषार्थ करेंगे, बाबा को याद करेंगे, ज्ञान की धारणा करेंगे और दूसरों को भी ज्ञान की धारणा करायेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 23.08.12 रिवा.

''बाहर जाने से नर्कवासियों का संग मिलता है तो सब भूल जाते हैं, इसलिए बाप वार्निंग देते हैं - बच्चे, इस ईश्वरीय बचपन को कब भूलना नहीं। ... ज्ञान बुद्धि में नहीं है तो वाह्यात बातें सुनाकर एक-दो का माथा ही खराब कर देते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं सिवाए ज्ञान की बातों के और किसी की ग्लानि आदि की उल्टी-सुल्टी बातें सुनों नहीं।''

सा.बाबा 21.07.12 रिवा.

मुरली - मधुवन और आबू पर्वत

साकार बाबा ने अनेक बार मुरली में कहा है कि हम अनायास ही आबू में आ गये हैं। अभी देखते हैं कि हमारा यादगार मन्दिर देलवाड़ा आबू में ही है। भक्ति मार्ग के शास्त्रों में भी आबू की महिमा है, इसलिए सभी देशों के पर्यटक और तीर्थ-यात्री आबू में आते हैं और विश्व में परमात्मा का सन्देश पहुँचता रहता है। हमारे ज्ञान और परमात्मा के स्थापना के कार्य का स्पष्टीकरण देलवाड़ा से जितना स्पष्ट होता है, उतना और किसी मन्दिर से नहीं होता। यह भी ड्रामा की अविनाशी नूँध है। आबू में आने के बाद ही विश्व-कल्याण की सेवा अर्थ आत्मायें निकली।

आबू और आबू में मधुवन विश्व-रचना का केन्द्र-बिन्दु है, जहाँ सृष्टि-चक्र की नई रचना का कार्य संचालित होता है अर्थात् सृष्टि-चक्र की नई रचना का सारा कार्य मधुवन के चारो ओर घूमता है। यहाँ से ही बाबा की मुरली चारो तरफ जाती है, जो सर्व ब्राह्मणों के लिए जीयदान है।

मुरली - मधुवन और योग अर्थात् याद (निराकार और साकार)

निराकार शिवबाबा साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में आकर मधुवन में मुरली चलाते हैं, जिस मुरली को सुनने और धारण करने से मनुष्यात्माओं के साथ-साथ समस्त जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बनती है क्योंकि मनुष्य इस विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और सारे विश्व का आधार उस पर है, इसलिए निराकार परमपिता परमात्मा मनुष्य तन में प्रवेश होकर मनुष्यों को ही सारा ज्ञान देते हैं। बाबा जिस तन में प्रवेश कर ज्ञान देते हैं, वह भी बहुत भाग्यशाली तन है, इसलिए उस तन को भाग्यशाली रथ कहा जाता है। वैसे तो निराकार बाप को याद करने से ही आत्माओं का कल्याण होता है अर्थात् आत्मायें पावन बनती हैं, परन्तु बिना साकार के निराकार की याद भी सम्भव नहीं है क्योंकि निराकार साकार में आकर ही निराकार और साकार का ज्ञान देते हैं। इसलिए मुरली में बाबा ने निराकार और साकार दोनों का महत्व बताया है और कैसे हम निराकार बाप को याद करें, वह भी बताया है।

बाबा मुरली में याद का यह राज़ समझाते हैं कि जब तुम साकार ब्रह्मा बाबा से मिलते हो तो निराकार बाप को याद कर मिलो, बिना निराकार बाप की याद के साकार से मिलते हो तो वह व्यभिचारी याद हो जाती है, उससे आत्मा पावन नहीं बन सकती है और ही गिरती कला में चली जाती है।

''बाबा पूछते हैं - तुम ऑलमाइटी बाबा के ऊपर आशिक हो या उनके रथ पर या दोनों पर ? जरूर दोनों पर आशिक होना पड़े। बुद्धि में रहेगा कि शिवबाबा इस रथ में है। ... कितनी गुह्य बातें हैं। जो रोज़ नहीं सुनते हैं, वे कोई न कोई बात मिस कर देते हैं। रोज़ सुनने वाले कभी फेल नहीं होंगे, उनके मैनर्स भी अच्छे रहेंगे।'' सा.बाबा 10.05.12 रिवा.

''निराकार शिवबाबा को मुरली चलाने के लिए रथ जरूर चाहिए। गीता है नम्बरवन शास्त्र, बाकी सब शास्त्र उनके बच्चे हैं। ... आधा कल्प रामराज्य और आधा कल्प रावण राज्य चलता है। यह रामराज्य और रावण राज्य का खेल बना हुआ है, जो पूरा आधा-आधा कल्प चलता है। इस नाटक को अच्छी रीति समझना है। ... अभी तुम स्वदर्शन चक्रधारी हो।''

सा.बाबा 25.02.12 रिवा.

''ये बड़ी वण्डरफुल बातें हैं। बाप कभी राँग बात नहीं सुनायेंगे। वह सत्य है, हम सत्य बन रहे हैं। अपने को मियाँ मिट्ठू नहीं समझना है। ... जब तक परिपूर्ण बनें, तब तक कुछ न कुछ भूल हो सकती है, परन्तु तुम्हारा काम है शिवबाबा से। मनुष्य तो कुछ भी भूलें कर सकते हैं। ... अगर किसी भाई-बहन ने कुछ कह भी दिया, परन्तु तुम शिवबाबा की मुरली तो सुनो ना, बाप का खज़ाना तो लो।'' सा.बाबा 14.01.12 रिवा.

''ऐसे नहीं कि हमारा तो शिवबाबा से डॉयरेक्ट कनेक्शन है। अरे शिवबाबा का वर्सा तो इन द्वारा ही मिलेगा ना। इनको दिल का समाचार सुनाना है, इनसे राय लेनी है। शिवबाबा कहते हैं - मैं राय तो साकार द्वारा ही देंगे। ... उल्टे अहंकार में आकर अपनी बरबादी कर देते हैं। साकार की दिल से उतरे तो निराकार की दिल से भी उतर जाते हैं। ऐसे बहुत हैं - जो कभी मुरली भी नहीं सुनते।'' सा.बाबा 19.11.11 रिवा.

''बाबा कहते - हमेशा समझो कि कि शिवबाबा मुरली चलाते हैं। बुद्धि में होगा कि शिवबाबा डॉयरेक्शन देते हैं तो बाबा भी याद रहेगा और डर भी रहेगा। ... सिर पर पापों का बोझा बहुत है, सच बताने से आधा कम हो जायेगा। ... बाबा ने समझाया है कि जो नम्बरवन पुण्यात्मा बनते हैं, वे ही फिर नम्बरवन पापात्मा भी बनते हैं।''

सा.बाबा 1.11.11 रिवा.

''बाप कहते कई बच्चे देहाभिमान में आकर ब्राह्मणी से रूठ जाते हैं परन्तु बाप कहते हैं -

शिवबाबा से कभी नहीं रूठना चाहिए, उनकी मुरली तो जरूर पढ़नी या सुननी चाहिए। याद भी उनको करना है, किसी देहधारी को नहीं। ... सबको वर्सा तो दादे का मिलता है परन्तु जब बाप का बनें, तब दादे का वर्सा मिले। बाप को ही फारकती दे दी तो वर्सा कैसे मिलेगा।''

सा.बाबा 12.09.11 रिवा.

''तुम बच्चों को यह भी पता नहीं पड़ता है कि यह मुरली शिवबाबा ने चलाई वा ब्रह्मा चलते हैं क्योंकि दोनों इकट्ठे हैं ना। ... मम्मा-बाबा का तो ऊंच पद फिक्स है, बाकी माला अभी बनी नहीं है। अभी कोई भी दाना कम्पलीट नहीं है।'' सा.बाबा 5.03.11 रिवा.

''यह पतित ब्रह्मा है, वही जब पावन बनते हैं तो फरिश्ता बन जाते हैं, जिनका सूक्ष्मवतन में साक्षात्कार होता है। ... आत्मा जब शरीर छोड़ती है, तो जब तक उसको शरीर मिले, तब तक भटकती है। उसको भूत कहते हैं। उनमें कोई अच्छी होती है, कोई बुरी होती है। बाप ज्ञान का सागर है, वह हर एक बात की समझानी देते हैं।'' सा.बाबा 8.03.11 रिवा.

''तुम बच्चों को मालूम है कि बाबा दो बजे उठकर मुरली लिखते थे, फिर तुम पढ़कर क्लास कराते थे। बाबा भी सुनते थे कि देखें बच्चे कैसे मुरली चलाते हैं। यह सब शिवबाबा का ही कमाल था। ... मुरली नहीं सुनते हो तो फिर बाप को भी याद नहीं कर सकेंगे। ... सर्विस से ही बच्चों की वफादारी, फरमान बरदारी सिद्ध होती है। बाप से सम्मुख सुनने से नशा चढ़ता है, वैराग्य आता है।'' सा.बाबा 5.09.12 रिवा.

''तुम बच्चे यहाँ योग सीखने के लिए नहीं आये हो। यहाँ तुम आते हो सम्मुख बाप से मुरली सुनने। बाप की मुरली बहुत प्यारी लगती है। योग तो तुम चलते-फिरते भी कर सकते हो। ... यहाँ तुम्हारी पढ़ाई और योग इकट्ठे हैं। पढ़ाई को पढ़ना है और पढ़ाने वाले को भी याद करना है। ... बाप इस मुख का आधार लेकर कहते हैं - मामेकम् याद करो।''

सा.बाबा 6.09.12 रिवा.

''शिवबाबा सभी आत्माओं को श्रीमत देते हैं कि मुझ निराकार शिवबाबा को याद करो क्योंकि वह सर्वात्माओं का लिबरेटर है। लिबरेटर माना सद्गति दाता। ... यहाँ तुम सम्मुख बैठे हो तो याद अच्छी रहती है इसलिए नशा चढ़ता है, घर जाने से भूल जाते हो। ... निराकार को वर्सा देने के लिए जरूर साकार में आना पड़े। निराकार बाप के हम अविनाशी बच्चे हैं, फिर प्रजापिता ब्रह्मा के साकारी बच्चे हैं।'' सा.बाबा 21.07.12 रिवा.

मुरली - मधुबन और साकार एवं अव्यक्त मिलन

मधुबन में ही मुरली बजती है अर्थात् साकार और अव्यक्त बापदादा की मुरली

मधुबन में ही चलती है और साकार व अव्यक्त बापदादा के मिलन का स्थान भी मधुवन ही है, इसलिए मधुबन की महिमा अपरमअपार है, जहाँ हम परमात्म-मिलन का अनुभव करते हैं अर्थात् परमात्म-प्यार का अनुभव करते हैं।

बाबा के महावाक्य - मुरलीधर से प्यार माना मुरली से प्यार और मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार अर्थात् जिसका मुरली से प्यार होगा, उसको मुरलीधर परमात्मा का प्यार अवश्य अनुभव होगा और बाबा की मुरली मधुवन में ही चलती है, इसलिए उसको मधुवन से भी अवश्य प्यार होगा। साकार बाबा से मिलने और मुरली सुनने के लिए बच्चे मधुवन में आते थे और अभी अव्यक्त बापदादा की मुरली सुनने और अव्यक्त बापदादा का साकार में मिलन मनाने के लिए सभी बच्चे मधुवन में ही आते हैं। वैसे तो बाबा कहते हैं तुम अव्यक्त रूप में स्थित होकर कहाँ भी अव्यक्त बापदादा से मिलन मना सकते हो परन्तु अव्यक्त बापदादा का साकार में मिलन मनाने के लिए और उनकी साकार में मुरली सुनने के लिए मधुबन में ही आना होगा।

अव्यक्त बापदादा ने कहा है - यथार्थ मुरली वही है, जो शिवबाबा ने साकार तन से चलाई है, अभी तो रिवाइज़ कोर्स चल रहा है। अव्यक्त मुरली भी वास्तव में रिवाइज़ कोर्स ही है। साकार के द्वारा शिवबाबा ने जो ज्ञान दिया, उसकी धारणा करके ही साकार ब्रह्मा बाबा अव्यक्त फरिश्ता बनें। ज्ञान के गुह्य रहस्यों का ज्ञान शिवबाबा ने साकार में ही दिया है।

''बाप के सामने बैठने से बच्चों को बादशाही का नशा चढ़ता है। पहले बाप का नशा, फिर बादशाही का नशा चढ़ता है। ... यहाँ तुम जानते हो - बाप से हमको स्वर्ग का वर्सा मिलता है। बाप को देखने से बच्चों को स्थाई खुशी होनी चाहिए। इसको ही रूह-रिहान कहा जाता है। तुम जानते हो - अभी हमारा देहाभिमान निकल रहा है, हम देही-अभिमानी बन रहे हैं।''

सा.बाबा 8.06.12 रिवा.

''कोई बात नहीं लेकिन अभी बाकी जो भी समय मिला है, उसमें बाप का महावाक्य जरूर सुनना। बाप परमधाम से आता है, सूक्ष्मवतन से ब्रह्मा बाबा आता है और आकर महावाक्य उच्चारण करते हैं, इसलिए मुरली कभी भी, एक दिन भी मिस नहीं करना। नहीं तो बापदादा का दिलतख्त छूट जायेगा। इसलिए जो मुरली मिस करते हैं, वे समझें हम तीन तख्त के मालिक नहीं, दो तख्त के मालिक भी यथा शक्ति बनेंगे। इसलिए मुरली, मुरली, मुरली। क्योंकि मुरली में रोज़ के डॉयरेक्शन होते हैं, चारो ही सब्जेक्ट के डॉयरेक्शन होते हैं। ... कैसे भी मुरली जरूर सुनें।''

अ.बापदादा 17.2.11

''उसमें भी विशेष मधुवन निवासी अपने को सदा लकीएस्ट समझो क्योंकि सिवाए मधुवन के

बापदादा कहाँ भी साकार में मिलन नहीं मना सकते। हाँ, आकारी रूप में यहाँ-वहाँ जा सकते हैं। जब जिसका समय आता है तो सरकमस्टान्सेज व समय सहज और स्वत: ही उसको वहाँ ले जाता है।''

अ.बापदादा 2.8.75

मुरली - मधुवन और विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी

''अभी तुम त्रिनेत्री बने हो। त्रिनेत्री बनें, तब त्रिकालदर्शी बनें क्योंकि आत्मा को ही ज्ञान मिलता है। ... बाप कहते हैं - अभी नाम-रूप से न्यारा बनो, अपने को अशरीरी आत्मा समझो। ... अभी हम सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझ रहे हैं। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी अभी तुम्हारी बुद्धि में है।''

सा.बाबा 28.05.10 रिवा.

ज्ञान सागर, कल्प-वृक्ष के बीजरूप निराकार परमपिता परमात्मा ने साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रवेश होकर मधुबन में मुरली के द्वारा इस विश्व-नाटक की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान दिया है और विश्व रचना के अनेक गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण किया है। बाबा ने यह भी बताया है कि हिस्ट्री चेतन आत्माओं की होती है और जाग्राफी जड़-जंगम प्रकृति की होती है परन्तु दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं अर्थात् चेतन आत्मायें जो भी पार्ट बजाती हैं, उसमें जॉग्राफी का आधार अवश्य होता है और जॉग्राफी में भी जो परिवर्तन होता है, उसका कारण चेतन आत्माओं के कर्म-संस्कार हैं क्योंकि चेतन आत्माओं के कर्मों अनुसार सुख-दुख देने के लिए ही जॉग्राफी अर्थात् जड़-जंगम प्रकृति में परिवर्तन होता है। इस हिस्ट्री-जॉग्राफी से हम तीनों लोकों और तीनों कालों को जान सकते हैं और इस विश्व-नाटक का परम-सुख अनुभव कर सकते हैं और भविष्य के लिए पुरुषार्थ करके भविष्य को भी सुखद बना सकते हैं।

हिस्ट्री

सृष्टि-चक्र का ज्ञान हिस्ट्री है, जिसमें परमात्मा ने आदि से लेकर अन्त तक कैसे ये विश्व-नाटक चलता है, उसमें क्या-क्या घटनायें होती हैं और उससे हमारा क्या सम्बन्ध है, उसके विषय में ज्ञान दिया है।

जॉग्राफी

तीनों लोकों का ज्ञान भी परमात्मा ने मुरली के द्वारा दिया है और सृष्टि-चक्र के आदि से अन्त तक कैसे इस धरा पर परिवर्तन होता है, समय-समय पर जड़-जंगम प्रकृति कैसी होती है, वह भी बताया है।

बाबा ने मुरली में इस सृष्टि-चक्र की सत्य हिस्ट्री-जॉग्राफी का जो ज्ञान दिया है, वह बहुत ही जानने योग्य है और उसको यथार्थ रीति जानने वाला ही मनुष्य से देवता बनने का

यथार्थ पुरुषार्थ कर सकता है, अपने भाग्य को बना सकता है।

ज्ञान सागर बाबा ने इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी के जिन गुह्य रहस्यों का ज्ञान दिया है, उनमें सृष्टि रचना अर्थात् इसके कलम का ज्ञान, हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान, पूज्य और पुजारी का ज्ञान, सूक्ष्म वतन का ज्ञान, विभिन्न धर्मों की स्थापना का ज्ञान, कलियुग और सतयुग के संगम पर भौगोलिक परिवतन एवं त्रेता और द्वापर के संगम के भौगोलिक परिवर्तन का ज्ञान, भारत के उत्थान-पतन की हिस्ट्री, आदि विशेष है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी में परमात्मा की मुरली और मधुवन का महत्वपूर्ण स्थान है।

''सतयुग में ज्ञान सागर की ज्ञान बरसात नहीं होती है क्योंकि वहाँ तो ज्ञान सागर की वर्षा से पावन बने हुए हैं। ज्ञान के साथ फिर वैराग्य भी चाहिए। किस चीज़ का वैराग्य ? सारी पुरानी पतित दुनिया का बुद्धि से वैराग्य। ... तुम जानते हो - शान्तिधाम सभी आत्माओं का घर है, जहाँ सब आत्मायें रहती हैं। यह तुम बच्चों की ही बुद्धि में है, और किसकी बुद्धि में यह ज्ञान नहीं है।'' सा.बाबा 18.06.12 रिवा.

''तुम तो चेलेन्ज देते हो कि सतयुगी श्रेष्ठाचारी दैवी राज्य में पहले-पहले 9 लाख ही मनुष्य होंगे। कोई बोले - इसका क्या प्रूफ है ? तो कहो - यह तो समझ की बात है ना कि सतयुग में झाड़ छोटा ही होगा। फिर धीरे-धीरे वृद्धि को पायेगा। ... बाबा मुरली में सब डॉयरेक्शन देते रहते हैं। हर एक चित्र की समझानी बड़ी अच्छी है।'' सा.बाबा 14.10.11 रिवा.

''तुमको वहाँ भी मुरली मिलती है। कोई समय मुरली नहीं भी मिलेगी, ऐसी आफतें आयेंगी, हंगामा आदि होगा कि तुमको मुरली नहीं मिल सकेगी। तो भी तुमको बाप को याद करना है। तुम इन ऑखों से जो कुछ भी देखते हो, वह कुछ भी नहीं रहेगा, सब भस्म हो जायेगा, परन्तु प्रलय तो होती नहीं है। दुनिया तो एक ही है, जो नई से पुरानी और पुरानी से नई होती है।''
सा.बाबा 22.07.11 रिवा.

मुरली और कर्म

गायन है - कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस कीन्ह तासु फल चाखा। तुलसी यह तन खेल है मन्सा भया किसान, जो जस बुवै सो तस लुनै निधान। इन सबसे सिद्ध होता है कि इस सृष्टि कर्मक्षेत्र है, जिसमें कर्म प्रधान है अर्थात् हर आत्मा को उसके कर्मों अनुसार सुख-दुख मिलता है। परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह आकर कर्म का यथार्थ राज़ बताते हैं और हमारे कर्म श्रेष्ठ हों, उसका विधि-विधान भी मुरली के द्वारा बताते हैं।

मुरली के द्वारा परमात्मा ने कर्मों की गहन गति का ज्ञान दिया है अर्थात् सुकर्म-

अकर्म-विकर्म क्या होते हैं, उनका आत्माओं के सुख-दुख में क्या स्थान है, उसका ज्ञान देकर सुकर्म करना सिखाया है, जिन सुकर्मों के आधार पर आत्मायें अपना और विश्व का कल्याण करती हैं और सतयुग-त्रेता के लिए शुभ कर्मों का खाता जमा करती हैं।

परमात्मा सर्व आत्माओं का पिता है, वह आकर सर्वात्माओं को जन्मसिद्ध अधिकार अर्थात वर्सा देते हैं, परन्तु सृष्टि-चक्र के कर्म और फल के विधि-विधान अनुसार, वह वर्सा हर आत्मा अपने कर्मों के आधार पर ही लेती है। परमात्मा तो सबका पिता है, समदर्शी है, इसलिए वह किसको अधिक या किसको कम नहीं देता है, परन्तु यह कम या अधिक हर एक के कर्मों के आधार पर हो जाता है।

यह वैराइटी ड्रामा है, हर आत्मा का अपना पार्ट है, इसलिए पार्ट के अनुसार इसमें नम्बरवार होना ही है। किन्हीं दो आत्माओं का पार्ट एक जैसा हो नहीं सकता। विश्व-नाटक की इस विविधता के लिए कर्मों का महत्वपूर्ण स्थान है। कर्मों का यह सब ज्ञान भी बाबा ने मुरली में ही दिया है। जो मुरली को जितना विधि-विधान के अनुसार पढ़ते हैं, उतना ही उनके जीवन में ये कर्मों के ज्ञान की धारणा होती है और उतना ही वे श्रेष्ठ कर्म करने में समर्थ होते हैं।

''पवित्रता के साथ चलन भी बहुत अच्छी चाहिए। चलन खराब है तो वे भी काम के नहीं हैं, वे सेवा कर नहीं सकते। ... तुमको पारलौकिक बाप कहते हैं - बच्चे, पवित्र बनो, देही-अभिमानी बनो, कब क्रोध नहीं करना है। ... यज्ञ में रहकर विकार में जाने से तुम यज्ञ को अपवित्र बनाते हो, तो बहुत कड़ा दण्ड मिलता है।'' सा.बाबा 18.05.12 रिवा.

''विचार करो आप लोगों को बाप द्वारा जो जिम्मेवारी व कार्य मिला है, वह कितना बड़ा है और अब तक भी कार्य कितना रहा हुआ है? ... साथ-साथ अपने विकर्मों को भस्म करने का कार्य है। कितने जन्मों का बोझ सिर पर है, जो भस्म करना है।... एक तो ज्ञान खज़ाने को सुमिरण करने का कार्य, दूसरा विकर्म भस्म करने का कार्य और तीसरा विश्व के कल्याण का कार्य। इतना बुद्धि का काम होते हुए भी बुद्धि फ्री कैसे हो सकती है, जो व्यर्थ संकल्प आयें!''

अ.बापदादा 11.7.74

''बाप की सर्विस में विघ्न डालते हैं तो सौगुणा दण्ड पाते हैं। अन्त में बाबा सब साक्षात्कार कराते हैं। ... बाबा को इतने ढेर बच्चे हैं, एक-एक को छिपाकार समझायेंगे क्या? बाप सब बातें मुरली में समझा देते हैं। बाप की श्रीमत से ही श्रेष्ठ बनेंगे।... आपही अपना मुँह ज्ञान के आइने में देखना है कि हम कहाँ तक लायक बनें हैं। जहाँ तक जीना है, तब तक नॉलेज लेते रहना है।'' सा.बाबा 8.05.12 रिवा.

''तुम किसको भी बोल सकते हो - हम हैं रुहानी सेवाधारी, बाप हमारे द्वारा स्वर्ग का उद्घाटन

करा रहे हैं, स्वर्ग की स्थापना करा रहे हैं। शिवबाबा है करनकरावनहार। वह करता भी है और हमसे कराता भी है। बाबा मुरली चलाता है, जो कर्म करता है, हमको भी कहते हैं कि ऐसे मुरली चलाओ। सबको मन्मनाभव महामन्त्र देते रहो। तुम बच्चों को यह पैग़ाम सबको पहुँचाना है।''

सा.बाबा 28.07.11 रिवा.

मुरली - मधुवन और मुक्ति-जीवनमुक्ति

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है परन्तु उसकी यथार्थ अनुभूति अभी संगमयुग पर ही होती है। उस अनुभूति का विधि-विधान अर्थात् राह आत्माओं को मुरली के द्वारा ही मिलती है, जिस राह पर चलकर आत्मायें मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ रीति अनुभव करती हैं। परमधाम में मुक्ति की कोई अनुभूति नहीं होती है और सतयुग में जीवनबन्ध का ज्ञान और अनुभव न होने के कारण जीवनमुक्ति का विशेष महत्व और अनुभूति नहीं होती है। वास्तविक अनुभूति अभी संगमयुग पर होती है, जब हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध का ज्ञान है और सारे कल्प पार्ट बजाने के कारण आत्मा में सुख-दुख दोनों की अनुभूति के संस्कार हैं। ये संस्कार आत्मा में अविनाशी हैं परन्तु जब कल्पान्त में आत्मा परमधाम जाती है तो उसकी अनुभूति के संस्कार पूर्णतया सुसुप्त हो जाते हैं, फिर इस कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजाने के साथ इमर्ज होते हैं। ये सब ज्ञान और अनुभूति अभी संगमयुग पर ही होती है, जब बाबा मुरली के द्वारा ये सब ज्ञान देते हैं और आत्मायें अनुभूति के लिए पुरुषार्थ करती हैं।

मुरली - मधुवन और पवित्रता

यह सृष्टि पतित और पावन, तमोप्रधानता और सतोप्रधानता का एक अनादि-अविनाशी खेल है। परमात्मा पतित-पावन है, वह आकर जो ज्ञान देता है अर्थात् जो मुरली सुनाता है, उसके आधार पर ही सर्व आत्मायें पतित से पावन, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने का पुरुषार्थ करती हैं और तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती हैं अर्थात् पतित से पावन बनती हैं और उसके आधार पर पवित्र दुनिया में प्रॉलब्ध पाती हैं। बाबा ने मुरली में यह भी बताया है कि पवित्रता हर आत्मा का मूल स्वरूप है क्योंकि आत्मा परमधाम में अपने पवित्र स्वरूप में ही रहती है। अभी यह नाटक पूरा होता है, इसलिए सब आत्माओं को वापस परमधाम जाना है, इसलिए सबको पवित्र बनना ही है। पवित्रता को सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है, इस पवित्रता की धारणा और अनुभव मुरली के आधार पर ही सम्भव है।

यद्यपि सभी आत्मायें अन्त में पावन बनकर घर परमधाम वापस जाती हैं, परन्तु जो आत्मायें बाबा की मुरली सुनकर, परमात्मा पिता के साथ योगयुक्त होकर अर्थात् अपने पुरुषार्थ से अपने को पावन अर्थात् सतोप्रधान बनाती हैं, वे सतयुग-त्रेता अर्थात् जीवनमुक्त दुनिया अर्थात् स्वर्ग में उसका फल प्राप्त करती हैं और जो ड्रामा अनुसार पावन बनती हैं, वे द्वापर-कलियुग में आकर कर्मों और पार्ट के अनुसार सुख-दुख को प्राप्त करती हैं।

''याद की यात्रा में रहने से ही तुम पावन बनेंगे। भक्ति मार्ग में तुम सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हो। ... सवेरे-सवेरे उठकर विचार सागर मन्थन करना चाहिए, फिर जो भी आये उनको समझाना चाहिए। मुरली की मुख्य प्वाइन्ट्स नोटकर फिर रिपीट करनी चाहिए, जिससे दिल में पक्का हो जाये। ... पावन दुनिया में चलना है, तो तुम्हारा बुद्धियोग पतित दुनिया में नहीं जाना चाहिए।'' सा.बाबा 31.05.11 रिवा.

''तुम अभी मुरली सुन रहे हो, ज्ञान सागर, पतित-पारवन प्राणेश्वर बाप से। ... अभी तुम जानते हो श्रीमत शिव भगवानोवाच्य है। यह भी समझ गये हो कि भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बनाने वाला एक बाप ही है। ... शिवबाबा ब्रह्मा के द्वारा अमरकथा सुनाकर अमरपुरी का मालिक बनाते हैं।'' सा.बाबा 14.02.11 रिवा.

''बाबा बिल्कुल सहज कर समझाते हैं। भल कितना भी बीमार हो, लेट कर भी सुन सकते हैं। मुरली सुनते-सुनते शिवबाबा की याद में रहते-रहते प्राण तन से निकल जायें, तो अहो सौभाग्य। ... वास्तव में यह ज्ञानामृत की बात है। ... जब तक आत्मा सतोप्रधान न बनें, तब तक शान्तिधाम में कैसे जा सकती है। यह भी जानते हो ड्रामा के प्लैन अनुसार सबको तमोप्रधान बनना ही है।'' सा.बाबा 14.02.11 रिवा.

''आपस में ज्ञान चर्चा करना, यह तो ब्राहमणों का कर्तव्य है। जिस बात में जिसकी जो लगन होती है, उसके लिए समय की कमी कभी नहीं हो सकती। तो इन दो बातों पर ध्यान रखो एक तो है-प्योरिटी, दूसरा जीयदान का महत्व।'' अ.बापदादा 28.4.74

''बाबा को ख्याल चल रहा था कि समझाने के लिए अक्षर थोड़े हों, लेकिन प्रभाव अच्छा हो। बाप है ज्ञान का सागर, वह आकर अविनाशी ज्ञान रतनों का दान देते हैं। ... हे भारतवासी रुहानी बच्चो, रावण राज्य मृत्युलोक के इस कलियुगी अन्तिम जन्म में पवित्र हो रहने से और परमपिता परमात्मा शिव के साथ बुद्धि योगबल की यात्रा से तुम तमोप्रधान आत्मायें सतोप्रधान आत्मा बन, सतोप्रधान सतयुगी विश्व पर पवित्रता, सुख-शान्ति, सम्पत्ति सम्पन्न मर्यादा पुरुषोत्तम दैवी स्वराज्य पद फिर से पा सकते हो, 5000 वर्ष पहले मिसल, होवनहार महाभारी विनाश के पहले।'' सा.बाबा 6.02.11 रिवा.

मुरली - मधुवन और विश्व-कल्याण

परमात्मा विश्व-कल्याणकारी है, उस विश्व-कल्याण के लिए आधार बच्चों को बनाता है, उसके लिए वह मुरली में ही सब डॉयरेक्शन देता है, जिन डॉयरेक्शन्स के आधार पर बच्चे विश्व-कल्याण का कर्तव्य करते हैं। इस प्रकार हम विचार करें तो विश्व-कल्याण का एकमात्र आधार मुरली है और उसका केन्द्र बिन्दु मधुबन है। परमात्मा आकर जो ज्ञान सुनाते हैं, उसके आधार पर ही आत्मायें व्यक्तिगत रूप में अपना कल्याण भी करती हैं और अन्य आत्माओं के कल्याण में सहयोगी बनती हैं, जिससे समग्र विश्व का कल्याण होता है अर्थात् विश्व का नव-निर्माण होता है। जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बनती हैं।

''सारी दुनिया तो घोर अन्धियारे में है, तुम अभी ज्ञान-सागर, पतित-पावन प्राणेश्वर बाप से मुरली सुन रहे हो। वह है सबके प्राण बचाने वाला ईश्वर अर्थात् सबको दुख से छुड़ाकर सुख देने वाला। ... आत्मा भी गुप्त है, परमात्मा भी गुप्त है। तुम जानते हो - अभी बाप आया हुआ है, हमको बेहद का वर्सा देने। उनकी तुमको मदद मिलती है।''

सा.बाबा 1.08.11 रिवा.

''यह ज्ञान धन एक बाप के सिवाए और कोई के पास है नहीं। बाप यह भी जानते हैं कि सबको एक समान धारणा हो न सके क्योंकि सब एक समान ऊंच पद तो पा नहीं सकते, इसलिए किसी-किसी की बुद्धि और तरफ भटकती रहती है। ... यज्ञ की स्थूल सर्विस की सब्जेक्ट भी है ना। परन्तु जिसको ज्ञान की धारणा होगी, वह मुख से सुनाने बिगर रहेगा नहीं।''

सा.बाबा 25.02.11 रिवा.

''बाप और बाप की मुरली और बाप द्वारा जो सर्विस मिली है, वह सर्विस करते रहना। अच्छा। अभी क्या कहें, साथ तो रहना है ना। तो छुट्टी लेते हैं - यह भी नहीं कह सकते। साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और साथ आयेंगे।'' अ.बापदादा 2.02.11

''निराकार परमपिता परमात्मा आकर हम आत्माओं को पढ़ाते हैं, निराकार बाबा हम आत्माओं से बात कर रहे हैं। ... श्रीमत पर नहीं चलेंगे, बाप को याद नहीं करेंगे तो बुद्धि का ताला बन्द हो जायेगा, फिर किसको तुम्हारा तीर नहीं लगेगा, तुमको खुशी का पारा भी नहीं चढ़ेगा। बहुत देहाभिमानी बच्चे हैं, जो मुरली भी नहीं पढ़ते हैं।'' सा.बाबा 13.09.12 रिवा.

''बहुत देहाभिमानी बच्चे हैं, जो मुरली भी नहीं पढ़ते हैं। जो मुरली नहीं पढ़ते हैं, वे किसको क्या ज्ञान देंगे। ज्ञान सागर बाप पढ़ाते हैं, अनेक प्रकार की नई-नई प्वाइन्ट्स निकलती रहती हैं। देही-अभिमानी बनने का पूरा पुरुषार्थ करना है। कोई की सर्विस छिप नहीं सकती है। कोई में कोई खामी है तो वह भी छिपती नहीं है। माया बड़ी प्रबल है, अनेक प्रकार से उल्टे काम

कराती रहती है।''

सा.बाबा 13.09.12 रिवा.

मुरली - मधुवन और धारणा

बाबा नई दुनिया का रचता है, इसके लिए वह आकर पढ़ाते हैं, जिसमें मुख्य चार विषय अर्थात् ज्ञान-योग-धारणा-सेवा के हैं, उनका सारा राज़ बाबा मुरली में समझाते हैं और उसको धारण करने के लिए श्रीमत देते हैं। ज्ञान सर्व प्रकार की धारणा का एकमात्र आधार है, इसलिए संगमयुग पर परमात्मा आकर जब ज्ञान देते हैं, तब ही आत्मा की और समग्र विश्व की चढ़ती कला होती है। सतयुग में यद्यपि आत्मायें और प्रकृति 16 कला सम्पूर्ण सतोप्रधान होती है, आत्मायें सर्व गुण सम्पन्न होती हैं तो भी आत्माओं की और प्रकृति की उतरती कला ही होती है क्योंकि वहाँ यह आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता है। अभी ही बाबा आकर यह आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, जिसका आधार मुरली है अर्थात् बाबा मुरली के रूप में महावाक्य उच्चारण करते हैं। बाबा के महावाक्य भी मुरली हैं और उन महावाक्यों की लिखत मुरली है, जो मधुवन से ही उपलब्ध होती है।

बाबा की मुरली से चेतन आत्माओं के साथ जड़-जंगम भी पवित्र बनते हैं अर्थात् मुरली का प्रभाव आत्माओं पर होता है और आत्माओं के द्वारा जो वातावरण बनता है, वह जड़-जंगम को पावन बनाता है। इस सत्य ज्ञान की धारणा करने वाले के लिए सब प्रकार की धारणायें सहज हो जाती हैं और जो मुरली के पठन-पाठन, मनन-चिन्तन, धारणा की अवहेलना करता है, अलबेला रहता है, उसके सम्पर्क में आने वाली अन्य धारणाओं में भी अवश्य ही अलबेला होगा। इस सत्य का ज्ञान न होने से ही आत्मा सतयुग में सतोप्रधान, सर्व गुणों से सम्पन्न होते भी उतरती कला में जाती है।

सर्व बातों के स्पष्टीकरण का आधार मुरली है अर्थात् सब प्रकार शिक्षा-सावधानी मुरली के द्वारा ही देते हैं। जो मुरली के ऐसे महत्व को जानकर निश्चयबुद्धि होकर मुरली पढ़ता या सुनता है, उसके सामने सब बातों का स्पष्टीकरण स्वत: होता रहता है। उसको न और कुछ पढ़ने की आवश्यकता होती है और न किससे कुछ पूछने की आवश्यकता होती है।

इन सब राज़ों के रहस्य का उद्घाटन शिवबाबा ने मुरली के द्वारा स्पष्ट किया है, इसलिए बाबा की मुरली अनन्त गुह्य रहस्यों की अखुट खान है, इससे जो जितना चाहे वह ले सकता है परन्तु हर आत्मा की लेने की क्षमता अर्थात् धारणा-शक्ति अपनी-अपनी है और वह उस सीमा तक ही ले सकती है अर्थात् उसके महत्व को अनुभव कर उसकी धारणा कर सकती है। इसलिए किसकी धारणाओं को देखकर मन में कोई आश्चर्य या प्रश्न उठ नहीं सकता।

''जब क्लास में बैठते जो अच्छे बच्चे होंगे वे और कोई ख्यालात आने नहीं देंगे, समझेंगे अभी तो हमको बाप से ही सुनना है। अभी बाप ज्ञान रतनों से झोली भरने आये हैं, तो बाप से ही बुद्धियोग लगाना है। नम्बरवार धारणा करने वाले तो जरूर होंगे। ... जिसको अच्छी धारणा होगी, उसको सर्विस का शौक भी जरूर होगा, सर्विस के लिए उछलता रहेगा। सोचेंगे जाकर किसको दान करूँ।''

सा.बाबा 27.11.11 रिवा.

''अभी बच्चों की बुद्धि में है कि ज्ञान सागर की हमारे ऊपर ज्ञान वर्षा हो रही है। जो ब्राह्मण बनते हैं, उन पर ही मैं ज्ञान की वर्षा करता हूँ। ... बाप घड़ी-घड़ी सम्मुख होने का नशा चढ़ाते हैं, माया फिर नशा उतार देती है। किसका पूरा उतार देती है, किसका कम। बच्चे जानते हैं हम ज्ञान सागर के पास रिफ्रेश होने अर्थात् मुरली की प्वाइन्ट्स धारण कर बाप का डॉयरेक्शन लेने बाप के सामने आये हैं।''

सा.बाबा 18.06.12 रिवा.

''सात रोज़ की भट्ठी भी मशहूर है। सात रोज़ अच्छी रीति समझकर बुद्धि में धारण कर फिर कहाँ भी चले जाओ, मुरली मिलती रहेगी। मुरली पढ़ते रहो, बाप को याद करते रहो। तुमको सात रोज़ में स्वदर्शन चक्रधारी बनना है, फिर कहाँ भी जाओ, पढ़ाई पढ़ते रहो।''

सा.बाबा 16.06.12 रिवा.

''शिवबाबा भी बहुत मदद करते हैं। कब-कब किसको उठाने के लिए किसमें प्रवेश होकर दृष्टि देते हैं, मुरली भी चलाते हैं। कब अहंकार नहीं आना चाहिए कि हमने ऐसी अच्छी मुरली चलाई। यह अहंकार अवस्था को गिरा देता है। ... इसमें तो पूरा आत्माभिमानी बनना होता है, कब देह में दृष्टि नहीं जानी चाहिए। माया बहुत धोखा देती है।''

सा.बाबा 21.04.12 रिवा.

''जो मुरली नहीं पढ़ते-सुनते, उनकी क्या गति होगी! अच्छे-अच्छे बच्चे भी मुरली नहीं पढ़ते, अपना ही नशा चढ़ जाता है। नहीं तो एक दिन भी मुरली मिस नहीं करनी चाहिए। ज्ञान की धारणा नहीं होती तो समझना चाहिए कि देहाभिमान है।''

सा.बाबा 16.01.12 रिवा.

''पाण्डवों का किला प्रसिद्ध है। किले को मजबूत बनाना पाण्डवों का ही कर्तव्य है। अगर स्वयं मज़बूत होंगे तो किला भी मज़बूत होगा। ... एक घड़ी का रोब भी रुहानियत को गँवा देता है। इसलिए इससे फौरन ही किनारा करना चाहिए।... स्नेह की उत्पत्ति तब होगी, जब अपने को आत्मा समझेंगे और भाई-भाई की दृष्टि होगी।... इसलिए आत्मा देखने की प्रैक्टिस कराई जाती है।''

अ.बापदादा 20.2.74

''यह पढ़ाई बहुत सहज है। अगर कोई बैठ नहीं सकता है तो बाबा कहते हैं सोकर भी मुरली सुनो। यह है धारणा की बात। अन्दर में बाबा और चक्र को याद करते रहो। याद करते-

करते ही शरीर छोड़ना है। ... सबको बाबा की याद दिलानी है और चक्र का राज़ समझाना है। अभी कलियुग का विनाश हो सतयुग जरूर आना है, इसलिए यह महाभारी महाभारत सामने लड़ाई खड़ी है।'' सा.बाबा 18.11.11 रिवा.

''छोटे बच्चों को यहाँ नहीं लाना है, वे सुनेंगे नहीं। तुम यहाँ आये हो ज्ञान और योग सीखने। बाप बैठ ज्ञान सुनाते हैं तो कोई आवाज़ आदि नहीं होना चाहिए, नहीं तो अटेन्शन जाता है। बाप जो सुनाते हैं, वह शान्ति से बहुत अटेन्शन देकर सुनना है। ... बाप को याद कर खाना बनायेंगे, काम करेंगे तो तुम्हारा भी कल्याण होगा और याद में रहने से चीज़ भी अच्छी बनेंगी।'' सा.बाबा 15.07.11 रिवा.

''सिवाए एक बाप के कोई भी साकारी मनुष्य वा आकारी देवता से बुद्धि नहीं लगानी है। पतित-पावन एक बाप ही है। ... बाप जो समझाते हैं, वे सब प्वाइन्ट्स बच्चों को अच्छी रीति बुद्धि में धारण करनी है, पढ़ाई रेग्युलर पढ़नी है। ... यह महाभारत लड़ाई सामने खड़ी है। इन आँखों से जो कुछ भी देखते हो, यह सब रहेगा नहीं।'' सा.बाबा 21.6.11 रिवा.

''सतयुग-त्रेता है ईश्वरी राज्य अर्थात् ईश्वर बाप का स्थापन किया हुआ राज्य। अभी है रावण राज्य। शिवबाबा की पूजा होती है, जिसने स्वर्ग स्थापन किया। फिर रावण, जिसने नर्क बनाया, उसको जलाते रहते हैं। द्वापर से रावण राज्य अर्थात् नर्क शुरू हुआ, यह भी किसको पता नहीं है। ... ये सब बातें समझेंगे वे ही, जो रोज़ पढ़ेंगे। ... सतयुग-त्रेता पास्ट हो गया, फिर द्वापर-कलियुग भी पास्ट हुआ, अभी यह है संगमयुग। अभी तुमको नई दुनिया में जाने के लिए पढ़ना है।'' सा.बाबा 22.04.11 रिवा.

''बाप ज्ञान रतनों से झोली भरने आये हैं, तो बाप से ही बुद्धि का योग लगाना है। नम्बरवार धारणा करने वाले तो होते ही हैं। कोई सुनकर अच्छी रीति धारण करते हैं, कोई कम धारण करते हैं। बुद्धियोग और तरफ दौड़ता रहेगा तो धारणा नहीं होगी। ... जिनको धारणा होगी, उनको फिर सर्विस का शौक जरूर होगा। वह उछलता रहेगा कि जाकर धन दान करूँ।''
सा.बाबा 25.02.11 रिवा.

''यह बड़ी भारी पढ़ाई है। बाप भी जानते हैं और तुम स्टूडेण्ट्स भी जानते हो कि अभी जितना पास होंगे, उतने कल्प-कल्पान्तर पास होंगे। ... कई अच्छे-अच्छे स्टूडेण्ट हैं, जो मुरली रोज़ नहीं पढ़ते, उनको भूल जाता है कि हम गॉड फादरली स्टूडेण्ट हैं। इसीलिए गाया जाता है - गज को ग्राह ने खाया। यह यहाँ की बात है।'' सा.बाबा 8.09.12 रिवा.

''रोज़ मुरली सुनने वालों को ही पूरी धारणा होगी। मुख्य है ही नॉलेज। मुरली तुमको कहाँ भी मिल सकती है। मिलीटरी में भी मुरली पढ़ने से मना नहीं हो सकती। मिलीटरी में ऐसे थोड़ेही

कहेंगे कि तुम बाइबल वा ग्रन्थ आदि नहीं पढ़ो। सब पढ़ते हैं। ... पहले तो निश्चय बैठे कि हमको पढ़ाने वाला नॉलेजफुल गॉड फादर है, तब और सब बातों को समझ सकेंगे।''

सा.बाबा 6.09.12 रिवा.

मुरली - मधुवन और विचार सागर मन्थन

बाबा जो ज्ञान देते हैं, उसकी धारणा का एकमात्र आधार विचार सागर मन्थन ही है। जो जितना मुरली से मिले रतनों पर विचार सागर मन्थन करता है, उसको उतनी ही धारणा होती है और जिसको जितनी धारणा होती है, उसको उतना ही खुशी का पारा चढ़ता है और जो जितना स्वयं खुशी और नशे में रहता है, वह उतनी ही सेवा कर सकता है अर्थात् उसको उतनी ही सेवा में सफलता मिलती है।

''यहाँ सम्मुख सुनने और मुरली पढ़ने में रात-दिन का फर्क है। सम्मुख सुनने से अच्छा नशा चढ़ता है। तुम्हारी कितनी विशाल बुद्धि होनी चाहिए। ... बाप जो ज्ञान सुनाते हैं, उस पर विचार-सागर मन्थन करो, फिर किसको भी प्यार से सुनाओ। शिवबाबा तो विचार-सागर मन्थन नहीं करते हैं, यह (ब्रह्मा बाबा) करते हैं बच्चों के लिए। याद एक शिवबाबा को ही करना है।''

सा.बाबा 16.03.12 रिवा.

''यहाँ तुम अच्छी रीति रिफ्रेश होकर जाते हो। सारा दिन बुद्धि में यह सृष्टि का चक्र फिरता रहे और अपना घर याद रहे। यहाँ से लौकिक घर में जाते हो तो अवस्था में फर्क पड़ जाता है। यहाँ बैठे भी कोई-कोई का बुद्धियोग बाहर चला जाता है, इसलिए पूरी धारणा नहीं होती है। ... तुम जानते हो - हम बाबा से श्रीमत ले अपना राज्य-भाग्य ले रहे हैं तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 18.06.12 रिवा.

''तीसरी बात - कम्पलेन्ट्स की क्यू है। मुख्य कम्पलेन्ट है व्यर्थ संकल्प और दूसरी मुख्य कम्पलेन्ट है दृष्टि-वृत्ति चंचल होती है। ये दोनों कम्पलेन्ट्स तब तक हैं, जब तक रोज़ की मुरली द्वारा जो डॉयरेक्शन्स मिलते रहते हैं, उन डॉयरेक्शन्स को अर्थात् मुरली को ध्यान से सुनकर और धारण नहीं करते हैं। व्यर्थ संकल्प चलने का मूल कारण है कि जो ज्ञान का खज़ाना हर रोज़ बाप से मिलता है, उस खज़ाने की कमी। अगर सारा समय ज्ञान-रत्नों से खेलने व ज्ञान खज़ाने को देखने, सुमिरण करने में, विश्व-कल्याण के कर्तवय में बुद्धि बिज़ी रखो क्या व्यर्थ संकल्प आ सकते हैं।''

अ.बापदादा 11.7.74

''पाण्डवों के मुख से चलते-फिरते मुरली की ही रूह-रिहान व चर्चा कम सुनाई पड़ती है, गोपियों के मुख से मुरली की चर्चा अधिक सुनने में आती है। क्यों ? आपस में ज्ञान की चर्चा

करना, यह तो ब्राह्मणों का कर्तव्य है। जिस बात की लगन होती है, उसके लिए समय की कमी कभी नहीं हो सकती है। तो इन दो बातें पर ध्यान रखो - एक तो है प्योरिटी और दूसरा जीयदान का महत्व।''

अ.बापदादा 28.4.74

''भारतवासी ही पहले स्वर्ग में थे, फिर पुनर्जन्म लेते-लेते सतो, रजो, तमों में कैसे आते आते हैं, वह भी बाप ही समझाते हैं। ये सब बातें धारण करनी होती हैं, तब ही विचार-सागर मन्थन होगा। धारणा ही नहीं होगी तो विचार सागर मन्थन हो न सके। मुरली तो कहाँ भी मिल सकती है। विशाल बुद्धि जो होंगे वे हर प्वाइन्ट को अच्छी रीति समझेंगे।''

सा.बाबा 28.12.11 रिवा.

''बच्चों को पहले तो मुरली अच्छी रीति पढ़नी और धारण करनी पड़े। तब फिर जाकर मुरली चलायें। ... भल मुरली हाथ में न लें, तो भी अच्छी मुरली चला सकते हैं। जिन-जिन बच्चों को मुरली पढ़ने और उस पर चिन्तन करने का शौक है, वे सर्विस जरूर करते रहेंगे। मुरली पढ़ने से जाग जाते हैं। ... कोई की बुद्धि में यह ज्ञान बैठ जायेगा तो उठते-बैठते 84 का चक्र बुद्धि में फिरता रहेगा।''

सा.बाबा 10.12.11 रिवा.

''तुम्हारा धन्धा ही यह है। यह है ऊंचे ते ऊंचा धन्धा। बाबा को व्यापारी भी कहा जाता है। यह अविनाशी ज्ञान रतनों का व्यापार कोई विरला ही करे। सारा दिन यह ज्ञान बुद्धि में फिरता रहना चाहिए और बहुत खुशी में मस्त रहना चाहिए। यह है अन्दर की खुशी। ... ओहो, हमको बेहद का बाबा मिल गया, उसने हमको 84 जन्मों की कहानी सुनाई है।''

सा.बाबा 10.12.11 रिवा.

''तुम बच्चों को सदा बाप की याद रहनी चाहिए, जिससे खुशी का पारा चढ़ा रहेगा। तुम बच्चों को वाणी का मन्थन करना चाहिए। वाणी का प्रवाह कभी-कभी बहुत अच्छा रहता है, कभी कम भी होता है। ... बच्चे बाप की अवस्था को भी देख रहे हैं और बाबा अपना अनुभव भी सुनाते हैं। कब बहुत उछल का प्रवाह रहता है, प्वाइन्ट् बहुत अच्छी-अच्छी निकलती हैं, कभी कम रहता है।''

सा.बाबा 9.11.11 रिवा.

''एक कम्पलेन्ट है - व्यर्थ संकल्प बहुत आते हैं। ... दूसरी मुख्य कम्पलेन्ट है - वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। यह दोनों कम्पलेन्ट्स तब तक हैं, जब तक रोज की मुरली द्वारा जो डायरेक्शन्स मिलते रहते हैं उन डायरेक्शन्स को अर्थात् मुरली को ध्यान से सुनकर और धारण नहीं करते हैं।....अगर सारा समय ज्ञान-रत्नों से खेलने में व ज्ञान खजाने को देखने में, सुमिरण करने में बुद्धि को बिजी रखो, तो क्या व्यर्थ संकल्प आ सकते हैं?''

अ.बापदादा 11.7.74

मुरली - मधुवन और प्यार अर्थात् परमात्मा का प्यार और परमात्मा से प्यार

प्यार दो प्रकार का होता है या कहें कि दो प्रकार से होता है। एक हम किसको प्यार करते हैं और दूसरा कोई हमको प्यार करता है। ऐसे ही हम परमात्मा को प्यार करते हैं और परमात्मा भी हमको प्यार करते हैं। मुरली के आधार से दोनों का एक-दूसरे के साथ प्यार जुटता है अर्थात् हमको परमात्मा का प्यार अनुभव होता है, जिस प्यार के आधार पर हमारा परमात्मा पिता के साथ प्यार जुटता है। परमात्मा हमको कितना प्यार करता है, हमारे लिए कितनी मेहनत करता है, वह भी मुरली से अनुभव होता है और जब हम परमात्मा का प्यार का प्यार अनुभव करते हैं तो हमारा परमात्मा के प्रति प्यार जाग्रत होता है और हम जितना मुरली की गहराई में जाते हैं, उसका मनन-चिन्तन करते हैं, धारणा करते हैं, उतना हमारा परमात्मा के साथ प्यार और गहरा होता जाता है।

वैसे तो भक्ति में भी परमात्मा के प्रति हमारा प्यार होता है परन्तु उसको यथार्थ रीति न जानने के कारण उसके प्यार का इतना अनुभव नहीं होता है, जितना अभी होता है। इस सबका आधार मुरली है, इसलिए जितना हम मुरली को प्यार से लगन से अध्ययन करेंगे, उतना परमात्मा का प्यार हमको अनुभव होगा और हमारा प्यार परमात्मा के प्रति जुटेगा, उनकी याद बुद्धि में ठहरेगी। परमात्मा की याद से हमारी आत्मिक शक्ति बढ़ेगी, हमारे कर्मों में श्रेष्ठता आयेगी और यह संगमयुगी जीवन परम-सुखमय अनुभव होगा। बाबा ने भी कहा है - जो हमको याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ। यह भी कहा है - जिनका मुरली से प्यार है, उनका ही मुरलीधर से प्यार है और मुरलीधर अर्थात् परमात्मा से प्यार की निशानी है, उनकी मुरली से प्यार।

परमात्म-प्यार का साकार में अनुभव करने का एकमात्र स्थान मधुवन ही है, जब एक बार उसका अनुभव हो जाता है, फिर कहाँ भी रहते उसको याद करते हैं तो उसके प्यार का अनुभव होता है। मधुवन में आने से परमात्मा की साकार में जो दृष्टि मिलती है, वह आत्माओं में परमात्म-प्यार की विशेष अनुभूति कराती है। इसलिए भक्ति में साकार और निराकार दोनों के प्यार का गायन है। परमात्म-प्यार के वायब्रेशन्स ही आत्माओं को मधुवन की ओर आकर्षित करते हैं।

हमारे प्यार के वृत्ति और वायब्रेशन्स जब वातावरण में प्रसारित होते हैं, तो अन्य आत्माओं को भी परमात्म-प्यार का अनुभव होता है। बाबा ने यह भी कहा है - परमात्मा से प्यार अर्थात् परमात्मा के परिवार अर्थात् आत्माओं से प्यार। जितना हमारा परमात्मा से प्यार होगा, उतना ही उसके कर्तव्य से भी प्यार होगा अर्थात् आत्माओं से भी प्यार होगा, जिससे

आत्माओं के कल्याणार्थ हमारा पुरुषार्थ होगा।

''बाबा बच्चों को कुछ भी बोलेगा, वह समझाने के लिए बोलेगा, फिर फौरन प्यार भी करेगा। बाबा की दिल पर बच्चों का कुछ भी रहता नहीं है। यह तो सिर्फ शिक्षा देने के लिए समझाते हैं। यहाँ बच्चों को रोज़ टोली खिलाई जाती है क्योंकि बेहद का बाप है ना। ... बाहर सेन्टरों पर रोज़ टोली नहीं मिलती है। यहाँ तो बाप सम्मुख बैठा है, सब कुछ बच्चों को समझाते रहते हैं।''

सा.बाबा 14.11.11 रिवा.

''कल्प में एक ही बार ऐसा होता है, जब हम बाप से नज़र मिलाते हैं तो बाप हमको 21 जन्मों के लिए वर्सा दे देते हैं। यह तुम बच्चों को याद रहना चाहिए। ... बाबा को देखने से खुशी का पारा चढ़ता है और बाप नई-नई प्वाइन्ट्स समझाते हैं, जिससे बाप से बच्चों का पूरा लव हो जाये। ... यहाँ बाप के सम्मुख होने से हर्षित होते हो, दूर होने से इतना हर्षितपना नहीं रहता है।''

सा.बाबा 8.06.12 रिवा.

''विवेक कहता है बाहर में बहुत बातें सुनते हैं तो बुद्धि और-और तरफ चली जाती है। यहाँ मधुवन में बच्चे बाप से सम्मुख सुनते हैं तो ज्यादा नशा चढ़ता है। बाबा प्यार से कशिश करते हैं। ... बच्चे स्वर्ग के मालिक थे, फिर ड्रामा अनुसार सबकुछ गँवा दिया, अभी फिर बाप से राज्य-भाग्य का वर्सा ले रहे हो। राज्य पाना और गँवाना, यह तो बड़ी बात नहीं है। तुम ही इस बात को जानते हो।''

सा.बाबा 8.06.12 रिवा.

''दिन-प्रतिदिन गुह्य से गुह्य प्वाइन्ट्स निकलती रहती है। ये सब प्वाइन्ट्स तुम्हारी बुद्धि में रहनी चाहिए। ... अभी बाप आये हैं स्वर्ग का मालिक बनाने, तो अपने को घाटा नहीं डालना चाहिए। व्यापारी लोग अपना खाता हमेशा ठीक रखते हैं। यह भी बेहद का खाता है। ... यह अविनाशी ज्ञान रतनों का व्यापार है। बाप ज्ञान का सागर, सौदागर, रत्नागर है।''

सा.बाबा 10.02.11 रिवा.

''गीत में कहते हैं - तू प्यार का सागर है, जब एक बूँद प्यार की पिलाते हैं तो हम यहाँ से पावन दुनिया में चले जाते हैं। परन्तु प्यार पिलाया नहीं जाता है, प्यार किया जाता है। ज्ञानामृत पिलाते हैं। बाबा ज्ञान का सागर भी है। ... ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ठहरा, उनसे तुम ज्ञान गंगायें निकलती हो। भल उनकी महिमा है कि वह प्रेम का सागर, सुख का सागर है परन्तु जब तुम ज्ञान की बूँद पिलाते हो तब वे भी स्वर्ग में चले जाते हैं।''

सा.बाबा 7.07.12 रिवा.

''बापदादा के दिल की आश को तो सभी जानते ही हो - समान और सम्पूर्ण, तो ये दो शब्द सदा चेक करो और देखो बाप की यह आश पूरी की ? क्योंकि बापदादा हर बच्चे को बाप के

आशाओं का सितारा समझते हैं। बाप का हर बच्चे से प्यार है। सबको मधुवन में लाने वाला क्या है ? बाप का प्यार। ... लेकिन ये दो शब्द जो बाप कहते हैं समान और सम्पूर्ण, इनको भी सम्पन्न करना ही है।''

अ.बापदादा 15.12.11

''बापदादा डबल विदेशियों को तीव्र पुरुषार्थ की मुबारक दे रहे हैं। सबका मुरली के ऊपर भी अटेन्शन है। यह मुरली के प्रति स्नेह बापदादा को अच्छा लगता है। मधुबन से भी प्यार है, मुरली से भी प्यार है, परिवार से भी प्यार है और मेरा बाबा से भी प्यार है। ... बापदादा ने देखा कि जनक बच्ची का भी बहुत ध्यान है। ... पालना अच्छी मिल रही है, यह भी आपका लक है।''

अ.बापदादा 15.12.11

''देखो घर बैठे भी बापदादा की यादप्यार मिलती है। एक दिन भी मिस नहीं होती, अगर रोज़ विधिपूर्वक मुरली पड़ते हैं तो। ... यह है बापदादा के प्यार की निशानी। मुरली मिस की तो यादप्यार भी मिस। सिर्फ मुरली नहीं मिस की लेकिन बापदादा का यादप्यार, वरदान सब मिस हुआ ना। ... नये या पुराने यह पक्का नोट करो कि मुरली कब मिस नहीं करनी है।''

अ.बापदादा 2.02.11

''जब बाप का प्यार मुरली से है तो जो मेरा बाबा कहता है, उसका पहला प्यार बाप के साथ बाप की मुरली से होना चाहिए। ... मुरली क्लास में पढ़ना या क्लास में सुनना, अगर मजबूरी है, बहाना नहीं, तो किससे सुनो। जो समझते हैं - मुरली का इतना महत्व रखूँगा, वे हाथ उठाओ। ... बाप बीच-बीच में पेपर भी लेगा।''

अ.बापदादा 18.1.11

''बेहद का बाप हमको वर्सा देते हैं, तो परमपिता परमात्मा से आत्माओं का कितना लव होना चाहिए। और सबसे लव हटाये एक बाप से ही लव जुटाना है।... बच्चे टेप से भी बाबा की मुरली सुनते हैं। बच्चे जानते हैं - टेप से हम अक्षर बाई अक्षर सुनें।... जिनको मुरली का शौक होगा, पैसे वाले होंगे, उदारचित्त होंगे, वे मुरली से अपना भी कल्याण करेंगे और औरों का भी कल्याण करेंगे।''

सा.बाबा 23.07.12 रिवा.

मुरली - मधुवन और सम्पूर्णता-सम्पन्नता-सन्तुष्टता-प्रसन्नता

मुरली अनन्त ज्ञान रत्नों की खान है, सम्पूर्णता के लिए बाबा ने जो भी महावाक्य उच्चारण किये हैं, वे सब धारण करना आवश्यक है। ब्रह्मा बाबा ने सब महावाक्य सुने और धारण किये तो ही उन्होंने सम्पूर्णता को पाया है। अब प्रश्न उठता कि जो बाद में आये, वे कैसे सब महावाक्यों को सुन या पढ़ सकते हैं। उसके लिए बाबा ने कहा है, जो जहाँ से आया, वहाँ से उसकी लाइन क्लियर रही तो उसको उसके मार्क्स मिलेंगे, उसको बाबा की अतिरिक्त मदद

मिलेगी। इसलिए जो जब से आता है, तब से उसने मुरली पर पूरा ध्यान दिया और सब मुरलियों को अच्छी रीति पढ़कर पुरुषार्थ किया तो वह अपनी स्थिति अनुसार सम्पूर्णता को पा लेगा। इस विश्व-नाटक का विधि-विधान है कि जो आत्मा जिस समय से ज्ञान में आती है, उस समय से यथार्थ रीति किया गया पुरुषार्थ ही उसकी सम्पूर्णता के लिए पर्याप्त है। जो आत्मा मुरली से ज्ञान रतनों को धारण करता है, वह अपने जीवन में भरपूता अर्थात् सम्पूर्णता को अनुभव करता और भरपूर आत्मा ही सम्पन्नता का अनुभव करेगी और सम्पन्न आत्मा ही सन्तुष्ट रह सकती है। सन्तुष्ट आत्मा प्रसन्नता का अनुभव अवश्य करेगी। सम्पूर्णता और प्रसन्नता हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है, उसका आधार मधुवन और मुरली है।

''मुरली रोज़ाना सुननी-पढ़नी है। एक दिन भी मिस करने से बड़ा घाटा पड़ जाता है क्योंकि बड़ी गुह्य प्वाइन्ट्स निकलती है। एक-एक रतन बड़ा गुह्य है। कोई फर्स्टक्लास रतन निकला और मिस कर दिया तो घाटा पड़ जायेगा। ... अच्छी रीति पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो ऊंच पद नहीं पा सकेंगे। यह तो बहुत ऊंच पढ़ाई है। यह ब्रह्मा शिवबाबा का मुख है।''

सा.बाबा 24.04.12 रिवा.

''मैं तो एक ही पढ़ाई पढ़ाता हूँ। इस स्कूल में जो आते जाते हैं, उनको एड करता जाता हूँ। हाँ जो लेट आते हैं, उनको थोड़ी मेहनत जास्ती करनी पड़ती है, उसके बदले फिर देरी से आने वालों को और ही अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स मिलती है, जिससे उनको कोई घाटा नहीं होता है। नई-नई प्वाइन्ट मिलने से पुरानो से भी तीखे चले जाते हैं।''

सा.बाबा 24.10.11 रिवा.

''यह मधुवन हेड ऑफिस है। यहाँ तुमको जितना नशा रहता है, उतना बाहर जाने पर नहीं रहेगा। यहाँ तुम हॉस्टेल में बैठे हो, बाहर जाने से संगदोष में खराब हो जाते हैं। इस स्टूडेण्ट लाइफ का नशा गुम हो जाता है। ... यहाँ और बाहर में रात-दिन का फर्क है। कोई तो सारे दिन शिवबाबा को याद नहीं करते हैं, शिवबाबा के मददगार नहीं बनते हैं।''

सा.बाबा 22.09.11 रिवा.

''ये अविनाशी ज्ञान रतन हैं, इनका जितना दान करेंगे, उतना बढ़ेंगे। जितना औरों को दान देंगे, उतना ही खुशी होगी। ... बाप कितना अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स सुनाते हैं, सुनने और समझने वालों का ऑटोमेटिक काँध हिलेगा। यहाँ बच्चे बाप के सम्मुख आते हैं, सम्मुख सुनने से रिफ्रेश होते हैं। बाप बड़ी युक्ति से सब प्वाइन्ट् सुनाते हैं।''

सा.बाबा 12.09.11 रिवा.

''बाप से सम्मुख मुरली सुनने में बड़ा मज़ा आता है, पढ़ने में इतना मज़ा नहीं आता है। यहाँ

तुम सब सम्मुख बैठे सुन रहे हो ना! ... बाप कहते हैं मैं तुम सब बच्चों को वर्सा देने आया हूँ, फिर जो जितना पुरुषार्थ करेंगे, उतना पद पायेंगे। बाप के पास कोई फर्क नहीं है। बाप जानते हैं मैं आत्माओं को पढ़ाता हूँ।'' सा.बाबा 12.08.11 रिवा.

''स्कूल में कोई सब सब्जेक्ट्स में 100 मार्क्स नहीं लेते हैं। हाँ, कोई सब्जेक्ट में ले सकते हैं। इसमें भी मार्क्स हैं। दैवी गुणों को धारण करने की बहुत बड़ी सब्जेक्ट है। सारे चक्र का राज़ भी समझना और समझाना है। कोई में गुण कम हैं परन्तु मुरली अच्छी चलाते हैं। ... बाप तो परफेक्ट है, उन जैसा परफेक्ट कोई हो नहीं सकता है। वह तो जन्म-मरण में आता ही नहीं है।'' सा.बाबा 3.08.12 रिवा.

''बाबा रोज़ नई-नई प्वाइन्ट्स सुनाते रहते हैं, जो रोज़ सुननी चाहिए। सुनेंगे नहीं तो माला में आ नहीं सकेंगे। माला में सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार आने हैं। ... अभी तक गोल्डन एज में कोई पहुँचा नहीं है। उसमें अजुन टाइम पड़ा है। श्रीमत पर चल पूरा पुरुषार्थ करना है। ... तुम बच्चों को दुनियावी बातें बिल्कुल नहीं करनी है।'' सा.बाबा 6.08.12 रिवा.

''चक्र कैसे फिरता है, यह अच्छी रीति समझना है। सारा पुरुषार्थ का खेल है। कोई तो रात-दिन मेहनत करते हैं। इस पतित दुनिया और पतित शरीर में ही तुमको सतोप्रधान बनना है। पावन बनने में टाइम लगता है। जब तक यह पुरानी दुनिया है, तब तक पढ़ाई है, तब तक पढ़ना है। ... इस देह और दुनिया से बिल्कुल ममत्व मिटा देना है। राजा-रानी बनने में मेहनत है।'' सा.बाबा 6.08.12 रिवा.

मुरली - मधुवन और पुरुषार्थ

मुरली में मुरलीधर बाबा जो सुनाते हैं, उसको धारण करने के लिए उसको पढ़ना, उस पर मनन-चिन्तन करना अति आवश्यक है। बाबा प्रतिदिन नई-नई प्वाइन्ट्स सुनाते हैं, इसलिए जो रोज़ मुरली पढ़ते हैं, वे ही उन रतनों को धारण करते हैं, उनका आनन्द अनुभव करते हैं और अन्य आत्माओं की सेवा कर, उनको भी मुरली का सुख अनुभव कराते हैं।

''समय और संकल्प को सफल करना ही है, व्यर्थ नहीं जाये। सुनाया ना कि एक-एक संकल्प का 21 जन्म का कनेक्शन है। बापदादा यही चाहते है कि मन को सदा बिज़ी रखो। चाहे मुरली के मनन में, चाहे सेवा, हर समय बिज़ी रहो। ... बीच-बीच में अशरीरी बनने की ड्रिल करते रहो। अपने तीन स्वरूपों की स्मृति की ड्रिल। तीन स्वरूप ब्राह्मण, फरिश्ता और देवता। इस ड्रिल में मन को बिज़ी रखो।'' अ.बापदादा 3.04.12

''तुम स्टूडेण्ट्स हो, ऊंच ते ऊंच नॉलेजफुल बाप तुमको पढ़ा रहे हैं, तो तुमको प्वाइन्ट्स नोट

जरूर करनी चाहिए। ... माया ज्ञान की प्वाइन्ट भी भुलाने की कोशिश करेगी। कभी-कभी बहुत अच्छी प्वाइन्ट्स याद आयेंगी, फिर वहाँ की वहाँ ही गुम हो जायेंगी क्योंकि यह नया ज्ञान है। ... बाप जो ज्ञान सुनाते हैं, यह कोई गीता में लिखा हुआ नहीं है क्योंकि शास्त्र तो पीछे बनते हैं।''
सा.बाबा 14.04.12 रिवा.

''हर सेन्टर निर्विघ्न, व्यर्थ संकल्प रहित हो सकता है? स्वयं भी निर्विघ्न हो और साथी भी निर्विघ्न हों। वह भी टाइम आना ही है। ... बापदादा ने देखा कि मुरली से प्यार मैजारिटी का है लेकिन जैसे जगदम्बा ने प्रत्यक्ष जीवन में दिखाया कि जो बाप ने कहा, वह करना ही है। लक्ष्य रखा और पुरुषार्थ के तरफ अटेन्शन भी दिया।''
अ.बापदादा 2.02.12

''बापदादा जानता है कि डबल विदेशियों का मुरली से प्यार है, परिवार से भी प्यार है। ... अभी तीव्र पुरुषार्थी बनने का एग्जॉम्पुल बनो, जो बापदादा आपका दृष्टान्त देकर औरों को भी उमंग-उल्लास में लाये। बापदादा जानता है कि उम्मीदवार हो, जो संकल्प करो, वह कर सकते हो।''
अ.बापदादा 19.2.12

''जो मुरली सुनकर फिर सुनाते भी हैं, बहुत सर्विस करते हैं, वे अच्छा ऊंच पद पा सकते हैं। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। ... यह बेहद का ड्रामा है। अपने को अभी बेहद की बुद्धि मिली है। इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने में बड़ा मज़ा है। ... जो अच्छे-अच्छे बच्चे हैं, उनको नशा चढ़ा हुआ है कि हमने यह पार्ट तो अनेक बार बजाया है। अभी फिर नये सिर आकर पार्ट बजायेंगे।''
सा.बाबा 3.01.12 रिवा.

मुरली और मधुबन का महत्व

''मुरली है लाठी, इस लाठी के आधार से कोई कमी भी होगी तो वह भर जायेगी। यह आधार ही अपने घर तक और अपने राज्य तक पहुँचायेगा, लेकिन लक्ष्य से, नियमपूर्वक नहीं, लेकिन लगन से। तो लगन से मुरली पढ़ना व सुनना अर्थात् मुरलीधर की लगन में रहना। मुरलीधर से स्नेह की निशानी मुरली है। जितना मुरली से स्नेह है, उतना ही समझो मुरलीधर से भी स्नेह है। सच्चे ब्राह्मण की परख मुरली से होगी। मुरली से लगन अर्थात् सच्चा ब्राह्मण, मुरली से लगन कम अर्थात् हॉफ-कास्ट ब्राह्मण।''
अ.बापदादा 23.10.75

आत्माओं के कल्याण और विश्व नव-निर्माण का आधार मुरली और मधुवन ही है, जो आत्मायें इस महत्व को समझती हैं, वे ही उसका लाभ उठाकर महान बनती हैं। बाबा ने मुरली में इस विश्व-नाटक के अनेक गुह्य रहस्यों का ज्ञान दिया है, आत्माओं को तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों का ज्ञान दिया है और अनुभव कराया है, बाबा ने तीनों कालों और

तीनों लोकों में हम आत्माओं की क्या गौरवपूर्ण स्थिति होती है, उसका भी मुरली में ज्ञान दिया है। बाबा ने आत्माओं को अपना जीवन श्रेष्ठ बनाने के लिए श्रीमत भी मुरली के द्वारा ही दी है और अनेक प्रकार की दिव्य अनुभूतियाँ कराई हैं।

मधुवन में आकर मुरली के आधार से ही परमात्मा आत्माओं को पावन बनाकर, नये विश्व की रचना का दिव्य कर्तव्य करते हैं। यह मधुवन विश्व के नव-निर्माण के कार्य का केन्द्र-बिन्दु है, जिसके आसपास विश्व नव-निर्माण का सारा कार्य चलता है।

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह जब साकार में आकर ज्ञान देता है, तब ही उसका ज्ञान-सागर स्वरूप प्रत्यक्ष होता है और उसमें क्या ज्ञान है, उसका पता पड़ता है, उस ज्ञान का स्रोत मुरली और मधुवन ही है।

मुरली के आधार से ही आत्मायें अपने को, परमात्मा को और इस विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त को समझते हैं और समझकर परमात्मा को याद करते हैं, जिस याद के वायब्रेशन्स से जड़-जंगम-चेतन सब पावन बनते हैं। अन्य योनि की आत्मायें भी उन वृत्ति और वायब्रेशन्स से पावन बनते हैं।

मुरली से इस विश्व-नाटक के गुह्य रहस्यों का स्पष्टीकरण होता है, उन गुह्य रहस्यों का अनुभव करने से स्वयं का और सर्व आत्माओं का कल्याण होता है अर्थात् सबको मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है।

कृष्ण की मुरली के लिए गायन है कि मुरली की तान सुनकर दसों दिशायें शान्त हो जाती थी, पंक्षी कलरव कर उठते थे, वृक्ष झूमने लगते थे, गोप-गोपियाँ देह-दुनिया की सुध-बुध भूलकर अतीन्द्रिय सुख में नाचने लगते थे। अभी हमको इस सत्य का पता चला है कि वह मुरली श्रीकृष्ण की काठ की मुरली नहीं, ज्ञान सागर परमात्मा की ये ज्ञान मुरली की बात है, जिससे जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकृतियाँ पावन बनती हैं और विश्व का नव-निर्माण होता है। मुरली और मधुवन का यथार्थ रीति महत्व ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण ही समझते हैं और उनका कर्तव्य है सबको उसके महत्व का अनुभव कराना। ब्राह्मणों के लिए मुरली जीयदान है अर्थात् मुरली पर ब्राह्मणों के जीवन का आधार है।

मुरली अमृत है, संजीवनी बूटी है, जिससे मूर्छित हुई आत्मायें सुरजीत होती हैं, कब-दाखिल आत्मायें जाग उठती हैं। इसलिए जिन धर्मों में मरने के बाद कब्रदाखिल करने का विधि-विधान है, उनकी मान्यता है कि क़यामत के समय परमात्मा आकर कब्र-दाखिल आत्माओं को जगाता है। इस सत्य का ज्ञान भी अभी हुआ है कि कैसे कब्र-दाखिल आत्माओं को परमात्मा जगाता है अर्थात् देहाभिमानी आत्माओं को ज्ञान देकर आत्माभिमानी बनाता है।

बाबा ने मुरली का महत्व स्पष्ट करते हुए कहा है - मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार। जीयदान से प्यार अर्थात् जीयदान दाता से प्यार।

यह मधुवन तपस्या करने के लिए विश्व में सर्वोत्तम स्थान है, यहाँ का वातावरण आत्माओं को बरबस ही आकर्षित करता है। यहाँ आने से ही आत्मायें राहत अनुभव करती हैं। ज्ञानी आत्मायें तो करती ही हैं लेकिन अज्ञानी आत्मायें भी यह अनुभव करती हैं।

अव्यक्त बापदादा ने यहाँ ही चार धाम अर्थात् बाबा का कमरा, कुटिया, हिस्ट्री हाल और शान्ति-स्तम्भ बताये हैं, जो ब्राह्मण आत्माओं को आकर्षित करते हैं और सभी ब्राह्मण आत्मायें उनकी यात्रा करने आते हैं और यात्रा करके शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा के कर्तव्यों को अनुभव करते हैं और उससे प्रेरणा लेते हैं। जो ब्राह्मण नहीं हैं, उनको भी ये मधुवन आकर्षित करता है।

मधुवन में ही आत्माओं का परमात्मा से मंगल मिलन होता है, जिसका यादगार गंगा-सागर का संगम दिखाया है और यादगार रूप में अनेक संगमों पर कुम्भ मेला लगता है।

''ज्ञान से नफरत माना बाबा से नफरत। बाप से नफरत माना विश्व की बादशाही से नफरत।... मनुष्य को जब तक बाप का परिचय नहीं मिला है, तब तक अन्धियारे में है। इस समय सारी दुनिया निधन की है। उन सबको बाप का पैग़ाम पहँचाना है। ... स्वर्ग में तो तुम सब जायेंगे, लेकिन ऊंच पद पाने का पुरुषार्थ करना है। कोई प्रिन्स-प्रिन्सेज़ बनेंगे, कोई प्रजा में चले जायेंगे।''

सा.बाबा 24.01.12 रिवा.

''योग से हेल्थ, ज्ञान से वेल्थ मिलती है। सतयुग में हेल्थ-वेल्थ-हैपीनेस सब होता है। इस पढ़ाई से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो, परन्तु बच्चों को इस पढ़ाई का इतना क़दर नहीं है। ... कहाँ भी रहो पढ़ाई जरूर पढ़नी है, खान-पान भी शुद्ध रखना है और पवित्र भी जरूर रहना है। ... मुख्य है काम कटारी चलाने की बात। इस पर ही अबलाओं पर अत्याचार होते हैं।''

सा.बाबा 26.10.11 रिवा.

''तुम जानते हो - अभी शिवबाबा हमारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भर रहे हैं। एक-एक रतन लाखों रुपयों का है। तुम बाप से ये रतन लेकर फिर दान करते हो। तुम कितने दानी बनते हो, वह भी गुप्त है। ... पहले ग़रीबों की बारी है, साहूकारों का पिछाड़ी में पार्ट है। बाप सबका उद्धार करते हैं। बाबा ग़रीब निवाज़ है, तो हम भी गरीबों को समझायें।''

सा.बाबा 1.07.11 रिवा.

''बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं तो ठीक लगता है, बाहर निकलने से कितनी अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स भूल जाते हैं। भूलने से मुरझा जाते हैं। ... बाप गधे का मिसाल भी देते हैं। यहाँ बाप

तुमको स्वराज्य देने के लिए श्रृंगार करते हैं परन्तु बच्चे चलते-चलते माया की धूल में पड़कर सारा श्रृंगार खराब कर देते हैं। माया की सबसे बड़ी धूल है काम विकार की।''

सा.बाबा 25.09.12 रिवा.

''यह भोग आदि लगाने की एक रस्म-रिवाज़ है ड्रामा अनुसार। कोई नये-नये इन बातों को नहीं समझते हैं तो संशय उठता है। हम कहेंगे - यह भी ड्रामा अनुसार उनकी तकदीर में नहीं है, इसलिए संशय उठा और चला गया। इसमें फिकर की कोई बात नहीं है। ... हमारा काम है बाप से वर्सा लेना। हम पढ़ाई क्यों छोड़े, बाप की मुरली तो सुनना है ना। मुरली नहीं सुनेंगे तो बाप के डॉयरेक्शन कैसे मिलेंगे।''

सा.बाबा 29.09.12 रिवा.

अब प्रश्न उठता है कि वह मुरली की तान क्या है, जो जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकार की प्रकृति को प्रभावित करती है। शिवबाबा, साकार बाबा के मुखारबिन्दु से जो महावाक्य उच्चारण करते थे अर्थात जो मुरली चलाते थे, वह तो अभी चलती नहीं है। अव्यक्त बापदादा की मुरली गुल्जार दादी के मुख से साकार में जो चलती है, वह भी कभी-कभी अर्थात् साल में 10-15 दिन ही चलती है। रिवाइज़ कोर्स की जो मुरली है, वह भी एक-आधे घण्टे ही क्लास में चलती है। तो क्या उसके प्रभाव से ये जड़-जंगम-चेतन प्रकृति तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेगी या कागज की मुरली अलमारी में रखने से जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बन जायेगी। वास्तविकता क्या है ? वास्तविकता को विचार करें तो साकार बाबा के और अव्यक्त बापदादा के जो महावाक्य हैं, जिनको हम अभी रिवाइज़ कोर्स के रूप में पढ़ते-सुनते हैं, उनकी हमारे जीवन में जब धारणा होगी, मन में उसका मनन-चिन्तन होगा, तब हमको देह और देह की दुनिया भूल जायेगी और हम अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करेंगे और उस अतीन्द्रिय सुख में हमारे से जो वायब्रेशन्स अर्थात् प्रकम्पन प्रवाहित होंगे, वे वातावरण को प्रभावित करेंगे और वह वातावरण जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकार की प्रकृतियों को परिवर्तन करेगा अर्थात् तमोप्रधान से सतोप्रधान बनायेगा। ड्रामा अनुसार हमारे उन वायब्रेशन्स और कर्मों के फलस्वरूप ही अन्त में जड़ प्रकृति में विशाल परिवर्तन होगा, जिसमें सारा सौर-मण्डल अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में स्थित हो जायेगा।

''नर्कवासी स्वर्गवासियों को माथा टेकते हैं क्योंकि समझते हैं - वे पवित्र हैं, हम पतित हैं। ... तुम्हारा ये कॉलेज भी है तो हॉस्टेल भी है। हॉस्टेल में रहने से बहुत फर्क रहता है। बच्चों को यहाँ बाप के पास जल्दी-जल्दी रिफ्रेश होने के लिए आना चाहिए।... कब ऐसा ख्याल नहीं करना है कि कुछ देना होगा। सर्विसएबुल बच्चे ही रिफ्रेश होने आयेंगे।''

सा.बाबा 29.08.12 रिवा.

''दिन-प्रतिदिन जैसे सम्पूर्णता का समय नज़दीक आता जायेगा तो दुनिया में टेन्शन और भी बढ़ेगा, कम नहीं होगा।... एक तरफ प्रकृति का टेन्शन, दूसरी तरफ इस दुनिया की गवर्मेन्ट के कड़े लॉज़ का टेन्शन, तीसरी तरफ व्यवहार में कमी का टेन्शन और चौथी तरफ लौकिक सम्बन्धों में भी टेन्शन।... ऐसे समय पर चारो ओर के टेन्शन का प्रभाव रुहानी पाण्डव सेना पर न हो, उसके लिए याद की यात्रा का विशेष प्रोग्राम मधुबन द्वारा ऑफिशियली जाते रहना चाहिए।''

अ.बापदादा 3.8.75

''कर्मयोगी होते हुए भी योगी रहें, वातावरण के प्रभाव से न्यारे रहें और साक्षी होकर समस्या का सामना करें, उसके लिए याद का बल चाहिए। ... ब्राह्मणों को खबरदार, होशियार करने के लिए व स्वयं की सेफ्टी के लिए कुछ विशेष प्वाइन्ट्स व क्लासेज़ के प्रोग्राम्स बनाओ, जिससे सभी समझें कि हमको मधुवन लाइट हाउस से विशेष लाइट आ रही है।''

अ.बापदादा 3.08.75

Q. मुरली क्या है और मुरली में क्या है?

बाबा की मुरली में क्या-क्या है, उसका हमारे जीवन के उत्थान में क्या स्थान है, वह भी हमारी बुद्धि में स्पष्ट होना चाहिए, तब ही मुरली का यथार्थ रूप में आनन्द ले सकेंगे, उसका लाभ उठा सकेंगे और तब ही हमारा जीवन परिवर्तन होगा।

मुरली में बाबा ने विश्व-नाटक के गुह्य रहस्यों को बताया है, मुरली में बाबा ने पुरुषार्थ के लिए अनेकानेक युक्तियाँ बताई हैं, मुरली में बाबा ने व्यवहारिक जीवन की सफलता के लिए अनेक प्रकार की श्रीमत दी है, मुरली में बाबा ने हमको हमारे तीनों लोकों और तीनों कालों की गौरवमय स्थिति का ज्ञान दिया है और तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों की स्मृति दिलाई है, मुरली में बाबा ने अनेक प्रकार के वरदान दिये हैं, मुरली में बाबा ने हमको हमारी कमी-कमजोरियों का अनुभव कराया है, जिससे हम उनको महसूस करके, उनको निकालने में समर्थ बनें है, मुरली में बाबा ने इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान दिया है। मुरली में बाबा ने हमको विभिन्न धर्मों की स्थापना और उनके साथ हमारे सम्बन्ध का ज्ञान दिया है। मुरली में बाबा ने माया के साथ युद्ध में विजयी बनने के लिए अनेकानेक अस्त्र-शस्त्र दिये हैं। मुरली के द्वारा बाबा ने बच्चों को राजयोग का ज्ञान देकर विश्व में राजशाही की स्थापना करने और राजाई करने के लिए योग्य बनने का ज्ञान दिया है। मुरली के द्वारा बाबा ने विश्व के डूबे हुए बेड़े को सेलवेज़ करने के विधि-विधान बताये हैं। मुरली में बाबा कर्म की गुह्य गति का ज्ञान देकर सुकर्मों को करने के लिए प्रेरणा दी है और श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति

प्राप्त करने का विधि-विधान बताया है अर्थात् हमको कर्मयोगी बनाया है। मुरली में बाबा ने भक्ति और ज्ञान का भेद बताकर भक्ति से वैराग्य दिलाकर, ज्ञानी बनाया है। मुरली में बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के गुह्य राज़ों का ज्ञान दिया है, अनेकानेक गुह्य राज़ स्पष्ट किये हैं, जो सुखी-शान्त जीवन जीने के लिए अति आवश्यक हैं।

मुरली में जो ज्ञान के राज़ बताये हैं, जो स्वमानों और वरदानों की स्मृति दिलाई है, उनकी अनुभूति की अथॉरिटी बनने के लिए श्रीमत दी है। जब हम उनकी अथॉरिटी बनेंगे तब ही हम उनका सुख अनुभव करेंगे और दूसरों को भी करा सकेंगे। इसलिए यहाँ ज्ञान के उन राज़ों का, स्वमानों और वरदानों का और विभिन्न प्रकार की श्रीमत के विषय में कुछ विचार किया है। इसलिए अव्यक्त बापदादा ने 2.02.2012 की मुरली में हमको उन सबकी अथॉरिटी बनने के लिए कहा है, प्रेरणा दी है, आज्ञा दी है।

''यह टेम मशीन तो खज़ाने की खान है। यह ज़रा भी मिस नहीं करती है। ... मुरली है ज्ञान रतनों की खान। मुरली से ही सब कुछ मिलता है। ... कितनी बड़ी भारी आमदनी है। सतयुग में तत्व भी सतोप्रधान होंगे। ... बाप कहते हैं - आज मैं तुमको बहुत अच्छी, गुह्य प्वाइन्टस सुनाता हूँ, इसलिए पढ़ाई पर पूरा ध्यान रखो।'' सा.बाबा 14.03.12 रिवा.

''जो विनाशी धन के लोभी हैं, जिनको इन अविनाशी ज्ञान रत्नों का क़दर नहीं है, वे रेग्यूलर पढ़ते नहीं हैं। तुम बच्चे ही जानते हो कि यह अविनाशी ज्ञान रतन ही साथ चलने हैं। विनाशी धन तो यहाँ ही खत्म हो जायेगा। ... अभी तुम रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। ऋषि-मुनि भी कहते थे कि हम रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते हैं।'' सा.बाबा 29.02.12 रिवा.

मुरली - मधुबन और पुरुषोत्तम संगमयुग की अनुभूतियाँ

2.02.12 की मुरली में ज्ञान सागर बाबा ने हमको तीनों लोकों और तीनों कालों की हमारी गौरवपूर्ण (Graceful) स्थिति की याद दिलाई है परन्तु हम विचार करें तो समझ में आयेगा कि उन सबकी अनुभूति अभी संगमयुग पर ही होती है। जो आत्मा अभी उन अनुभूतियों को करता है, उनकी अथॉरिटी बनता है, वही संगमयुग के गौरवपूर्ण कर्तव्यों को करके तीनों लोकों और तीनों कालों में गौरवपूर्ण स्थिति को पाता है। इस सबका आधार बाबा की मुरली और मधुवन है। बाबा ने हमको हमारे सारे कल्प के स्वमानों, वरदानों और ईश्वरीय प्राप्तियों का अनुभव कराया है और हमको उनकी अथॉरिटी बनने के लिए कहा है। जब हम उनकी अथॉरिटी बनेंगे तब ही हमको उनका सुख अनुभव होगा और हम अन्य आत्माओं को

भी करा सकेंगे।

''अमृतवेले स्मृति में बैठते हो लेकिन स्मृति स्वरूप का अनुभव हो। अनुभव की अथॉरिटी का आनन्द बहुत थोड़ा समय होता है। ... लेकिन स्वरूप के स्मृति स्वरूप के अनुभवी मूर्त बनें, अनुभव में खो जायें, उसको अभी और बढ़ाना होगा क्योंकि अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़ी है। स्मृति स्वरूप रहना, इसको कहा जाता है अनुभव। तो स्वरूप की स्मृति के अनुभव में खो जाना है।''

अ.बापदादा 2.02.12

बाबा बोले - बच्चों को परिवर्तन का उमंग आता है लेकिन यह उमंग सदा नहीं रहता है, उसका कारण भिन्न-भिन्न सर्व स्वमानों को सदा दिल से अनुभव कर अनुभवी मूर्त कम बनते हैं। समझते हैं, जानते हैं लेकिन दिल से रियलाइज़ कर अनुभव के नशे में रहें, वह कम रहते हैं। दूसरा अपनी छोटी-मोटी कमजोरियों को जानते हैं लेकिन दिल से रियलाइज़ नहीं करते, चला लेते हैं, अलबेलेपन से टाल देते हैं।

अ.बापदादा 22.04.12 सन्देश गुल्जार दादी जी

''याद करो - अनादि स्वरूप में आपका स्वमान कितना बड़ा है। ... एक तो बाप के साथ-साथ चमकती हुई आत्मा हैं। बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही हैं। ... सृष्टि-चक्र के आदि अर्थात् सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है, कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है। ... प्रकृति भी कितनी सुन्दर सतोगुणी है। अनुभव करो अपने देवता स्वरूप का। ... फिर नीचे आओ तो द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है अर्थात् पूज्य स्वरूप है। ... सभी कितनी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती है। ... अब आओ संगम में, सब चक्र लगा रहे हो? तो संगम पर स्वयं भगवान आपकी जीवन में पवित्रता की विशेषता भरता है, जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है। ... पवित्रता की जायदाद अभी बाप से प्राप्त होती है और पवित्रता सर्व प्राप्तियों का आधार है।''

अ.बापदादा 2.02.12

''आवाज़ में आने और आवाज़ से परे होने में कितना अन्तर है, क्या सभी इसके अनुभवी बन चुके हो? ... यन्त्र में ज़रा भी खिट-खिट है तो ऐसी आवाज़ पसन्द नहीं करते हो ना! ऐसे ही आपका यह यन्त्र मुख भी माइक है। इस मुख द्वारा भी जब कभी यथार्थ व युक्ति-युक्त बोल नहीं निकलते हैं, तो उसी समय सबको क्या अनुभव होगा, क्या उस समय आपको यह मालूम पड़ता है क्या।''

अ.बापदादा 27.5.74

''ऐसे राजऋषि अर्थात् सर्व अधिकारी और सर्व त्यागी बने हो? जन्म लेते ही कर्म-प्रमाण, श्रेष्ठ स्वमान-प्रमाण राजऋषि का मर्तबा बापदादा द्वारा प्राप्त हुआ है ना! ... आप सबका विशेष नारा कौनसा है? (स्वराज्य हमारा ईश्वरी जन्मसिद्ध अधिकार है) जब जन्मसिद्ध

अधिकार है तो जन्म लेने से ही प्राप्त है, तब तो अधिकारी बने हो।''

अ.बापदादा 29.1.75

मुरली - मधुबन और स्वमान-वरदान एवं स्व-स्थिति

बाबा हमको रोज़ मुरली में हमारे विभिन्न स्वमान याद दिलाता है, अनेक प्रकार के वरदान दिये हैं, जिन स्वमानों और वरदानों के आधार पर हमारी स्व-स्थिति बनती है और स्व-स्थिति के आधार से ही इस पदमापदम भाग्यशाली संगमयुग का सुख अनुभव होता है। जो मुरली के इस महत्व को समझते हैं, वे निश्चयबुद्धि बनकर मुरली द्वारा इन स्वमानों-वरदानों का अनुभव करते हैं और उस स्थिति में स्थित होकर इस संगमयुगी जीवन का सुख अनुभव करते हैं और अपने जीवन को धन्य-धन्य मानते हैं और दूसरों को भी ऐसा भाग्य प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं, उनको सहयोग देते हैं।

बाबा ने मुरली में हमको हमारे अनेकानेक स्वमानों का ज्ञान दिया है, अनुभव कराया है और अनेकानेक वरदान दिये हैं और उन सबके अनुभव की अथॉरिटी बनकर औरों को अनुभव कराने की श्रीमत दी है। सारे कल्प में हमारे मुख्य-मुख्य स्वमान-वरदान क्या-क्या हैं, वह ज्ञान हमारी बुद्धि में स्पष्ट होगा, तब ही हम उन स्वमानों के अनुभव में रह सकेंगे अर्थात् अनुभव की अथॉरिटी बन सकेंगे। भिन्न-भिन्न समय पर हमारे स्वमान क्या हैं, उस पर विचार करना भी आवश्यक है। इस लक्ष्य से ही यहाँ कुछ विचार किया गया है।

अनादि स्वरूप के स्वमान
हम आत्मायें परमधाम में परमात्मा पिता के साथ चमकता हुआ सितारा हैं।
हम लकी स्टार अर्थात् भाग्यशाली आत्मा हैं।
हम आत्मा परम-शान्ति और परम-शक्ति सम्पन्न हैं।
परमधाम में हम आत्मा परम-पवित्र हैं।

आदि स्वरूप के स्वमान
आदि काल अर्थात सतयुग में हम सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी देवता बनते हैं।
मर्यादा पुरुषोत्तम बनते हैं।
विश्व-राज्य अधिकारी बनेंगे।
प्रकृतिजीत प्रकृतिपति होंगे।

धन-धान्य से सम्पन्न होंगे।
अमरत्व को प्राप्त अर्थात् मृत्यु-दुख और मृत्यु-भय से मुक्त होंगे।
योगबल से देह धारण करेंगे अर्थात योगबल से जन्म होगा, कंचन काया होगी।
सतयुग में सतोप्रधान प्रकृति का सम्पूर्ण सुख होगा और आत्माओं में परस्पर हार्दिक प्यार (Love and affection) होगा।

मध्यकाल में

A. पूज्य स्वरूप के स्वमान

मन्दिरों में मूर्ति रूप में पूजा होगी।
मूर्ति रूप में भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण करने वाले होंगे।
भक्तों के इष्टदेव होंगे।
भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण करने वाले होंगे।
स्नेह और शक्ति के प्रतिरूप होंगे।

B. पुजारी स्वरूप के स्वमान

अव्यभिचारी भक्त अर्थात् परमात्मा के प्रति अगाध श्रृद्धा-भावना रखने वाले होंगे।
भक्ति में प्यारे परमात्मा के और अपने पूज्य स्वरूप के मन्दिर बनायेंगे।
भगवानुवाच - मैं पुराने भक्तों को ही पहले आकर मिलता हूँ।

संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप के स्वमान

सबसे महत्वपूर्ण संगमयुग के स्वमान हैं, जिन पर सारे कल्प के स्वमानों का आधार है और जो सारे कल्प के स्वमानों की अनुभूति का आधार हैं। जब हम संगमयुग के स्वमानों की अनुभूति में होंगे, तब ही सारे सृष्टि-चक्र में हमारी महानता होगी अर्थात् हम स्वमान सम्पन्न होंगे। इसलिए ही बाबा ने हमको स्वमानों की याद दिलाई है और अपने स्वमान और वरदानों के अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए कहा है क्योंकि जो संगमयुग पर अपने स्वमानों-वरदानों की अनुभूति करेगा, वही तीनों लोकों और तीनों कालों स्वमानों से सम्पन्न वरदानी आत्मा बनेंगा।

सच्चिदानन्द स्वरूप अर्थात् आत्मा को अपने सच्चिदानन्द स्वरूप का ज्ञान और अनुभव
ज्ञान-ज्ञानेश्वर अर्थात् मास्टर ज्ञान का सागर

मास्टर सर्वशक्तिवान हैं
हम आत्मा परम-शान्ति सम्पन्न आत्मा हैं
कर्मेन्द्रियों के मालिक स्वराज्य अधिकारी हैं
अभी हम त्रिनेत्रधारी हैं
अभी हम त्रिकालदर्शी हैं
त्रिलोकीनाथ अर्थात् तीनों लोकों को जानने वाले हैं
प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली सर्वोत्तम ब्राह्मण हैं
परमात्मा की डॉयरेक्ट सन्तान हैं
डॉयरेक्ट परमात्म-प्यार की अधिकारी आत्मा हैं
ब्राह्मण सो फरिश्ता सो देवता बनने वाले हैं
स्वदर्शन चक्रधारी हैं
राजयोगी हैं
मास्टर दाता-विधाता-वरदाता हैं
महादानी-वरदानी हैं
परमपिता परमात्मा के दिल तख्तनशीन बालक सो मालिक आत्मा हैं
अकाल तख्तनशीन अर्थात् भृकुटी के तख्त पर विराजमान हैं
विश्व-नाटक के हीरो पार्टधारी हैं
इस विश्व-नाटक में हमारा सर्वशक्तिवान कल्प-वृक्ष के बीजरूप परमात्मा के साथ पार्ट है
हम विश्व-नाटक के साक्षी-दृष्टा और ट्रस्टी हो पार्ट बजाने वाले हैं
हम शिवशक्ति-पाण्डव सेना के सेनानी हैं अर्थात् माया के साथ युद्ध कर विजयी बनने वाले हैं।
मास्टर विश्व-कल्याणकारी हैं
मास्टर विश्व-परिवर्तक हैं
मास्टर पतित-पावन हैं
परमपिता परमात्मा के उम्मीदों के सितारे हैं
बेग़मपुर के बादशाह हैं
परमात्मा की मदद के पात्र और परमात्मा के मददगार बनें हैं
विश्व की सर्वात्माओं के पूर्वज हैं
शुभ-चिन्तक मणी हैं
परमात्म-सन्देश वाहक हैं

इन्द्र-सभा के भाती अर्थात् इन्द्र परमात्मा के दरबार के सदस्य हैं
कल्प-वृक्ष के फाउण्डेशन मास्टर बीजरूप हैं
कल्प-कल्प के विजयी आत्मा हैं
खुदा के दोस्त हैं
कोटों में कोई, कोई में भी कोई आत्मा हैं
गॉडली स्टूडेण्ट हैं
विश्व में लाइट-माइट फैलाने वाले लाइट-माइट हाउस हैं
परमात्म-दुआओं के पात्र हैं
आत्माओं के दुआओं के भी पात्र हैं
अभी हमको परमात्मा से बात करने का सौभाग्य प्राप्त है
सच्ची सम्पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव करने वाले हैं
हम ही स्वर्ग के अधिकारी बनते हैं
बाबा ने हमको ऊंच ते ऊंच ज्ञान दिया है, जो सर्व सुखों का एकमात्र आधार है।
बाबा ने हमको ऊंच ते ऊंच गोद में बिठाकर अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कराया है।
बाबा ने हमको ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण बनाया है अर्थात् ब्राह्मण जीवन प्रदान किया है।
बाबा ने हमको ऊंच ते ऊंच स्थान मधुवन अर्थात् पाण्डव भवन में रहने का या आने का सुअवसर प्रदान किया है।
बाबा ने हमको ऊंच ते ऊंच पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। स्टूडेण्ट लाइफ इज़ दि बेस्ट लाइफ है।
बाबा ने हमको ऊंच ते ऊंच कर्तव्य अर्थात् यज्ञ सेवा करना सिखाया है, करने का भाग्य प्रदान किया है।
बाबा ने हमको ऊंच ते ऊंच परिवार का बनाया है, ऊंच ते ऊंच संग में रहने का अवसर दिया है।
बाबा ने हमको स्वस्थ तन-मन-बुद्धि दी है, जिससे हम इन सबको समझकर ऊंच ते ऊंच कर्तव्य करने में समर्थ हैं।

फरिश्ता स्वरूप अर्थात् रिटर्न जर्नी स्वरूप के स्वमान

प्रकाशमय काया के साथ प्रकाशमय जगत से विश्व कल्याणार्थ सारे भूमण्डल पर लाइट-माइट की किरणें फैलाता हुआ बापदादा के साथ स्वतन्त्रता से विचरण करता हुआ फरिश्ता हूँ।

निर्भय और निर्विकल्प स्थिति स्वरूप

''बच्चों के दिल में है कि बेहद का पारलौकिक बाप आया है हमको वापस घर ले जाने के लिए और हमको सुख देने के लिए। जिनको ये निश्चय नहीं है, वे यहाँ आ नहीं सकते। तुम हो ईश्वरीय औलाद। ... यह सृष्टि ईश्वरीय सम्प्रदाय और आसुरी सम्प्रदाय का एक खेल है। ... इसमें हर एक मनुष्य मात्र को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है।'' सा.बाबा 4.02.12

अव्यक्त बापदादा ने कहा है और अनुभव भी कहता है कि किसी से थोड़ी भी माँगने की इच्छा आत्मा को अपने स्वमान से गिरा देती है। इसलिए बाबा ने कहा है - माँगने से मरना भला। किसी के एहसान से दबा हुआ व्यक्ति भी अपने स्वमान का अनुभव नहीं कर सकता है। इसलिए बाबा ने कहा है - तुम दाता के बच्चे देने वाले हो, लेने वाले नहीं, इसलिए किससे कुछ लेने का संकल्प भी नहीं आना चाहिए। तुमको सबको देना है परन्तु यह संकल्प न आये कि वह कुछ दे तो मैं उसको दूँ। तुमको सम्पन्न बनकर सबको देना ही है।

विचारणीय बात ये है कि बाबा ने सभी स्वमानों की स्मृति दिलाई है, उनका कुछ विचार यहाँ किया गया है परन्तु उन सबके अनुभव करने, अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए उन सबकी वास्तविकता को विचार करना अति आवश्यक है। विचार करने, उनका मनन-चिन्तन करने और सतत अभ्यास करने पर ही उन सबकी अनुभूति होगी और उस अनुभूति की अथॉरिटी और उसके नशे के आधार पर ही हम दूसरों को भी बता सकेंगे और उन स्वमानों-वरदानों का अनुभव भी करा सकेंगे।

यद्यपि परमधाम में हम आत्मायें अपने अनादि स्वरूप में परम-शक्ति और परम-शान्ति सम्पन्न है परन्तु वहाँ आत्मा को शान्ति-शक्ति की कोई अनुभूति नहीं है। शान्ति-शक्ति का अनुभूति अभी जब बाबा हमको ज्ञान देते हैं और वह ज्ञान हमारी बुद्धि में इमर्ज रहता है और हम देह में रहते देह और देह की दुनिया से न्यारे अपने परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न अनादि स्वरूप में स्थित होते हैं अर्थात् इस ब्राह्मण जीवन में ही वह अनुभूति होती है।

परमात्मा का सानिध्य प्राप्त करना भी बड़े भाग्य और स्वमान की बात है परन्तु परमधाम में आत्मा भल परमात्मा के पास ही रहे परन्तु उसको परमात्मा के साथ की न अनुभूति होती है और न ही साथ से कोई लाभ होता है। यथार्थ अनुभूति और लाभ अभी जब परमात्मा साकार में आते हैं और हम उनसे ज्ञान पाकर उनके सानिध्य में आते हैं, तब ही होता है। बाबा ने आत्मा के अनादि स्वरूप की तुलना आकाश में चमकते हुए तारों से करके बताया

है कि तुम ब्रह्माण्ड के चमकते हुए सितारे हो और वहाँ परमात्मा के साथ रहते हो परन्तु ये बात भी विचारणीय है कि कई तारे सूर्य-चान्द से दूर होते भी पास रहने वालों से अधिक चमकते हैं। इस सम्बन्ध में साकार बाबा ने भी कहा है कि बापदादा के साथ रहने वालों का इतना महत्व नहीं है, जितना दूर रहते भी बाबा की आज्ञा पर चलने वालों का, बाबा की सेवा में तत्पर रहने और बाप समान स्थिति बनाने वालों का है। इसका मतलब ये नहीं कि साथ में रहने का कोई महत्व नहीं है परन्तु पुरुषार्थ है बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने और ईश्वरीय सेवा का कर्तव्य करने का। साकार बाबा और अव्यक्त बापदादा भी इस सृष्टि रंगमंच पर चमकते हुए ऐसे सितारों को विशेष याद करते हैं और यह दैवी परिवार भी उनके महत्व को अनुभव करता है। इस अनुभव का आधार मुरली और मधुबन ही है। जो मुरली को जितना धारण करता है, उसकी उतनी चमक बढ़ती है।

द्वापर से हम खुद ही अपने चित्र बनाकर उनकी पूजा करते हैं, इसलिए गायन है आपही पूज्य और आपही पुजारी। देवताओं की मूर्तियाँ बनाकर पूजते हैं परन्तु यदि द्वापर से जिन मूर्तियों आदि अर्थात् लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता आदि के मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं, उनकी बायोग्राफी पर विचार करें तो उनमें दो समय की और दो प्रकार कर्तव्यों का समावेश है। एक तो शरीर सतयुग-त्रेता का अर्थात् योगबल से जन्म लेने वालों का है और कर्तव्य संगमयुग का अर्थात् परमात्मा और ब्राह्मणों का गायन करते हैं। इसलिए महत्व इस समय के कर्तव्य का है, उस समय का नहीं है और वह कर्तव्य भी मुरली की धारणा के आधार पर ही करने में समर्थ होते हैं।

रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान और अनुभव अभी संगमयुग पर ही है, अन्त में जब सूक्ष्मवतन से फरिश्ता रूप में पास होंगे अर्थात् रिटर्न जर्नी में होंगे तो उस समय उस स्वरूप को सोचने का भी समय और संकल्प नहीं होगा। ब्रह्मा बाप के फरिश्ता स्वरूप के विषय में विचार करें तो उनको अभी सूक्ष्मवतन में यह ज्ञान है क्योंकि अभी वे फरिश्ता स्वरूप से विश्व-कल्याण का कर्तव्य कर रहे हैं, साकार वतन में आते-जाते हैं। अन्त में तो सूक्ष्म शरीर से सूक्ष्मवतन से सेवा भी नहीं होगी क्योंकि उस समय परमधाम जाने के लिए वहाँ से गुजरना ही होगा अर्थात् रिटर्न जर्नी होगी। उस फरिश्ता स्वरूप का अनुभव भी अभी ही देह से न्यारी स्थिति में होता है।

ध्यान में रहे कि स्मृति में रहना और स्मृति-स्वरूप स्थिति में रहना दोनों में महान अन्तर है। स्मृति-स्वरूप स्थिति ही अनुभूति है और स्मृति में रहना पुरुषार्थ की स्थिति है।

इसलिए बाबा ने जो अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए कहा है और अपने स्वमानों की स्मृति दिलाई है, उनकी अनुभूति का अभी ही समय है, अभी ही उसका महत्व है और अभी ही हमको अनुभव की अथॉरिटी बनने से हमको सेवा में सहज सफलता मिलेगी। सच्ची सम्पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव अभी संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा में सारा ज्ञान इमर्ज है, सारे कल्प के सुख-दुख का अनुभव आत्मा में संस्कार रूप में संचित है और आत्मा देह में रहते अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है। इसलिए तीनों लोकों और तीनों कालों की गौरवमय स्थिति के अनुभूतियों का समय यह संगमयुग ही है।

परमात्मा द्वारा अभी की प्राप्तियों की अनुभूति ही आधे कल्प की प्राप्ति का आधार है और आधे कल्प की भक्ति का आधार बनती हैं। अभी आत्मा परमात्मा की याद से जो शक्ति अपने में संचित करती है, वह शक्ति ही सारे कल्प में पार्ट बजाने का आधार होती है। और तो सारे कल्प शक्ति क्षीण ही होती है, संचित नहीं। उस शक्ति भरने का आधार भी मुरली ही है।

Q. अनुभव की अथॉरिटी सबसे श्रेष्ठ अथॉरिटी है तो अभी हमको किन-किन बातों के अनुभव की अथॉरिटी बनना है ?
जब हमको पता होगा कि हमको किन-किन बातों की अथॉरिटी बनना है, तब ही तो हम उस अथॉरिटी के अनुभव में स्थित हो सकेंगे अर्थात् उस अनुभव की अथॉरिटी बन सकेंगे और उस अथॉरिटी से किसको भी समझा सकेंगे।

आत्मा-परमात्मा-ड्रामा अर्थात् रचना और रचता का जो भी ज्ञान बाबा ने दिया है, उन सबके गुण-धर्मों के अनुभव की अथॉरिटी
आत्मा के विभिन्न स्वमानों और परमात्मा से प्राप्त वरदानों के अनुभव की अथॉरिटी
बाबा ने जो ज्ञान-गुण-शक्तियाँ दी हैं अर्थात् स्मृति दिलाई है, उन सबकी अथॉरिटी
परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों के अनुभव की अथॉरिटी
पुरुषोत्तम संगमयुग के सच्चे सुख के अनुभव की अथॉरिटी
त्रिकाल और त्रिलोक के समस्त अनुभवों की अथॉरिटी

पुरुषोत्तम संगमयुग प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ

बापदादा ने हमको अनुभव की अथॉरिटी बनने की श्रीमत दी है, जिस अनुभव की अथॉरिटी बनने से हम स्वयं भी ईश्वरीय प्राप्तियों की महानता को अनुभव कर सकेंगे और हम

यह ज्ञान अन्य आत्माओं को भी अथॉरिटी से दे सकेंगे और उनको भी अनुभव करा सकेंगे। अनुभव की अथॉरिटी बनने के लिए हमको यह ज्ञान होना अति आवश्यक है कि परमात्मा से हमको क्या-क्या मिला है, इसलिए परमात्मा से प्राप्त ज्ञान और अनुभूतियों के विषय में जानना अति आवश्यक है, इसलिए संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों के विषय में कुछ वर्णन यहाँ किया गया है। अनुभव की अथॉरिटी बनने से हम संगमयुग के सच्चे सुख को स्वयं भी अनुभव कर सकेंगे और दूसरों को अनुभव करा सकेंगे। बाबा ने कहा है - संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों की लिस्ट निकालो तो वह सतयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों से कई गुणा बड़ी हो जायेगी। इसलिए परमात्मा से प्राप्त ज्ञान के विविध विषयों और अनुभूतियों के विषय में विचार किया गया है।

ज्ञान सागर परमात्मा पिता से हमको जो प्राप्तियाँ हुई हैं, उनको अध्ययन की दृष्टि दो भागों में बाँटा गया है। एक है ज्ञान पक्ष और दूसरा है अनुभूति पक्ष।

ज्ञान पक्ष

बाबा ने हमको विशेष रूप से जिन विषयों का ज्ञान दिया है और उन सबके गुण-धर्मों के विषय में बताया है, उनमें मुख्य विषय हैं -

1. आत्मा का ज्ञान
2. परमात्मा का ज्ञान
3. विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान
4. सृष्टि-चक्र का ज्ञान
5. त्रिलोक का ज्ञान
6. कल्प वृक्ष का ज्ञान
7. कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान
8. योग का यथार्थ ज्ञान
9. पवित्रता का ज्ञान और जीवन में उसके महत्व का ज्ञान
10. भक्ति और ज्ञान के भेद का ज्ञान
11. आत्मा और विश्व की उतरती कला और चढ़ती कला का ज्ञान

यहाँ कुछ मुख्य विषयों के विषय में ही लिखा गया है। इसके अतिरिक्त ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको इस विश्व-नाटक के अनन्त-अनगिनत गुह्य और गोपनीय रहस्यों का भी ज्ञान दिया है और उनका अनुभव भी कराया है।

''भक्ति में गंगा आदि में स्नान करते, तुम पतित ही बनते आये हो। अभी तुम ज्ञान मार्ग में हो। यह है सच्चा-सच्चा संगम। ... जो पहले-पहले राम से बिछुड़ते हैं, तो जरूर पहले-पहले वे ही ज्ञान में आयेंगे। जरूर बाप उनसे ही पहले आकर मिलेंगे। स्कूल में रोज़ नहीं जायेंगे तो ये सब गुह्य ते गुह्य प्वाइन्ट्स कैसे समझेंगे!'' सा.बाबा 10.08.12 रिवा.

अनुभूति पक्ष

* आत्मा के यथार्थ स्वरूप का अनुभव
* परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति
* सच्ची सुख-शान्ति-पवित्रता की अनुभूति
* निन्दा-स्तुति, लाभ-हानि, ... जय-पराजय में समान स्थिति का अनुभव
* यथार्थ रीति से साक्षीपन का अनुभव
* विश्व-नाटक के सच्चे सुख का अनुभव
* विश्व-नाटक के यथार्थ स्वरूप का अनुभव
* विश्व-नाटक के गुण-धर्मों और नियम-सिद्धान्तों का अनुभव
* मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ और सुखद अनुभव
* परमात्मा के अवतरण अर्थात् परकाया प्रवेश का अनुभव
* परमात्म-मिलन और परमात्मा के सानिध्य का सुखद अनुभव
* ज्ञान सागर परमात्मा के ज्ञान-सागर स्वरूप का अनुभव
* परमात्म-प्यार और पालना का अनुभव
* परमात्मा के मात-पिता के रूप में पालना और प्यार का सुखद अनुभव
* विचित्र परमात्मा को चित्ररूप अर्थात् साकार रूप में देखने और उनके दिव्य चरित्रों का अनुभव
* परमात्मा से सर्व प्राप्तियों की अर्थात् सर्वप्राप्ति सम्पन्न स्थिति की अनुभूति
* परमात्मा से मदद का अनुभव और परमात्मा की मदद का अनुभव
* परमात्मा की मदद और उसके विधि-विधान का यथार्थ अनुभव
* परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्धों की यथार्थ अनुभूति
* खुदा दोस्त का अनुभव
* ईश्वरीय पर्सनॉलिटी और रॉयलिटी का अनुभव
* ईश्वरीय गोद का अनुभव

* परमात्मा पिता की परम सुखदायी गोद और गोद का बच्चा बनने का अनुभव
* परमपिता परमात्मा के ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार अर्थात् ईश्वरीय वर्से की अनुभूति
* परमपिता परमात्मा का वारिस बनने और बनाने का अनुभव

Q. परमात्मा का यथार्थ वर्सा क्या है, वह किसको एवं कब मिलता है, उसकी अनुभूति

* परमात्मा के सौदागर-रतनागर स्वरूप का अनुभव
* डायरेक्ट परमात्मा को देने और परमात्मा से लेने का अनुभव
* परमात्मा के खिवैया स्वरूप का अनुभव
* निराकार आत्मा को निराकार बाप के प्यार का साकार में अनुभव
* आत्मा आशिक को परमात्मा माशूक के प्यार का यथार्थ अनुभव
* परमात्म के गरीब-निवाज स्वरूप का अनुभव
* परमात्मा के सानिध्य से पवित्रता की धारणा और दिव्य शक्तियों की प्राप्ति तथा उनकी अनुभूति
* अमरत्व का अनुभव
* बच्चों का बाप पर और बाप का बच्चों पर बलिहार जाने का अनुभव
* श्रेष्ठ भाग्य और भाग्यविधाता परमात्मा के भाग्य-विधाता स्वरूप का अनुभव
* त्याग में भी भाग्य अनुभव
* पुरुषार्थ में प्रालब्ध का अनुभव
* परमात्मा की छत्रछाया और उनके हाथ और साथ का अनुभव
* परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का अनुभव
* परमात्मा के दिल-तख्त का सुखद अनुभव
* परमात्मा के दिल-तख्त और उसकी विशालता का सुखद अनुभव
* ईश्वरीय राज-दरबार अर्थात् इन्द्र-सभा का अनुभव
* परमात्मा के शिक्षक स्वरूप का अनुभव
* गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ का अनुभव
* वसुधैव कुटुम्बकम् का अनुभव
* विश्व-परिवार और परिवार के पूर्वजपन का अनुभव
* आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम (Sampeling) और विभिन्न धर्मों की स्थापना का अनुभव
* कर्म और फल के विधि-विधान का अनुभव

* कर्मयोग और कर्मभोग तथा दोनों के सम्बन्ध का अनुभव अर्थात् कर्मयोग से कर्मभोग पर विजय का अनुभव।
* धर्मराज और धर्मराज पुरी के विधि-विधान का अनुभव
* विभिन्न धर्मों के अस्तित्व और धर्म-ग्रन्थों के सार का अनुभव
* लव एण्ड लॉ के बैलेन्स के सन्तुलन का अनुभव
* राजा जनक के समान विदेही स्थिति का अनुभव
* स्वराज्य अधिकारीपन का अनुभव
* अहंकार और हीनता से मुक्त जीवन का अनुभव
* फिकर से फारिग बेफिकर बादशाह का अनुभव
* बाप के हाथ और साथ का अनुभव
* बालकपन और मालिकपन का अनुभव
* मास्टर सर्वशक्तिवान का अनुभव
* आत्मा के लाइट-माइट स्वरूप का अनुभव
* गार्डन आफ अल्लाह अर्थात् खुदा के बगीचे का अनुभव
* कमल पुष्प सम जीवन का अनुभव
* परमात्मा के करन-करावनहार स्वरूप का ज्ञान और अनुभव

अभी हमको सारे कल्प का ज्ञान है, इसलिए हमको कलियुग के तमोप्रधान सुखों का और भक्ति मार्ग का ज्ञान भी है तो सतयुग के सतोप्रधान सुखों के विषय में भी ज्ञान और उस ज्ञान के आधार पर आत्मा में संस्कार रूप में संचित है। इसलिए हम सारे कल्प के सुख-दुख का अन्तर समझकर संगमयुग के सच्चे सुख का अनुभव करते हैं, जो अनुभव सतयुग में या कलियुग में नहीं हो सकता है। अतीन्द्रिय सुख, परमानन्द, मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख का यथार्थ अनुभव आत्मा को अभी ही होता है, जब आत्मा को परमात्मा से आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान मिलता है। यह सत्य ज्ञान परमपिता परमात्मा का आत्माओं को सबसे श्रेष्ठ उपहार है और सर्व श्रेष्ठ वरदान है, जो सब वरदानों, प्राप्तियों और अनुभूतियों का आधार है।

''सर्व सम्बन्धों का रस बाप द्वारा न लेने से कोई रस रह गया है, जिस कारण दृष्टि-वृत्ति चंचल होती है। ... साजन व सजनी के रूप में भी बाप से सजनी व साजन बनकर अतीन्द्रिय सुख का जो रस सदा काल स्मृति में और समर्थी में लाने वाला है, वह अनुभव नहीं कर सकते हो! बाप

से सर्व-सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में दृष्टि-वृत्ति चंचल होती है। ऐसे समय पर बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए व स्वयं को रौरव नर्क व विष्ठा का कीड़ा समझना चाहिए।''

अ.बापदादा 11.7.74

अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो परमात्मा की मधुर स्मृति से आत्मा को जो अतीन्द्रिय सुख का रस अनुभव होता है, उसके आगे अन्य सभी सम्बन्धों का रस स्वत: भूल जाता है क्योंकि अन्य जो भी सम्बन्ध है, वे सब दैहिक हैं अर्थात् देह पर आधारित इन्द्रिय सुख हैं। अतीन्द्रिय सुख वाले को उनकी कोई आकर्षण नहीं रहती है। परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का सुख अनुभव करने के लिए इस सत्य को अवश्य ध्यान में रखना है।

''यहाँ तुम ज्ञान सागर के पास रिफ्रेश होने आते हो, वहाँ सेन्टर्स पर ज्ञान गंगाओं द्वारा सुनते हो। ... अभी ज्ञान सागर बाप तुमको ज्ञान स्नान कराते हैं, जिससे तुम बहिश्त की परियाँ बन जाते हो। वास्तव में इसमें पंख आदि की बात नहीं है। इस ज्ञान से तुम्हारी आत्मा उड़ने लायक बन जाती है। ... ये सब बातें अच्छी रीति समझाना है। तुम्हारे में भी धारणा बहुत अच्छी चाहिए।''

सा.बाबा 14.08.12 रिवा.

Q. तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमान, वरदान, संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों में क्या अन्तर है?

ज्ञान सागर बाबा ने हमको मुरली में स्वमान, वरदान, संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों का अन्तर भी बताया है।

वास्तव में संगमयुग का स्वमान ही सर्वोच्च स्वमान है, जो तीनों कालों और तीनों लोकों के स्वमानों अर्थात् महानताओं की अनुभूतियों का आधार है। वास्तविकता तो ये है कि वर्तमान ब्राह्मण जीवन के स्वमान की अनुभूति ही यथार्थ अनुभूति है और वही तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों की यथार्थ अनुभूति है और सर्व स्वमानों और अनुभूतियों का आधार है। क्योंकि अभी ही हमको अपने तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों अर्थात् महानताओं का ज्ञान है, जिसके कारण ही हम उन महानताओं को अनुभव करते हैं। परमधाम में तो आत्मा को कोई अनुभूति ही नहीं होगी। सतयुग में भले सतोप्रधान प्रकृति और सतोप्रधान सम्बन्धों का सुख होगा परन्तु विचार करो कि वहाँ उसकी अनुभूति क्या होगी? ऐसे ही द्वापर से मन्दिरों में हमारे मन्दिर बनेंगे, हमारी मूर्तियों की पूजा-अर्चना होगी, उनसे भक्तों को वरदानों की प्राप्ति होगी, उनकी मनोकामनायें पूर्ण होंगी परन्तु उन मूर्तियों को क्या अनुभूति होगी और उस समय हमको क्या अनुभूति होगी। ऐसे ही रिटर्न जर्नी के समय सूक्ष्मवतन से फरिश्ता स्वरूप में पास

होंगे तो वहाँ आत्मा को क्या अनुभूति होगी, यह भी विचारणीय है। यथार्थ अनुभूति अभी इस ब्राह्मण जीवन में ही है। जो इस अनुभूति को करता है, इसकी अथॉरिटी बनता है, उसका जीवन ही स्वमानपूर्ण अर्थात् महान (Graceful) है और वही औरों को भी यह अनुभव करा सकता है। परन्तु बिडम्बना ये है कि ये विश्व-नाटक सतत गतिशील और सतत परिवर्तनशील है, इसलिए इसमें कोई भी दृश्य या स्थिति सदा काल नहीं रह सकती है, इसलिए इस संगमयुग की यह महानतम् स्थिति भी सदा काल रहने वाली नहीं है, इसलिए अभी हम इसकी महानताओं का जितना अनुभव करें और करायें, वही हमारा परम कर्तव्य है। इस अनुभूति के आधार पर ही हम अपने तीनों कालों और तीनों लोकों के स्वमान को समझ सकते हैं। भूतकाल के चिन्तन और भविष्य की चिन्ता या प्लॉनिंग वाला कभी भी इस अनुभूति को नहीं कर सकता है। जो अचानक के पाठ को ध्यान में रखकर वर्तमान में यह अनुभूति करेगा, वही इसमें सफल होगा। वर्तमान में इन स्वमानों की अनुभूति में रहने वाले का भविष्य स्वत: अच्छा होगा।

बाबा ने ये भी कहा है कि सब अचानक होना है अर्थात् विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार ये स्थिति भी अचानक परिवर्तन होनी है, इसलिए अभी ही हम सम्पन्न-सम्पूर्ण मूल स्वरूप में स्थित होकर सर्व अनुभूतियों की अथॉरिटी बनकर सर्व अनुभूतियों को करते हुए मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करें और अन्य आत्माओं को भी करायें। अभी अनुभव की हुई यह स्थिति ही अन्त समय हमारे काम में आयेगी, उसके लिए ही बाबा कहते हैं कि एवर-रेडी बनों।

ये भी अटल सत्य है कि परमधाम जाने से पहले सारे कल्प के हिसाब-किताब पूरे करने ही हैं और उसका भी समय अभी ही है, इसलिए कर्मभोग भी अवश्य सम्भावी है, इसलिए उसके लिए भी हमको पहले से ही तैयार रहना है। इसलिए ये अनुभव भी अभी जब कर्मभोग नहीं है, तब ही कर सकते हैं और वह अनुभव और स्थिति ही कर्मभोग के समय भी सहयोग करेगी।

वास्तविकता पर विचार करें तो तीनों कालों और तीनों लोकों के स्वमानों अर्थात् महानताओं का अनुभव संगमयुग पर ही यथार्थ रूप में होता है।

संगमयुग पर हमने ज्ञान-योग का पुरुषार्थ करके जितना जड़-जंगम और चेतन प्रकृति को पावन बनाया, उस अनुसार हमको सतयुग में प्रकृति का सतोप्रधान सुख मिलेगा और आत्माओं से सम्मान मिलेगा। ब्राह्मण परिवार की आत्माओं की जो सेवा की या सेवा ली, उस अनुसार सतयुग में परिवार मिलेगा और आत्माओं से सम्मान मिलेगा।

संगमयुग पर हमने अपनी चलन-चेहरे और वाणी से जिन आत्माओं को बाप का सन्देश दिया, सहयोग दिया, यज्ञ की तरफ आकर्षित किया या किसी तरह से सेवा में सहयोगी बनाया, वे ही द्वापर से भक्त बनकर हमारी पूजा-अर्चना करेंगे। आपही पूज्य और आपही पुजारी के सिद्धान्त अनुसार हम भी मन्दिर बनायेंगे परन्तु अपने से बड़ों के अर्थात् जिनसे हमको संगमयुग पर प्राप्तियों की अनुभूति हुई है। जैसे ब्रह्मा बाबा ने ही पहले-पहले शिवबाबा का मन्दिर बनाकर उनकी पूजा शुरू की। यह विश्व-नाटक का विधि-विधान है कि हर एक अपने से बड़े की ही पूजा-अर्चना करता है।

अभी के पुरुषार्थ और सेवा से हम अपनी स्वर्गिक प्राप्तियों और द्वापर से भक्तों द्वारा मिलने वाले स्वमान की स्थिति को देख सकते हैं। ऐसे ही अभी संगमयुग पर हम जितना शिवबाबा के विश्वासपात्र निश्चयबुद्धि बनकर ईश्वरीय सेवा में सहयोगी बनते हैं, उस अनुसार ही हमारी यहाँ महिमा होती है अर्थात् हमारी चमक होती है और उसी अनुसार परमधाम में भी हमारे आत्मिक स्वरूप की चमक होगी।

रिटर्न जर्नी के समय सूक्ष्म वतन में भी जब हम धर्मराज के सामने से पास होंगे तो अभी संगम किये गये पुरुषार्थ, कर्मों, सेवा के आधार पर ही धर्मराज के द्वारा या धर्मराज पुरी में या सूक्ष्मवतन में हमारा सम्मान होगा अर्थात् उस अनुसार हमारी स्थिति होगी।

इस प्रकार इन सत्यों पर विचार करके देखें तो संगमयुग के स्वमान अर्थात् गौरवपूर्ण स्थिति ही महान हैं और सारे कल्प अर्थात् तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमानों का आधार हैं। जितना हम अभी अपने स्वमानों को अनुभव करेंगे, उनके अनुभव की अथॉरिटी बनेंगे, उस अनुसार ही हमारे कर्म-संस्कार होंगे, हमारे से सेवा होगी, जो सारे कल्प अर्थात् तीनों लोकों और तीनों कालों के स्वमान का आधार बनेंगे। इसलिए अव्यक्त बापदादा ने कहा है कि संगमयुग की प्राप्तियों की लिस्ट सतयुग की प्राप्तियों से कई गुणा बड़ी है।

तीनों लोकों और तीनों कालों की महानता का आधार है संगमयुग का महान कर्तव्य, जो आत्मा संगम पर ही परमात्मा के साथ से करती है। यह जीवन खाने-पीने, रहने की मौज करने के लिए नहीं है। यह जीवन ईश्वरीय कर्तव्य अर्थ है अर्थात् जो हमको परमात्मा से मिला है, वह अन्य आत्माओं को भी देना है, उनको भी अनुभव कराना है। आत्मिक स्वरूप का, आत्मिक प्यार का ज्ञान अभी ही हमको है। अभी के कर्तव्य का तीनों लोकों और तीनों कालों से सम्बन्ध है। जो अभी यह ईश्वरीय कर्तव्य करेंगे, वे ही अभी भी यहाँ सर्वात्माओं के बीच चमकेंगे और परमधाम में भी परमात्मा पिता के साथ सर्व आत्माओं के बीच चमकेंगे। परन्तु परमधाम में उसकी अनुभूति नहीं होगी, अभी हमको उसकी अनुभूति भी होगी। जो यहाँ

प्रकृतिजीत, ईश्वरीय ज्ञान-गुण-शक्तियों से सम्पन्न बनेंगे, तब ही सतयुग में सम्पन्नता का अनुभव करेंगे।

फरिश्ता स्वरूप में भी यहाँ के कर्तव्य और स्थिति के आधार पर ही महानता होती है। इसलिए अव्यक्त बापदादा बार-बार ब्रह्मा बाबा के साकार जीवन का उदाहरण देते हैं कि उन्होंने साकार में ही अपना फरिश्ता स्वरूप अनुभव कराया और उस स्वरूप में स्थित होकर इस संगमयुगी जीवन का सुख अर्थात् जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव किया और हमको भी उस जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहने के लिए प्रेरणा देते हैं।

ये सब अनुभव और प्रेरणायें बाबा की अव्यक्त या साकार मुरली के द्वारा ही हमको मिलती हैं।

मुरली और श्रीमत

''जिन बच्चों का बाप को पूरा समाचार होंगा, उनको ही बाप श्रीमत देंगे और वे ही श्रीमत पर पूरा चल सकेंगे। कदम-कदम पर बाप से श्रीमत लेनी है। ... यह पढ़ाई कब मिस नहीं करनी चाहिए। इसमें बड़ी भारी कमाई है। दुनिया की कमाई तो पाई-पैसे की है, जो सब खत्म होने वाली है। ... कदम-कदम पर बाप से पूछना होता है, ऐसे नहीं कि कोई विकर्म हो जाये और घाटा पड़ जाये।''

सा.बाबा 17.03.12 रिवा.

''तीव्र पुरुषार्थी बन आगे से आगें बढ़ सकते हो। यह (सर्व प्राप्तियों से सम्पन्न बनने का) वरदान अभी प्राप्त हो सकता है। सभी जो भी आये हैं, उन सबको यह अटेन्शन देना है कि सदा एक तो मुरली की स्टडी कायदे प्रमाण करते रहना और साथ-साथ मन्सा सेवा या वाचा सेवा करने का गोल्डन चान्स लेते रहना। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।''

अ.बापदादा 30.11.11 पहली बार आने वाले

''बाप रोज़-रोज़ भिन्न-भिन्न प्वाइन्ट्स समझाते रहते हैं। सतयुग में 9 लाख मनुष्य थे, फिर सतयुग में 9 लाख होंगे, तो जरूर बाकी इतने सब मनुष्य विनाश होंगे। जो बुद्धिमान होगा, वह इशारे से ही समझ जायेगा कि बरोबर इस लड़ाई से ही अनेक धर्म विनाश हो एक देवी-देवता धर्म की स्थापना होनी है। जो लायक बनेंगे, वे ही मनुष्य से देवता बनेंगे।''

सा.बाबा 19.11.11 रिवा.

''सर्विस के लिए चित्र आदि बनाने के लिए खर्चा तो करना ही है, बाकी तुमको कोई से भीख माँगने की दरकार नहीं है। आपही हुण्डी भर जायेगी। ड्रामा में यह भी नूँध है। ... बच्चे थोड़ा ही सर्विस करते हैं तो नशा चढ़ जाता है कि हम बहुत होशियार हैं। कोई-कोई बच्चों को

मुरली पढ़ने का भी शौक नहीं है। बाबा जानते हैं - राजा-रानी, साहूकार प्रजा, ग़रीब प्रजा सब यहाँ ही बनने हैं।''

सा.बाबा 19.11.11 रिवा.

परमात्मा की मुरली ही यथार्थ श्रीमत है अर्थात् बाबा मुरली में ही विभिन्न व्यवहारिक बातों के विषय में बताते हैं, जिससे सभी आत्माओं को उनके विषय में प्रकाश मिल जाता है और उनका पालन करके अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त कोई विशेष आत्मा अपने लिए विशेष रूप से किसी बात के विषय में बाबा से पूछते हैं, तो भी बाबा उसकी अवस्था और परिस्थितियों को समझकर श्रीमत देते हैं। बाबा ने किन-किन विषयों पर श्रीमत दी है, उनके सम्बन्ध में यहाँ विचार किया गया है।

ज्ञान
गीता-ज्ञान
आत्मा और शरीर का भेद और दोनों का परस्पर सम्बन्ध
विश्व-नाटक अर्थात् सृष्टि-चक्र
विश्व-नाटक की हू-ब-हू पुनरावृत्ति
विश्व-नाटक की संरचना
विश्व-नाटक के सत्यता, न्यायपूर्णता और कल्याणकारिता के सिद्धान्त
विश्व-नाटक की खेल-भावना
मुक्ति-जीवनमुक्ति एवं मोक्ष
तीन लोक
पुरुषोत्तम संगमयुग
पुरुषोत्तम संगमयुग एवं उसकी यादगार पुरुषोत्तम मास
कल्प-वृक्ष
मुरली
विचार-सागर मन्थन अर्थात् चिन्तन
ज्ञान का वर्णन, मनन एवं मगन स्थिति
गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ
पढ़ाई एवं परीक्षा
फाइनल पेपर

योग अर्थात् याद
तपस्या
योगाभ्यास
रुहानी ड्रिल अर्थात् सेकण्ड में फुल स्टॉप
निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति
एकान्त एवं एकाग्रता
स्मृति एवं विस्मृति
स्मृति एवं स्थिति का सम्बन्ध
मौन स्थिति
देह में रहते देह से न्यारी स्थिति
आत्माभिमानी स्थिति एवं परमात्माभिमानी स्थिति
उड़ती कला की स्थिति
योगबल
योग का प्रयोग
योगबल से कर्मभोग पर विजय का ज्ञान
कर्मभोग अर्थात् दैहिक एवं मानसिक व्याधियाँ

धारणा
ईश्वरीय गुण एवं दैवी गुण
समय-संकल्प-शक्ति के महत्व
शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक
चिन्तन, चिन्ता एवं चिन्तन-चिन्ता से परे निर्संकल्प स्थिति
स्व-चिन्तन, पर-चिन्तन एवं व्यर्थ चिन्तन
परमत, मनमत, पर-दर्शन, पर-दोष-दृष्टि
बेफिकर बादशाह की स्थिति
बेग़मपुर के बादशाह की स्थिति
इच्छा-आकांक्षा, कामनायें, आवश्यकतायें, आशायें-अभिलाषायें
इच्छामात्रम् अविद्या अर्थात् सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्थिति
तपस्या

पवित्रता
ब्रह्मचर्यव्रत
विकार और विकारों से मुक्त होने का विधि-विधान
संगमयुगी ब्राह्मण जीवन
ब्राह्मण जीवन की दिनचर्या
ब्राह्मणों का जीवन-स्तर अर्थात् साधारणता में महानता
खान-पान
बुद्धि का भोजन
संग अर्थात् सत्य का संग एवं कुसंग
गृहस्थ जीवन अर्थात कमल पुष्प सम जीवन
ट्रस्टी जीवन
तीनों कालों के विषय में
सन्यास और बेहद का सन्यास
वानप्रस्थ जीवन एवं वानप्रस्थ स्थिति
अमृतवेला
सायंकाल का सन्धिकाल
स्वप्न एवं निद्रा
परमार्थ एवं जीवन-व्यवहार
बांधेली जीवन
व्यक्तिगत जीवन
कुमार-कुमारी जीवन
समर्पित जीवन
मधुवन (पाण्डव भवन) एवं मधुवन निवासी
श्रीमत, दैवी मत और आसुरी मत अर्थात् मनुष्य मत
दृष्टि, वृत्ति, संकल्प, वायब्रेशन और वातावरण
संकल्प, वृत्ति एवं वायुमण्डल
श्रीमत और वातावरण
संस्कार-स्वभाव परिवर्तन
स्व-परिवर्तन एवं विश्व परिवर्तन अर्थात् विश्व-कल्याण

आत्म-कल्याण एवं विश्व-कल्याण
दृष्टि-वृत्ति और सृष्टि परिवर्तन
विश्व-शान्ति
दान-पुण्य
दानी, महादानी एवं वरदानी
देखना, सुनना, पठन-पाठन
संकल्प, बोल एवं कर्म
प्रतिज्ञा एवं प्रतिज्ञा की दृढ़ता

ईश्वरीय सेवा
मन्सा, वाचा, कर्मणा सेवा
धन की सेवा
सौंदर्य प्रसाधन, सौंदर्य प्रदर्शन एवं फैशन, अंग-प्रदर्शन
टीचर्स जीवन
महारथी एवं आदि रतन
शिक्षा का स्वरूप
आपघात - महापाप
आपघात और जीवघात
दिव्य-दृष्टि एवं साक्षात्कार
रहम की भावना
शुभ-भावना, शुभ-कामना एवं सहयोग की भावना
राग-द्वेष, इर्ष्या-घृणा
निर्दोष दृष्टि
माया का ग्रहण
माया, माया से युद्ध एवं माया पर विजय
उमंग-उत्साह, हिम्मत एवं साहस
आशा-निराशा

कर्म

कर्मों का विधि-विधान और सिद्धान्त
विकर्मों से मुक्त अर्थात् श्रेष्ठ कर्म
कर्मयोगी स्थिति
कर्मातीत स्थिति
कर्म-बन्धन एवं कर्म-सम्बन्ध
धर्मराज एवं धर्मराज की सजायें
निष्काम कर्म
जमा का खाता
पाप-पुण्य एवं पाप-पुण्य का विधि-विधान
पाप-पुण्य का खाता
पापी एवं पापकर्म
दुख-सुख
दुखी होना या रोना
ईश्वरीय प्राप्तियां एवं उनका नशा और खुशी
रुहानी नशा एवं खुशी
आनन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख
हिसाब-किताब
व्यक्त में अव्यक्त मिलन तथा अव्यक्त होकर अव्यक्त मिलन
महान एवं मेहमान
परमात्मा के साथ सर्व सम्बन्ध एवं उनका अनुभव
परमात्म-वर्सा
बाप का वारिस बनना एवं बाप को वारिस बनाना
मरजीवा जीवन अर्थात् जीते जी मरना
जीवन एवं मृत्यु
मृत्यु-विजय
मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय और उनसे मुक्ति
देह-त्याग
अन्त मति सो गति
अचानक के पेपर

एवररेडी स्थिति
वैजन्ती माला
आशुक-माशुक
शमा एवं परवाने

बैलेन्स
लव एण्ड लॉ का बैलेन्स
स्नेह और शक्ति का बैलेन्स
बालकपन-मालिकपन अर्थात् बालक सो मालिक
साधन एवं साधना
मधोगरी अर्थात् शिवबाबा की भण्डारी
शिवबाबा का भण्डारा
गोबर्धन पर्वत में अंगुली का सहयोग
परमात्मा की छत्रछाया
परमात्मा की मदद
बाप की मदद एवं बाप के मददगार
'एक बल, एक भरोसा' और एकरस स्थिति
हिंसा और अहिंसा
सम्पूर्णता और समानता
सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता एवं प्रसन्नता
मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति
अचल-अडोल, एकरस स्थिति
स्वराज्य अधिकारी
सच्ची स्वतन्त्रता
कर्मेन्द्रियजीत
स्वमान एवं सम्मान
अधिकार एवं कर्तव्य
अहंकार-हीनता
साइलेन्स एवं साइन्स

वायसलेस (Voiceless) एवं वाइसलेस (Viceless) स्थिति
त्याग एवं भाग्य
त्याग-तपस्या-सेवा
बाप का दिल-तख्त एवं विश्व के राज्य का तख्त
बलि-प्रथा
स्वर्ग-नर्क
स्वर्ग की राजाई
राजा-रानी, दास-दासी एवं साहूकार प्रजा
प्रजातन्त्र से राजतन्त्र की स्थापना
नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करना
समय का ज्ञान और उसका महत्व
सफल कर सफलता मूर्त बनना
लाइट-माइट हाउस एवं सर्च-लाइट स्थिति
डबल लाइट स्थिति
विश्व-बन्धुत्व अर्थात् ईश्वरीय परिवार
आत्मिक स्नेह
परोपकार अर्थात् अपकारी पर उपकार
परस्पर एकमत
संगठन
संगठन की सफलता
परस्पर व्यवहार
आध्यात्मिक जीवन की सफलता
गरीबी (स्थूल धन से) और गरीबी से मुक्त होने का विधि-विधान
भाग्य एवं भाग्य विधाता
दाता, विधाता, वरदाता - परमात्मा
दाता-विधाता-वरदाता - आत्मा
मास्टर सर्वशक्तवान स्थिति
मास्टर ऑलमाइटी अथॉरिटी
सत्य ज्ञान एवं सत्य ज्ञान की अथॉरिटी अर्थात् सत्य ज्ञान के अनुभव की अथॉरिटी

परमात्म प्यार एवं परमात्म-प्यार के अनुभव की अथॉरिटी
परमात्म पालना
मास्टर नॉलेजफुल एवं पॉवरफुल
बाप समान स्थिति
फॉलो फादर
बापदादा की बच्चों से आशायें एवं उन आशाओं को पूरा करने के लिए श्रीमत
परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार
एकनामी-एकॉनामी स्थिति
सच्ची दिल एवं साफ दिल
सच्चाई-सफाई
सत्यता एवं सभ्यता
दुआयें अर्थात् सुख देना और सुख लेना
सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, ... मर्यादा पुरुषोत्त्म की स्थिति
ईश्वरीय कुल अर्थात् ब्राह्मण कुल की मर्यादायें
दैवी कुल की मर्यादायें
प्रश्न एवं प्रश्नों से परे स्थिति
भौतिक साधन-सम्पत्ति एवं ईश्वरीय प्राप्तियां
वर्तमान एवं भविष्य प्राप्ति
पैगम्बर-मैसेन्जर
ईश्वरीय वरदान एवं स्वमान
आशीर्वाद एवं अभिषाप
प्रत्यक्षता
  सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता
  बाप की प्रत्यक्षता
  स्वयं की प्रत्यक्षता
भारत एवं विश्व
दैनिक चार्ट एवं स्व-चेकिंग
गीत-कवितायें
फोटो

गन्धर्वी विवाह
विभिन्न त्योहार, उनका रहस्य एवं उनका मनाना
रीति-रस्म, उत्सव
अन्य प्राणियों के प्रति व्यवहार
विदेशी
भय एवं चिन्ता
निर्भय एवं निश्चिन्त स्थिति
विघ्न एवं विघ्न-विनाशक स्थिति
निर्विघ्न जीवन
बैज
हमारा कोट ऑफ आर्म्स
चित्र एवं चित्रों की लिखत आदि
विभिन्न धर्म एवं धर्म-प्रचारक
विभिन्न धर्म-शास्त्र
हठयोग, तन्त्र-मन्त्र, रिद्धि-सिद्धि आदि
सद्गुरु
टी.वी., बाइसकोप, देखना-सुनना, पठन-पाठन आदि
बांधेली जीवन
विनाश एवं विनाश की प्रक्रिया
प्राकृतिक आपदायें
रुहानी सेना, पाण्डव सेना, सेलवेशन आर्मी
नैया एवं खिवैया
ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य - फरिश्ता
लक्ष्य एवं लक्षण
भावना एवं विवेक
ईश्वरीय विवेक एवं आसुरी विवेक
प्रत्यक्ष फल
माँगना या किससे लेने की इच्छा रखना
माँगना अर्थात् सामने वाला कुछ दे तो मैं उसको दूँ - ऐसी भावना रखना

ईश्वरीय लॉज एवं लॉ मेकर
ईश्वरीय दरबार एवं उसके विधि-विधान
विभिन्न शब्दों का यथार्थ रहस्य
बाप का स्नेह एवं स्नेही आत्माओं की परख
क्षमा का विधि-विधान
समर्थ स्थिति
व्यर्थ एवं समर्थ
बेहद का वैराग्य
बेहद का सन्यास
देह, देह के सम्बन्ध, पदार्थों की आकर्षण
मुसाफिर
न्यारा एवं प्यारा
अनुशासन
सत्यता
भक्ति, भक्ति-भावना एवं यथार्थ ज्ञान
दिल एवं दिमाग़
विल-पॉवर
पर्सनॉलिटी एण्ड रॉयलिटी
जाति-पान्ति, देश-धर्म, भाषा आदि का भेद

विविधि विषय

''बाबा यह तुमको 21 जन्मों के लिए प्राण दान देते हैं, काल पर विजय पहनाते हैं। वहाँ कब अकाले मृत्यु होता नहीं है। बाबा की श्रीमत पर पूरा चलना चाहिए और सबको यह ज्ञान-दान करना चाहिए। औरों का जीवन भी हीरे जैसा बनाना है। भल अपनी-अपनी तक़दीर है तो भी मुरली तो जरूर पढ़नी चाहिए। मुरली तो कहाँ से भी मिल सकती है। एक दिन बहुत भाषाओं में यह मुरली निकलेगी।'' सा.बाबा 13.02.12 रिवा.

''राजा बनना है तो अपनी प्रजा भी बनानी है और वारिस भी बनाने हैं। बच्चों को कोई भी मुरली मिस नहीं करनी चाहिए। ... बाप को आज्ञाकारी, सर्विसएबुल बच्चे ही प्यारे लगते हैं। बाप की दिल अन्दर बच्चों को सदा सुखी बनाने के लिए कितनी फर्स्टक्लास आश रहती है।

... देही-अभिमानी बच्चे ही इस पुरानी दुनिया और पुरानी देह से उपराम रहते हैं।''

सा.बाबा 18.01.12 रिवा.

''रात को देही-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस अच्छी होगी, इसलिए बाबा कहते हैं - बच्चे नींद को जीतने वाले बनों। बाप कितनी अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स समझाते हैं, परन्तु कई बच्चे हैं, जो मुरली सुनते ही नहीं हैं। पढ़ाई है मुख्य। कैसे भी करके मुरली जरूर पढ़नी-सुननी चाहिए। ... जब तक पवित्रता की गारण्टी न करें, तब तक मुरली नहीं देनी चाहिए।''

सा.बाबा 16.01.12 रिवा.

''बाप से खज़ाना लेते रहो और सबको दान करते रहो। गायन है धन दिये धन न खुटे। बच्चों को सर्विस का बहुत शौक होना चाहिए। डूबे हुओं को बाहर निकालना है। ... किसको भी जीयदान दो। पढ़ाई तो अन्त तक पढ़नी है। कितनी अच्छी-अच्छी प्वाइन्ट्स बाप देते रहते हैं। जीते जी मरकर बाप से वर्सा पाना है। ... अभी हम सुखधाम में जा रहे हैं तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 14.01.12 रिवा.

''यदि व्यर्थ संकल्प है तो मुरली सुनते-पढ़ते भी मन में मनन नहीं चलेगा। सोचेंगे, कहेंगे आज मुरली बहुत अच्छी थी, परन्तु ... याद आ जायेगा व्यर्थ संकल्प। व्यर्थ संकल्प मन-बुद्धि को अपने तरफ आकर्षित करने वाले हैं। ... यह व्यर्थ संकल्प बाप को दृढ़ संकल्प से दे देना है। ... बाप को एक बार अपनी रुचि से, दृढ़ता से दे दो और बार-बार चेक करो कि दी हुई चीज़ हमारे पास वापस तो नहीं आई।''

अ.बापदादा 2.03.11

''व्यास की लिखी हुई बातें सुनते-सुनते यह गति हुई है। अब सिवाए ज्ञान के और कुछ सुनाते हैं तो समझो यह हमारा दुश्मन है। दुर्गति में ले जाते हैं। ... तुमको एक बाप से ही सुनना है। बाप आये हैं मनुष्य से देवता बनाने, तो उनकी श्रीमत पर ही चलना है।''

सा.बाबा 6.03.11 रिवा.

''कहाँ भी रहो, बाप को याद करो। पवित्र नहीं बनेंगे तो याद नहीं कर सकेंगे। ऐसे थोड़ेही सब आकर क्लास में पढ़ेंगे। कहाँ भी रहते याद कर सकते हो। ... यूँ तो सेन्टर पर आने से नई-नई प्वाइन्ट्स सुनते रहेंगे, तो सहज उन्नति को पायेंगे। अगर किसी कारण से सेन्टर पर नहीं आ सकते हैं ... कर्फ्यू लग जाता है, तो घर में भी याद कर सकते हो।''

सा.बाबा 26.02.11 रिवा.

''यह महीन मैंपन, मेरापन मैला कर देता है और मेरा बाबा मालामाल कर देता है। ... आज बर्थ-डे पर बापदादा का यही संकल्प है कि यह व्यर्थ संकल्प रूपी अक का फूल अर्पण करो। व्यर्थ संकल्प न करना है, न सुनना है और न संग में आकर व्यर्थ संकल्पों के संग का रंग

लगाना है। क्योंकि जहाँ व्यर्थ संकल्प होगा, वहाँ याद का संकल्प, ज्ञान के मधुर बोल, जिसको मुरली कहते हैं, वे शुद्ध संकल्प स्मृति में नहीं रहेंगे।'' अ.बापदादा 2.03.11

''जो अपनी जाँच करते हैं, श्रीमत को अमल में लाते हैं, उनको मालूम पड़ता है कि हम कितना याद में रहते हैं। ... बच्चों को श्रीमत का इतना रिगार्ड नहीं हैं। मुरली मिलते हुए भी पढ़ते नहीं हैं। दिल में लगता जरूर होगा कि बाबा कहते तो सच हैं। हम मुरली ही नहीं पढ़ते तो बाकी औरों को क्या समझायेंगे। ... भल कोई यहाँ रहते हैं तो भी रिवाइज़ नहीं करते हैं। तकदीर में नहीं है।'' सा.बाबा 31.01.11 रिवा.

मुरली और विश्व-नाटक के गुह्य राज़

ज्ञान सागर बाबा ने मुरली में इस विश्व-नाटक के अनेकानेक राज़ बताये हैं, जो इस ब्राह्मण जीवन की सफलता के लिए अति आवश्यक हैं।

''अभी ही तुम्हारी ज्ञान रत्नों से झोली भर रही है। जो टेप सुनेंगे वा मुरली पढ़ेंगे वा सुन रहे होंगे, वे भी झोली भर रहे हैं। ... जो अभी ज्ञान रत्नों से झोली भरते हैं, राज्य-भाग्य भी वे ही लेंगे। इसमें मूँझने की बात ही नहीं है कि कैसे बनेंगे। ... ब्रह्मा द्वारा स्थापना गाई हुई है। जो स्थापना करेंगे, वे ही पालना भी करेंगे।'' सा.बाबा 30.01.12 रिवा.

''ग़रीब जो अच्छी रीति पढ़ेंगे-पढ़ायेंगे, वे ही जाकर राजा-रानी बनेंगे, ऊंच पद पायेंगे। सेन्टरों पर ऐसे भी आते हैं जो ईश्वरीय सेवा में कुछ नहीं देते हैं। उनको पता ही नहीं है कि यज्ञ में थोड़ा भी बीज बोने से हमारा भविष्य कितना ऊंच बनेंगा। शास्त्रों में सुदामा के चावल-मुट्ठी का गायन भी है ना। जो ईश्वर अर्थ दान करते हैं, उसका फल भविष्य जन्म में बहुत मिलता है। बाप तो दाता है।'' सा.बाबा 16.12.11 रिवा.

''तुम्हारी बुद्धि में है कि बेहद का बाप हमको सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। पहले-पहले एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, फिर कैसे सभी धर्म-स्थापक अपने-अपने समय पर आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं।... तुम बच्चों को बाप रोज़ रिफ्रेश करते हैं, बाप कहते हैं - बाप और वर्से को याद करो।'' सा.बाबा 16.05.11 रिवा.

ज्ञान सागर परमात्मा नये विश्व का रचयिता हैं। नये विश्व की रचना के लिए वह आकर ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखलाकर आत्माओं को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। मनुष्यात्माओं के गुण-धर्म-संस्कारों और संकल्पों के आधार पर सृष्टि का नव-निर्माण होता है। आत्माओं के कर्मों और वायब्रेशन्स के आधार पर सृष्टि की जड़-जंगम-चेतन प्रकृति भी सतोप्रधान बनती है। मुरली में बाबा ने इस विश्व-नाटक के सर्व गुह्य रहस्यों का रहस्योद्घाटन

किया है, जो सम्पूर्णता की स्थिति बनाने के लिए वह सब जानना भी अति आवश्यक है। वह सब मुरली के द्वारा ही जान सकते हैं और उनको जानने से ही मुरली का महत्व हमारी बुद्धि में स्पष्ट होता है, जिसको धारण करने से हम सम्पन्न बनकर इस विश्व-नाटक का परमानन्द अनुभव कर सकेंगे। बाबा ने जिन-जिन गुह्य राज़ों का मुरली में रहस्योद्घाटन किया है, बाबा की मुरलियों से चुनकर कुछ का यहाँ वर्णन किया गया है।

ज्ञान की सत्यता का राज

निश्चय बुद्धि विजयन्ति, संशयबुद्धि विनश्यन्ति का राज़

परमात्मा का राज़

परमात्मा शब्द का भावार्थ

परमात्मा सर्वव्यापी नहीं, एक देशवासी है अर्थात् परमधाम का वासी का राज़

परमात्मा के सर्वज्ञ, जानी-जाननहार स्वरूप का राज़

परमात्म के न्यायकारी और समदर्शीपन का राज़

परमात्मा के परकाया प्रवेश का राज

Q. यह कैसे कहा जा सकता कि इनमें भगवान आते हैं?

परमात्मा के अवतरण का राज़

परमात्म मिलन का गुह्य राज़

परमात्म मिलन कब, कहाँ और कैसे?

परमात्मा के लिब्रेटर-गाइड अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता का राज़

परमात्मा के गुणों और कर्तव्यों का राज़

परमात्मा के बाग़वान स्वरूप का राज़

परमात्मा के पतित-पावन स्वरूप और कर्तव्य का राज़

परमात्म के गरीब-निवाज कर्तव्य का राज़

परमात्मा के समदर्शी स्वरूप का राज़

परमात्मा के खिवैया स्वरूप का राज़

परमात्मा, नैया और खिवैया का राज

विषय वैतरणी नदी अर्थात् विषय सागर और क्षीर सागर का राज़

परमात्मा के सौदागर स्वरूप का राज़

परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का राज़

परमात्मा सर्व आत्माओं का बाप का राज़

परमात्म के सर्वशक्तिवान स्वरूप का राज़
परमात्मा के रहमदिल स्वरूप का राज़ और अनुभव
परमात्मा और ड्रामा का राज़
परमात्मा और कर्म का राज़

आत्मा के विषय में राज़
आत्मिक स्वरूप का राज़
आत्मा और शरीर के अस्तित्व का राज़ और शरीर में आत्मा के स्थान का राज़
आत्मा और देह अर्थात् प्रकृति और पुरुष के सम्बन्ध का राज़ और अनुभव
आत्मा निर्लेप नहीं, आत्मा के पतित और पावन बनने का राज़
आत्मा के लेप-क्षेप का राज़
आत्माओं के पूज्य और पुजारीपन का राज़
आप ही पूज्य और आप ही पुजारी का राज़
आत्मा रूपी बैटरी चार्ज और डिस्चार्ज होने का राज़
आत्मा और परमात्मा के निराकार स्वरूप का राज़
आत्मा-परमात्मा के भेद और उनकी समानता का राज़
आत्मा की सच्ची कमाई का राज़
आत्मा के 84 जन्मों का राज़
आत्मा के अविनाशी संस्कारों का राज़
आत्मा की विभिन्न योनियों का राज़
मनुष्यात्मा और अन्य योनियों की आत्माओं का राज़
मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही पुनर्जन्म लेती है, पशु योनियों में नहीं का राज़
विभिन्न योनि की आत्माओं के कर्मों और उनकेसुख-दुख का राज़
आत्माओं के लिंग परिवर्तन का राज़
मनुष्यात्मा मनुष्य योनि में ही जन्म लेती, पशु योनि में नहीं का राज़
मन-बुद्धि-संस्कार और आत्मा के अस्तित्व का राज़
वृत्ति और वायब्रेशन का वातावरण पर प्रभाव तथा वातावरण का आत्मा की स्थिति पर प्रभाव का राज़
आत्मा की संकल्प शक्ति का राज़

आध्यात्मिक ज्ञान और उसके महत्व का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान (Spiritual Knowledge) और धार्मिक ज्ञान में अन्तर का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान, मनोविज्ञान और दोनों के भेद का राज़
आध्यात्मिक ज्ञान और दार्शनिक ज्ञान का राज़
ईश्वरीय ज्ञान और धर्मपिताओं के ज्ञान का राज़ और अन्तर
आत्मा की कर्मातीत स्थिति का राज़
आत्मा के मोक्ष का राज़
आत्माओं का आत्माओं के साथ हिसाब-किताब का राज़
आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों का राज़
आत्माओं के परस्पर सम्बन्धों के हिसाब-किताब और कल्पान्त में पूरा करके वापस घर जाने का राज़
ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता का राज़
फरिश्ता आत्माओं और प्रेतात्माओं का राज़ तथा दोनों के गुण-धर्मों में अन्तर का राज़
फरिश्ता और सूक्ष्म शरीरधारी प्रेत आत्माओं के अस्तित्व का राज़
देह में रहते फरिश्ता स्वरूप का राज़
ईविल सोल्स एवं उनके प्रभाव का राज़
आत्मा के परमधाम से आने और वापस जाने का राज़
आत्मा के सतयुग और कलियुग में देह त्याग का राज़
आत्मिक प्यार का राज़
आत्मा की चेतनता की परख का राज़

सृष्टि-चक्र के विषय में राज़
विश्व-नाटक और उसकी संरचना का राज़
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाश्यता और सतत परिवर्तनशीलता का राज़
विश्व-नाटक और परमात्मा-आत्मा का राज़
विश्व-नाटक के गुण-धर्मों (Characterstics) का राज़
विश्व-नाटक के विधि-विधान, नियम-सिद्धान्तों का राज़
विश्व-नाटक के सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारिता के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक में सतोप्रधानता और तमोप्रधानता के सिद्धान्त का राज़

विश्व-नाटक के हू-ब-हू पुनरावृत्ति के सिद्वान्त का राज़
विश्व-नाटक के सतत परवर्तनशीलता और विविधता का राज़
विश्व-नाटक की स्वत: गतिशीलता का राज़
विश्व-नाटक के आध्यात्मिक नियम और सिद्धान्तों का राज़
विश्व-नाटक की अनादि-अविनाशी शूटिंग के रि-शूटिंग का राज़
विश्व-नाटक की परमानन्दमयता का राज़
विश्व-नाटक और सुख-दुख एवं आनन्द का राज़
विश्व-नाटक के आदि-मध्य-अन्त का राज़
विश्व-नाटक और पुरुषोत्तम संगमयुग का राज़
विश्व-नाटक और सूर्य, चांद, तारों के सम्बन्ध का राज़
विश्व-नाटक और सुखधाम, दुखधाम, शान्तिधाम का राज़
विश्व-नाटक और साक्षी स्थिति का राज़
विश्व-नाटक और निर्दोष दृष्टि का राज़
विश्व-नाटक और शुभ-भावना शुभ-कामना का राज़
'जीवात्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है' का राज़
स्वदर्शन चक्र और स्वदर्शन चक्रधारी बनने का राज़
विश्व-नाटक और स्वर्ग-नर्क, जीत-हार, दिन-रात का राज़
स्वास्तिका का राज़ - चार युगों की आयु और उसकी दिशा और दशा का राज़
विश्व-नाटक और पुरुषार्थ का राज़
विश्व-नाटक और अहंकार-हीनता, ऊंच-नीच के भाव का राज़
विश्व-नाटक एवं योग का राज़
विश्व-नाटक, कर्म और कर्म-फल अर्थात् पुरुषार्थ और प्रालब्ध के सिद्धान्त का राज़
विश्व-नाटक और हमारे कर्तव्य का राज़
विश्व-नाटक और मान-अपमान, ... जीत-हार में समान स्थिति का राज़
विश्व-नाटक और खेल-भावना का राज़
विश्व-नाटक और समय की विशेषता का राज़
विश्व-नाटक, आत्मा, साधन-सम्पत्ति और परमानन्द का राज़
विश्व-नाटक और कर्म के विधि-विधान का राज़
विश्व-नाटक और अधिकार एवं कर्तव्य का राज़

विश्व-नाटक और मोक्ष का राज़
विश्व-नाटक और हीरो पार्ट का राज़
विश्व-नाटक और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़
जो हुआ अच्छा हुआ ...जो होगा अच्छा होगा का राज़
विश्व-नाटक और 'नथिंग न्यू' का राज़
विश्व-नाटक और व्यर्थ चिन्तन का राज़
विश्व-नाटक और अज्ञानता (Ignorance) का राज़

तीनों लोकों के विषय में राज़
ब्रह्म लोक (ब्रह्माण्ड) का राज़
सूक्ष्म वतन का राज़
सूक्ष्म वतनवासी ब्रह्मा - विष्णु - शंकर का राज़
स्थूल वतन का राज़
त्रिलोकीनाथ का राज़

कल्प वृक्ष के विषय में राज़
कल्प-वृक्ष की कलम का राज़
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और उसका विभिन्न धर्मों के साथ सम्बन्ध का राज़
संसार में विभिन्न धर्मों की स्थापना और सबके विलीन होकर एक सत धर्म की स्थापना का राज़
परमात्मा और विभिन्न धर्म स्थापकों के धर्म-स्थापनार्थ परकाया प्रवेश का राज़
एक धर्म की आत्माओं का दूसरे धर्मों में परिवर्तित होने और कल्पान्त में अपने मूल धर्म में वापस आने का राज़
आदि सनातन देवी-देवता धर्म और हिन्दू धर्म का राज़
सनातन शब्द का राज़ अर्थात् हिन्दू धर्म से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की कलम लगने का राज़
सृष्टि में जनसंख्या वृद्धि और कम होने का राज़
कल्प-वृक्ष की आयु का राज़
कल्प-वृक्ष की आयु लाखों वर्ष नहीं, 5000 वर्ष है का राज़
कल्प-वृक्ष के अक्षयपन अर्थात् अनादि-अविनाश्यता का राज़

वृक्षपति, वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति की दशा का राज़

योग अर्थात् याद के विषय में राज़
योग के अर्थ और उसके महत्व का राज़
योग के विधि-विधान का राज़
राजयोग और हठयोग के अन्तर का राज़
निर्संकल्प समाधि और निर्विकल्प समाधि का राज़
अन्तर्मुख अर्थात् निर्वान स्थिति का राज
बिन्दु अर्थात् बिन्दु रूप स्थिति का राज़
बिन्दु रूप स्थिति के अभ्यास का महत्व
बिन्दुरूप स्थिति और अव्यक्त स्थिति का राज़
विभिन्न प्रकार के योग और उनका राजयोग से सम्बन्ध का राज़
कर्मयोग, ज्ञान योग, भक्ति योग का राज़
ज्ञानयोग मार्ग
निष्काम कर्मयोग मार्ग
राजयोग मार्ग
राजयोग, हठयोग, राजऋषि, ब्रह्मऋषि, राजयोगी, हठयोगी का राज़
राजयोग-हठयोग की समानताओं और असमानताओं का राज़
रुहानी ड्रिल का राज़ और अभ्यास
योग की सफलता के लिए योगाभ्यास अर्थात् आध्यात्मिक ड्रिल का ज्ञान
एकान्त और एकाग्रता का राज़
स्मृति और विस्मृति का राज़
स्मृति से समर्थी का राज़
मौन का राज़ और योग की सफलता में उसके महत्व का राज़
माया, माया की प्रवेशता, माया से युद्ध और मायाजीत बनने का राज़
युद्ध और युद्ध के मैदान का राज़
रुस्तम से माया के भी रुस्तम होकर लड़ने का राज़
योगानन्द (परमानन्द) और विषयानन्द का राज़
योगबल - भोगबल का राज़

योगबल और भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति का राज
श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर पंख का राज़
योगबल से देह धारण करने और देह त्याग का राज़
योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति और उसके विश्व पर प्रभाव का राज़
एडवान्स पार्टी, उनके कर्तव्य का राज़
एडवान्स पार्टी और योगबल से जन्म का राज़
देह में रहते, देह से न्यारे अर्थात् अशरीरी होने का राज़

कर्मों की गहन गति का राज़
कर्म के नियम-सिद्धान्त एवं विधि-विधान का राज़
विकर्म और विकर्म विनाश की प्रक्रिया का राज़
सुकर्म-अकर्म-विकर्म का राज़
सुकर्म कर्म करने के विधि-विधान का राज़
कर्म और कर्म फल का राज़
निष्काम कर्म का राज़
विकर्माजीत सम्वत् और विकर्मी सम्वत् का राज़
कर्म और ड्रामा के विधि-विधान के सम्बन्ध का राज़
कर्मातीत अवस्था का राज़
कर्मातीत स्थिति और कर्म-बन्धन की स्थिति का राज़
कर्मभोग और कर्मयोग का राज़ और कर्मभोग से सहज मुक्त होने की विधि का राज़
कर्मभोग के सूली से कांटा बनने का राज़
कर्म-बन्धन और कर्म-सम्बन्ध का राज़
साक्षी - कर्मातीत - मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का राज़
कर्मातीत और विकर्माजीत स्थिति का राज़
कर्मातीत स्थिति और विनाश के सम्बन्ध का राज़
धर्म और कर्म का राज़
पतित और पावन का राज़
आत्मा के पावन से पतित और फिर पतित से पावन बनने का राज़
आत्मा के पुण्यात्मा और पापात्मा बनने का राज़

पाप-पुण्य का राज़
आत्मा के पुण्यात्मा और पापात्मा बनने का राज़
पुण्यात्मा, पवित्रात्मा और पापात्मा का राज़
आत्मा का खाता जमा और ना (-) होने का राज़
पापों का बोझ चढ़ने और पाप भस्म कर पावन बनने का राज़
धर्मराज और धर्मराजपुरी का राज़
धर्मराजपुरी के विधि-विधान का राज़
धर्मराज की सजायें और सजाओं से बचने का राज़
धर्मराज की ट्रिबुनल का राज़
कब्रदाखिल और कब्र से जगाने का राज़
क्यामत अर्थात् विनाश का राज़

पवित्रता और ब्रह्मचर्य का राज़
सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता का राज़
सच्ची पवित्रता अर्थात् आत्मिक पवित्रता का राज़
ब्रह्मचर्य व्रत और ब्रह्मचारी जीवन का राज़
ब्रह्मचर्य व्रत तथा पवित्रता में अन्तर का राज़
संगमयुग की पवित्रता और उसका भक्ति मार्ग के पूज्य स्वरूप से सम्बन्ध का राज़

पुरुषार्थ का राज़
यम अर्थात् संयम और नियम का राज़
पुरुषार्थ और प्रालब्ध का राज़
पुरुषार्थ और भाग्य का राज़
पुरुषार्थ, प्राप्ति (सुख-दुख) और ड्रामा का राज़
ज्ञानी तू आत्मा और योगी तू आत्मा का राज़
मुक्ति-जीवनमुक्ति अर्थात् गति-सद्गति का राज़

ब्रह्मा का राज़
ब्रह्मा के अस्तित्व का राज़ अर्थात् कैसे शिव बाबा की ब्रह्मा तन में प्रवेशता और ब्रह्मा

नामकरण का राज
ब्रह्मा के 84 जन्मों और परमात्मा के ब्रह्मा तन में प्रवेश होने का राज़
आत्मायें अविनाशी हैं और परमात्मा भी अविनाशी है तो परमात्मा पिता कैसे है, उसका राज़
परमात्म के मात-पिता बनने का राज़
जगतपिता और परमपिता का राज़
जगदम्बा और जगतपिता का राज़
ब्रह्मा और ब्रह्मा-सरस्वती का राज़
बेहद के दिन और रात अर्थात् ब्रह्मा के दिन और ब्रह्मा की रात का राज़
ब्रह्मा सो विष्णु और विष्णु सो ब्रह्मा अर्थात् ब्रह्मा और कृष्ण का राज़
श्याम-सुन्दर का राज़
ब्रह्मा की अनेक भुजाओं और चतुर्मुख का राज़

साकार ब्रह्मा बाप के साकार साथ का राज़
ब्रह्मा बाबा की सम्पूर्णता और समर्पणता का राज़
ब्रह्मा बाबा की महानता का राज़
फॉलो फादर का राज़
सन शोज फादर, फादर शोज सन का राज़
ब्रह्मा बाबा और शिवबाबा के गुण-कर्तव्यों का राज़
ब्रह्मा बाबा के गुण-कर्तव्यों की विशेषताओं का राज़ अर्थात् ज्ञान
ब्रह्मा बाबा - सतयुग के प्रथम नारायण और राजा विक्रमादित्य का राज़
आदि देव, आदम, एडम का राज़
ब्राह्मण और ब्राह्मणों के द्विज जन्म का राज़
ब्रह्मा कुमार-कुमारियों का राज़
भारत का राज़
भारत और भगवान का राज़,
भारत और स्वर्ग-नर्क का राज़
भारत की सम्पन्नता और महानता का राज़
भारत खण्ड की अविनाश्यता का राज़
भारत के उत्थान-पतन और उसके विश्व के उत्थान-पतन से सम्बन्ध का राज़

भारत की सीमाओं और भारत की सीमाओं के विस्तार और संकुचन का राज़
आर्य और अनार्य का राज़
भारत और भगवान के सम्बन्ध का राज़
भारत और भारत से विभिन्न धर्म और सभ्यताओं के सम्बन्ध का राज़
भारत भूमि पर विभिन्न धर्मों और सभ्यताओं के शासन का राज़
भारत और विश्व-परिवर्तन का राज़
'आबू तीर्थ महान' का राज़
मधुवन (पाण्डव भवन) का राज़
मधुवन निवासियों के भाग्य का राज़
देलवाला, अचलगढ़ मन्दिर और तीर्थराज आबू का राज़
दिल्ली दरबार - इन्द्रप्रस्थ का राज़
भारत और भारत के प्राचीन राजयोग का राज़
भारत की राजनैतिक एवं आध्यात्मिक स्वतन्त्रता-परतन्त्रता का राज़
भारत और स्थापना-विनाश के सम्बन्ध का राज़
भारत और विश्व-परिवर्तन की प्रक्रिया का राज़
भारत और खूने नाहेक खेल का राज़
सोमनाथ मन्दिर, राजा विक्रमादित्य और भक्ति मार्ग के प्रारम्भ होने का राज़
कृष्ण और क्रिश्चियन्स के सम्बन्ध का राज़

पुरुषोत्तम संगमयुग का राज़
पुरुषोत्तम संगमयुग और उसकी यादगार पुरुषोत्तम मास का राज़
पुरुषोत्तम संगमयुगी जीवन के महत्व का राज़
ब्राह्मण जीवन की महानता का राज़
सिद्धि-स्वरूप स्थिति का राज़
ब्राह्मण जीवन की सिद्धियों का राज़
व्यक्त में अव्यक्त मिलन का राज़
अव्यक्त होकर अव्यक्त मिलन के सुख का राज़
मुक्ति-जीवनमुक्ति और संगमयुगी मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का राज़
परमात्मा और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़

आत्मा और मुक्ति-जीवनमुक्ति का राज़
संगमयुग और अमृत-वेला का राज़
सायंकाल के सन्धिकाल का राज़
भूतकाल और भविष्य काल का वर्तमान से सम्बन्ध का राज़
भूत, वर्तमान और भविष्य स्थिति के दर्पण का राज़
वर्तमान प्राप्तियों का भविष्य प्राप्तियों से सम्बन्ध का राज़
जीवन में सच्ची खुशी का राज़ अर्थात् सच्ची सुख-शान्ति का राज़
सुख - दुख का राज़
दुख-अशान्ति की पहेली के हल का राज़
परम सुख और परम दुख का राज़
जीवन में परम प्राप्ति का राज़
सुख, परम सुख और पुरुषोत्तम संगमयुग के सुख का राज़
भौतिक सुख, इन्द्रीय सुख और अतीन्द्रिय सुख, ज्ञान का सुख, परमात्म मिलन के सुख का राज़
परमात्मा के दिल तख्त और दिल तख्तनशीन होने का राज़
अकाल तख्त का राज़

गीता और गीता ज्ञान का राज़
पाण्डव-कौरव और यादव सेना का राज़
गीता, गीता ज्ञान और गीता ज्ञान-दाता का राज़
यदा यदाहि ... सृजाम्यहं का राज़
मन्मनाभव-मध्याजी भव, नष्टोमोहा - स्मृतिलब्धा का राज़
श्रीमत अर्थात् ईश्वरीय मत, दैवी मत और आसुरी मत का राज़
निश्चयबुद्धि विजयन्ति और संशयबुद्धि विनश्यन्ति का राज
विनाशकाले परमात्मा से प्रीतबुद्धि विजयन्ति और विप्रीतबुद्धि विनश्यन्ति का राज़

विविध विषयों के सम्बन्ध में
स्वर्ग की स्थापना और स्वर्ग की राजधानी की स्थापना का राज़
स्वर्ग में ऊंच पद पाने का राज़

कमलासन और कमलासनधारी का राज़
न्यारे और प्यारे बनने का राज़
परमात्मा और सत्य ज्ञान की प्रत्यक्षता का राज़
प्रत्यक्षता और प्रत्यक्ष प्रमाण का राज
आस्तिक और नास्तिक का राज़
निश्चय, नशे और सिद्धि-स्वरूप का राज़
विनाश और विनाश की प्रक्रिया का राज़
स्थापना और स्थापना की प्रक्रिया का राज़
स्थापना-विनाश और सिविल वार, एटॉमिक वार, नेचुरल केलेमिटीज का राज़
स्थापना, विनाश और पालना के सम्बन्ध का राज़
स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का राज
स्व-कल्याण से विश्व-कल्याण का राज़
दृष्टि-वृत्ति और सृष्टि परिवर्तन का राज़
राम और रावण का राज़
रावण के दस शीश का राज़
कुम्भकरण का राज़
भस्मासुर का राज़
विष्णु और महालक्ष्मी की चार भुजाओं का राज़
रामायण और महाभारत का राज़
महाभारत युद्ध का राज़
वेद-पुराणों का राज़
जड़-जंगम और चेतन प्रकृति का राज़
जड़ तत्वों के पावन होने का राज़
मेहमान और महानता का राज़
जन्म-मृत्यु और पुनर्जन्म का राज़
मृत्यु और अमरत्व का राज़
शिवालय-वेश्यालय का राज़
क्षीर सागर और विषय-सागर का राज़
जीते जी मरने का राज़

अमृत और विष का राज़
अमरलोक और मृत्युलोक का राज़
मृत्यु और मृत्यु-विजय का राज़
मृत्यु-दुख, मृत्यु-भय और उनसे मुक्त होने का राज़
अकाले मृत्यु का राज़
सुखद जन्म, सुखद जीवन और सुखद मृत्यु का राज़
अन्त मति सो गति का राज़
गर्भ-जेल और गर्भ-महल का राज़
शिव और शंकर का राज़
देवियों और उनकी अनेक भुजाओं का राज़
विष्णु और विष्णु के अलंकारों का राज़

शिव-जयन्ति, गीता-जयन्ति, रक्षा-बन्धन, दीपावली तथा अन्य त्योहारों का राज़
विभिन्न पर्वों और उत्सवों का राज़
श्रीकृष्ण और श्रीनारायण का राज़
राधे-कृष्ण और लक्ष्मी-नारायण का राज
श्रीकृष्ण के जन्म का राज़
मुरलीधर की मुरली का राज़
गोपी-वल्लभ और गोप-गोपियों का राज़
गोप-गोपियों और मुरली का राज़
लक्ष्मी-नारायण और सीता-राम का राज़
रुद्र माला और वैजन्ती माला का राज़
9 रत्न का राज़
वैजन्ती माला का दाना बनने का राज़
रुद्र ज्ञान-यज्ञ और अश्वमेध यज्ञ का राज़
रुद्र ज्ञान-यज्ञ और विनाश के सम्बन्ध का राज़
शिव की बारात का राज़
अशोक वाटिका और शोक वाटिका का राज़
शिव-शक्ति सेना और उसके युद्ध का राज़

भक्ति मार्ग के विभिन्न संगमों का राज़

होलिका दहन का राज़ - विनाश और कल्प परिवर्तन का राज़
परमात्मा और देवताओं को भोग अर्पण का राज़
अन्न और संग तथा उनके प्रभाव का राज़
खान-पान का जीवन पर प्रभाव का राज़
खान-पान के विधि-विधान का राज़
परमात्म प्यार का राज़
परमात्म-प्यार के विधि-विधान का राज़
परमात्म प्यार और पालना का राज़
आशुक-माशुक का राज़
शमा और परवाने का राज़
लव एण्ड लॉ का राज़
लव एण्ड लॉ के बैलेल का राज़

दधीचि ऋषि के समान स्थिति का राज़
राजा जनक के समान विदेही स्थिति का राज़
राजा जनक के समान ट्रस्टी स्थिति का राज़
भागीरथ का राज़
ईश्वरीय परिवार और विश्व-बन्धुत्व की भावना का राज़
ईश्वरीय परिवार, दैवी परिवार और आसुरी परिवार का राज़
आसुरी परिवार से ईश्वरीय परिवार में आने का राज़
ईश्वरीय परिवार और दैवी परिवार के परस्पर सम्बन्धों का राज़
शिवबाबा के भण्डारे का राज़
ब्रह्मा भोजन का राज़
इन्द्र, इन्द्र-सभा और उसके विधि-विधान का राज़
ज्ञान वर्षा और इन्द्र का राज़
ज्ञान के तीसरे नेत्र और कुण्डलिनी जागरण का राज़
देवताओं के तीसरे नेत्र का राज़

त्रिनेत्री और त्रिकालदर्शी पन का राज़
सत्य नारायण की सच्ची कथा, अमर कथा, तीजरी की कथा का राज़
हिम्मते बच्चे मददे बाप का गुह्य राज़
सर्वशक्तिवान बाप की मदद का राज़
परमात्मा की मदद लेने और देने का राज़
बाप के साथ सर्व सम्बन्ध, सम्बन्ध निभाने और सर्व सम्बन्धों से सर्व प्राप्तियों का राज़
परमात्मा के साथ बाप, टीचर, सत्गुरु, सजनी-साजन, सखा आदि सर्व सम्बन्धों का राज़
आत्मा का आत्मा को शक्ति देने और लेने का राज़
गोबर्धन पर्वत को उठाने में अंगुली के सहयोग का राज़
''एक बल, एक भरोसा'' और एकरस स्थिति का राज़
हिंसा और अहिंसा का राज़
काम महाशत्रु है और उसके दुष्परिणाम का राज़
समर्पणता का राज़
सम्पूर्णता का राज़
सम्पूर्णता और समर्पणता के सम्बन्ध का राज़
सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता और उनके सम्बन्ध का राज़
सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान बनने का राज़
सर्व प्राप्ति सम्पन्न बनने का राज़
ईश्वरीय प्राप्तियों का राज़
मान-अपमान, जीत-हार, स्तुति-निन्दा में समान स्थिति का राज़
साक्षी स्थिति का राज़
साक्षात्कारमूर्त स्थिति का राज़

सच्चे सत्संग और सत्संग का जीवन में महत्व का राज़
निद्राजीत का राज़
योग-निद्रा का राज़
साक्षात्कार, दिव्य-दृष्टि एवं दिव्य-बुद्धि का राज़
ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग के साक्षात्कार के अन्तर का राज़
देवता और असुरों का राज़

दैवी चलन और आसुरी चलन का राज़
दैवी गुणों और आसुरी गुणों का राज़
ईश्वरीय गुण, दैवी गुण और आसुरी गुणों के अन्तर का राज़
असुर से ब्राह्मण, ब्राह्मण से फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता बनने का राज़
देवताओं की महानता का राज़
जीवन की पहेली का राज़
यथार्थ जीवन जीने का राज़
सफल जीवन-व्यवहार का राज़
कर्मेन्द्रियजीत और इन्द्रियों के वशीभूत का राज़
स्वराज्य अधिकारी का राज़
स्वमान और सम्मान का राज़
अहंकार-हीनता और उससे मुक्त होने का राज़
अधिकार और कर्तव्य का राज़
रुहानी रोयालिटी और पर्सनॉलिटी का राज़
स्नेह और शक्ति के सन्तुलन (Balance) का राज़
साधन और साधना के सन्तुलन का राज़
बैलेन्स से ब्लेसिंग्स का राज़
जियो और जीने दो अर्थात् अधिकार और कर्तव्य के सन्तुलन का राज़
सच्ची स्वतन्त्रता का राज़
देह और देह की दुनिया से न्यारे अर्थात् 5 तत्वों से पार स्थिति में स्थित होकर इस विश्व-नाटक को देखने का राज़

उत्थान और पतन, सतोप्रधानता और तमोप्रधानता का राज़
चढ़ती कला, उतरती कला अर्थात् सीढ़ी चढ़ने और उतरने का राज़
आत्मा की उतरती कला और चढ़ती कला का राज़
साइलेन्स और साइन्स का राज़ तथा उनके परस्पर सम्बन्ध का राज़
वायसलेस (Voiceless) और वाइसलेस (Viceless) स्थिति का राज़
प्रकृतिजीत बनने का राज़
प्रकृति का सहयोग और प्राकृतिक आपदाओं का राज़

पुरुष और प्रकृति के परस्पर सम्बन्ध का राज़
सत्य ज्ञान, उसकी कसौटी और उसके अनुभव का राज़
परमात्मा को पहचानने और उनका बनने का राज़
परमात्मा के एडॉप्शन अर्थात गोद लेने और प्रवेश होने (Adoptation and Re-incarnation) का राज़
परमात्मा की गोद और गोद का बच्चा बनने का राज़
भगवान, भाग्य और भाग्य-विधाता का राज
त्याग और भाग्य का राज़
भगवान बाप और भगवान को बच्चा बनाने का राज़
बाप और वर्से अर्थात् बाप का वारिस बनने और बनाने का राज़

परमात्मा की छत्रछाया का राज़
आत्मा का परमात्मा के साथ हिसाब-किताब का राज़
एक का हजारगुणा प्राप्ति के विधि-विधान का राज़
विश्व के रिलीजियो-पॉलिटीकल हिस्ट्री-जॉग्राफी का राज़
धर्म और राज की स्थापना का राज
ज्ञान की धार्मिकता और राजनैतिकता का राज़
पवित्रता और प्रकृति के सम्बन्ध का राज़
सच्ची दिल और कुशल दिमाग का राज़ - सच्ची दिल पर साहेब राज़ी का राज़
यात्रा और मुसाफिर का राज़
तीर्थ, तीर्थ यात्रा और याद की यात्रा का राज़

भक्ति और ज्ञान के सम्बन्ध का राज़
नवधा भक्ति और उनके इष्ट के साक्षात्कार के सम्बन्ध का राज़
अव्यभिचारी भक्ति और व्यभिचारी भक्ति का राज़
ज्ञान-भक्ति-वैराग्य का राज़
ज्ञान मार्ग और भक्ति मार्ग के रीति-रिवाजों का राज़
संगमयुग की रीति-रिवाज़, सतयुग की रीति-रिवाज़ और कलियुग की रीति-रिवाज़ों का राज
भक्ति मार्ग में देवताओं को पीठ न दिखाने का राज़

भक्ति के विभिन्न कर्म-काण्डों का राज़
भक्ति में बलि की प्रथा और ज्ञान मार्ग में बलि का राज़
काशी कलवट का राज़
ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा और लकी ज्ञान सितारों का राज़
'घट में ही सूरज ... 9 लाख तारे' का राज़
ग्रहण का राज़
आत्मा के घर से आने और घर वापस जाने का राज़
सतयुग-त्रेता की राजाई स्थापन होने और परिवर्तन होने का राज़
सतयुग-त्रेता की राजाई के विधि-विधान का राज़
सतयुग के 8 जन्म और 8 गद्दियों का राज
8 गद्दियों और अष्ट रतनों का राज़
राजा-रानी, दास-दासी और साहूकार प्रजा बनने का राज़
विश्व महाराजा-महारानी बनने का राज़
सतयुग-त्रेता की राज़ाई का राज़

दान-पुण्य का राज़
दान-पुण्य के विधि-विधान का राज़
दान और अविनाशी ज्ञान रतनों के दान का राज़
दान और गुप्त-दान का राज़
दानी, महादानी और वरदानी का राज़
नर्क की धन-सम्पत्ति स्वर्ग में ट्रान्सफर करने का राज़
सफल कर सफलता मूर्त बनने का राज़
सफलता के सितारों का राज़
यज्ञ में बीज बोने का राज़
ईश्वरीय सेवा, उसके महत्व और उसमें सफलता का राज़
यज्ञ सेवा का राज़
आलराण्डर सेवाधारी का राज़
मन्सा सेवा का राज़
मन्सा सेवा के विधि-विधान और उसके महत्व का राज़

यथार्थ सोशल सर्विस का राज़
खुदाई खिज़मतगार का राज़

बाहुबल, योगबल और विश्व की एकछत्र राजाई का राज़
निर्विकारी और विकारी जीवन का राज़
वसुधैव कुटुम्बकम् का राज़
शिव और सालिग्राम का राज़
परमात्मा के साथ पार्ट बजाने का राज़
दोस्त और दुश्मन का राज़
खुदा दोस्त का राज़
दुश्मन को भी दोस्त बनाने का राज़
अपकारी पर भी उपकार करने का राज़

सप्ताह का राज़
वृक्षपति अर्थात् बृहस्पति और राहू की दशा का राज़
वर्णों का राज़
बाजोली का राज़
आत्मा-परमात्मा के मंगल मिलन मेले का राज़
विराट स्वरूप का राज़

सच्ची तपस्या का राज़
चार सब्जेक्ट ज्ञान-योग-धारणा-सेवा के Aim Object और फल का राज़
दैवी, आसुरी और ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों का ज्ञान और उनके आत्मा पर प्रभाव का राज़
ब्राह्मण और देवताओं का राज़ और उनके परस्पर सम्बन्धों का राज़
शुभ भावना, शुभ कामना का राज़
लगन में मगन स्थिति का राज़
सागर मंथन का राज़
स्वाध्याय, पठन-पाठन का राज़
चिन्तन का राज़

मनन-चिन्तन का राज
स्व-चिन्तन और पर-चिन्तन का राज़
शुभ-चिन्तन और शुभ-चिन्तक का राज़
चिन्तन और चिन्ता का राज़ तथा चिन्तन और चिन्ता से परे निर्संकल्प स्थिति का राज़
निर्भय और निश्चिन्त जीवन का राज़
भय और चिन्ता का राज़
बेफिकर बादशाह बनने का राज़
बेग़मपुर के बादशाह का राज
विघ्न और विघ्न-विनाशक स्थिति का राज़
निर्विघ्न जीवन बनाने का राज़
लाइट-हाउस, माइट-हाउस और सर्च-लाइट स्थिति का राज़
लाइट, माइट और डिवाइन इन्साइट का राज़
गंगा, जमुना आदि नदियों की महिमा का राज़
बाप के हाथ और साथ का राज़

ईश्वरीय इज्जत, दैवी इज्जत और आसुरी इज्जत का राज़
नॉलेज इज सोर्स ऑफ इन्कम का राज़
गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ इज दि बेस्ट का राज़
पढ़ाई और परीक्षा का राज़
फाइनल पेपर में पास होने का राज़
परीक्षा और पश्चाताप का राज़
जीवात्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है का राज़
देह से न्यारा होकर परमानन्द को अनुभव करने का राज़
न्यारा और प्यारा बनने का राज़
विश्व-शान्ति का राज़
सालवेन्ट - इन्सालवेन्ट स्थिति का राज़

तीन बाप का राज़
निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्थिति का राज़

वर्तमान और भविष्य जीवन के सम्बन्ध का राज़
रुहानियत और रुहानी स्नेह का राज़
रुहानी सेना का राज़
हम सो, सो अहम् का राज़
सच्ची कमाई और झूठी कमाई का राज़
सच्चे त्याग का राज़
त्याग और भाग्य का राज़
त्याग-तपस्या और सेवा का राज
हद और बेहद का राज़
हद-बेहद के वैराग्य वृत्ति का राज़
वैराग्य और सन्यास का राज़
हद और बेहद के सन्यास का राज़
वानप्रस्त का राज़
दैहिक और मानसिक व्याधियों के कारण और निदान का राज़
निवृत्ति मार्ग और प्रवृत्ति मार्ग का राज़
पवित्र प्रवृत्ति मार्ग और पतित प्रवृत्ति मार्ग का राज़

सर्व के माननीय बनने का राज़
क्रिमिनल आई और सिविल आई का राज़
आत्मा और परमात्मा की रूह-रुहान का राज़
बाप और दादा की रूह-रुहान का राज़
योग में आंखें खोलकर अभ्यास करने का राज़
ब्रह्मचर्य जीवन और दैवी-जीवन का राज़

आध्यात्मिक जीवन की सफलता का राज़
परमात्मा, ड्रामा और प्राकृतिक आपदाओं का राज़
ओम् और ओम् शान्ति का राज़
ईश्वरीय गवर्मेन्ट का राज़
अचानक के पेपर का राज़

एवर रेडी स्थिति का राज़
बालकपन और मालिकपन का राज़
परमार्थ और व्यवहार की सिद्धि का राज़
मास्टर सर्वशक्तिवान का राज़
मास्टर ऑलमाइटी अथॉर्टी का राज़
निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति का राज़
निर्णय शक्ति और परखने की शक्ति को प्रखर करने का राज़
मास्टर नॉलेजफुल और पॉवरफुल का राज़
बाप समान बनने और बनाने का राज़
बापदादा की बच्चों से आशायें और उन आशाओं को पूरा करने का राज़
दाता-विधाता-वरदाता का राज़
परमात्मा और उनके द्वारा आत्म-कल्याण का राज़
साधारणता में महानता का राज़
कम खर्च बालानशीन का राज़
एकनाम-एकॉनामी का राज़
सच्ची दिल पर साहेब राज़ी का राज़
परमपिता परमात्मा के साथ फरमान-बरदार, वफादार, ईमानदार का राज़

दुआयें लेने और दुआयें देने का राज़
परमात्मा की दुआयें लेने का राज़
अविनाशी ज्ञान रतनों के महत्व का राज़
अन्नोन बट वेरीवेल नोन वारियर्स का राज़
सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म का राज़
मर्यादा पुरुषोत्तम का राज़
ईश्वरीय मर्यादायें, ब्राह्मण कुल की मर्यादायें और आसुरी कुल की मर्यादाओं का राज़
इच्छा-शक्ति और दृढ़ इच्छा-शक्ति का राज़
विल पॉवर और विल पॉवर को प्राप्त करने का राज़
संकल्प और दृढ़-संकल्प का राज़
समय का ज्ञान और उसके महत्व का राज़

ब्राह्मण और शूद्रों का राज़
इच्छामात्रम् अविद्या का राज़
समस्याओं और उनके समाधान का राज़
सर्वशक्तियां और उनकी धारणा का राज़
पैगम्बर-मैसेन्जर का राज़
आत्मा, परमात्मा और वातावरण का राज़

नारद का राज़
सुदामा का राज़
और संग तोड़, एक संग जोड़ का राज़
द्रोपदी, द्रोपदी के चीर हरण का राज़
सीता, सीता हरण का राज़
गार्डन आफ अल्लाह, खुदा के बगीचे का राज़
ज्ञान की सम्पूर्णता का राज़
समर्थ और असमर्थ स्थिति का राज
अव्यक्त बापदादा के सूक्ष्म वतन की दिनचर्या का राज़
व्यर्थ और समर्थ का राज़

कमल पुष्प सम जीवन का राज़
वरदानों का राज़
ईश्वरीय वरदानों का राज़
मोहजीत राजा का राज़
स्थूल और सूक्ष्म भोजन का राज़
जीवन में घाटे-फायदे का राज़
आत्म-विश्वास का राज़
विवाह और गन्धर्वी विवाह का राज़
आत्मानुभूति और परमात्मानुभूति का राज़
Cosmic Energy का राज़
सुखी जीवन जीने की कला का राज़

कछुआ, सर्प, भ्रमरी आदि के कर्मों और गुणों का राज़
डबल ताज और सिंगल ताज का राज़
आपघात - महापाप का राज़
आपघात और जीवघात के भेद का राज़
विश्व-नाटक के हीरो पार्टधारी का राज़
धर्म-सत्ता और राज-सत्ता का राज़
धर्म और कर्म का राज़
अन्त:वाहक देह का राज़
देह में रहते देह से न्यारी स्थिति का राज़
करन-करावनहार का राज़
जो है, जैसा है का राज़
सूर्य-चांद के ग्रहण का राज़
व्यभिचारी और अव्यभिचारी याद का राज़

निष्कर्ष - ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने अपनी साकार और अव्यक्त मुरली में इस विश्व नाटक के अनन्त गुह्य रहस्यों के राज़ बताये हैं, जीवन के सर्व विषयों और क्षेत्रों के विषय में श्रीमत दी है, हमारे तीनों कालों और तीनों लोकों के अनेकानेक स्वमानों और वरदानों का ज्ञान दिया है और अनुभव कराया है। जो इन सब बातों को समझते हैं और अपनी बुद्धि में जाग्रत रखते हैं, वे ही अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं और उनको ही यह संगमयुगी जीवन परमानन्दमय अनुभव होता है। वे ही बाबा के बताये गये तीनों लोकों और तीनों कालों के ज्ञान से हम अपने और समस्त विश्व के भूतकाल, वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखकर यथार्थ रीति तपस्या कर भविष्य में आने वाले भयानक समय और परिस्थितियों को सहन करने का अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकते हैं और कर रहे हैं तथा परमात्मा की श्रीमत अनुसार सेवा कर नई दुनिया के लिए अपना खाता संचित कर सकते हैं।

बाबा की मुरली से यथार्थ सत्य को जानने से हम इस संगमयुगी जीवन की परम प्राप्तियों को अनुभव कर रहे हैं। हम अपने मूल स्वरूप में स्थित हो परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव कर रहे हैं; बाबा के साथ बाबा की श्रीमत अनुसार विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव कर हे हैं और इस विश्व-नाटक को जानकर ट्रस्टी बन पार्ट बजाते और इसको साक्षी होकर इसे देखते हुए परम-सुख को अनुभव कर रहे हैं।

प्रश्नावली

Q. मधुबन क्या है और मधुबन में क्या है ?

मधुबन मधूसूदन बाप और गोप-गोपियों की कर्म-भूमि, तपस्या-भूमि, वरदान-भूमि है और मधुबन के कण-कण में उनकी तपस्या और चरित्रों के वायब्रेशन्स समाये हुए हैं, जो आने वालों को भी परमात्म-प्यार का अनुभव कराते हैं और तपस्या के लिए आकर्षित करते हैं। मधुबन अर्थात् पाण्डव भवन में चार धाम हैं, जिनकी यात्रा करना हर ब्रह्मा-वत्स के संगमयुगी जीवन की सफलता का आधार है।

मुरली और मधुवन के विषय में विविध ईश्वरीय महावाक्य

''तुम दुख हर्ता, सुख कर्ता बाप का बनते हो तो तुमको तरस आना चाहिए किसको खड्डे में गिरने से बचाने के लिए। बड़ा युक्ति से चलना होता है।... अभी की यह सीन फिर कल्प बाद ही रिपीट होगी। अभी बाप सम्मुख आकर नॉलेज देते हैं, तुमको मनुष्य से देवता पद प्राप्त कराते हैं।... बाप कहते हैं - बच्चे मुझे याद करो। यह डॉयरेक्ट तीर लगता है। वर्सा तुमको मेरे से मिलना है, कोई देहधारी से नहीं।'' सा.बाबा 26.06.12 रिवा.

''मधुवन निवासी भी लकी हैं। मधुवन निवासियों की रिजल्ट उमंग-उत्साह और अथकपन में अच्छी है, बाकी आगे के लिए और भी मायाप्रूफ बनो।'' अ.बापदादा 13.9.74

''कब-कब मम्मा-बाबा आकर तुम बच्चों के द्वारा मुरली सुनाते हैं। किसका कल्याण अर्थ बाबा बच्चों में प्रवेश कर भृकुटी के बीच बैठ मुरली चलाते हैं।... यथार्थ समझ न होने के कारण बच्चे देहाभिमान में आ जाते हैं। वास्तव में बच्चों को यह अहंकार भी नहीं आना चाहिए। बुद्धि में रखना चाहिए कि शिवबाबा करन करावनहार है।''

सा.बाबा 17.5.12 रिवा.

''ऐसे ही ब्राह्मण परिवार में व्यर्थ का पता ही न हो। पता नहीं हो कि व्यर्थ क्या होता है। स्वचिन्तन, स्वचिन्तक। ... मधुवन वाले तीव्र पुरुषार्थियों में हाथ उठायेंगे। ... बापदादा को तीव्र पुरुषार्थी बहुत पसन्द हैं। ... नये-नये भी तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो जितना आगे बढ़ने चाहो, उतना बढ़ सकते हो। सिर्फ थोड़ा अटेन्शन देना है।'' अ.बापदादा 3.4.12

''ऊंच और नीच भी नम्बरवार तो होते ही हैं। देवताओं में भी नम्बरवार होते हैं। ऊंच ते ऊंच एक भगवान को ही कहा जाता है। ... बाप स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं। बाप कहते हैं - मैं तुम बच्चों के सिवाए और कोई से मिल नहीं सकता हूँ। बाप मुरली भी बच्चों के आगे ही चलाते हैं।'' सा.बाबा 27.02.12 रिवा.

''मधुबन में आना, इतने बड़े परिवार से मिलना और इतने बड़े परिवार की सेवा के निमित्त बनना, यह भी बहुत बड़ा भाग्य बन जाता है। तो निर्विघ्न सेवा का फल खाया इसलिए बापदादा दोनों जोन को विशेष मुबारक दे रहे हैं। ... इस सेवा में खुश करते भी हो और खुशी मिलती भी है। दोनों हैं।'' अ.बापदादा 15.12.11

''अभी तुम बच्चों को समझना है - हम आत्मा हैं, परमपिता परमात्मा हमको वर्सा देने आये हैं। हम स्टूडेण्ट हैं, ज्ञान सागर बाप हमारा टीचर बनकर पढ़ा रहे हैं - यह कब भूलना नहीं चाहिए। बच्चों की बुद्धि में रहता है शिवबाबा मधुबन में मुरली बजाते हैं। ... यह है ज्ञान की मुरली। तुमको एक शिवबाबा को ही याद करना है।'' सा.बाबा 26.09.11 रिवा.

''यह है सहज राजयोग बल। तुम समझते हो याद से बहुत बल मिलता है। अभी हम विकर्म करेंगे तो बहुत सज़ा खानी पड़ेगी और पद भ्रष्ट हो जायेगा।... भल कहाँ भी रहो परन्तु याद करते रहो। पवित्र नहीं बनेंगे तो याद कर नहीं सकेंगे।... यूँ तो सेन्टर पर आने से नई-नई प्वाइन्ट्स सुनते रहेंगे।'' सा.बाबा 13.08.11 रिवा.

Puzzel of Life Solved

-: O :-

Suffering are due to unrighteous & vicious actions
Vices are due to body consciousness
Body consciousness is due to ignorance
Ignorance can be eradicated through Real Godly Knowledge
Real Godly knowledge can be given by God Father only
Acquire this which He is giving now.
Now or Never

-: O :-

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org